

***Directorate of Distance Education***  
**UNIVERSITY OF JAMMU**  
**JAMMU**



**SELF LEARNING MATERIAL  
FOR  
M.A. DOGRI (SEMESTER - 1st)**

**COURSE NO. : 102**

**UNIT : I - V**

**PRABANDH KAVYA**

**LESSON NO. : 1 - 12**

*Course Co-ordinator :*

**Dr. Jatinder Singh**

T/Incharge M.A. Dogri

Mob.: - 9596888080

<http://www.distanceeducationju.in>

Printed and Published on behalf of Directorate of Distance Education  
University of Jammu, Jammu by the Director, DDE, University of Jammu,  
Jammu.

---

## M.A. DOGRI

---

### **Course Contributors**

**Dr. Sandeep Dubey**

Asstt. Prof.

Dept. of Dogri

University of Jammu, Jammu

**Lesson No. 1 to 6**

**Dr. Padam Dev Singh**

Asstt. Prof.

Dept. of Dogri

University of Jammu, Jammu

**Lesson No. 7 to 12**

Content Editing/Proof Reading

**Dr. Manoj Heer**

T/Incharge M.A. Dogri  
DDE, University of Jammu

---

© Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu, 2022

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the DDE, University of Jammu.

The script writer shall be responsible for the lesson / script submitted to the DDE and any plagiarism shall be his / her entire responsibility.

---

*Printed By : Sushil Printers / 2022 / 300*

## **UNIVERSITY OF JAMMU**

### **Syllabus for M.A. Dogri Semester – 1<sup>st</sup>**

#### **(Non-Choice Based Credit System)**

**(Syllabus for the examinations to be held in December 2019,  
December 2020 & December 2021)**

**Course No.: DOG102**

**Title: Prabandh Kavya**

**Duration : 03 hours  
Credits : 6**

**Maximum Marks : 100**

**a) Semester Examination : 80  
b) Sessional Assessment : 20**

#### **सलेबस**

1. महात्मा विदुर — ज्ञान सिंह पगोच, कमला प्रकाशन, भटयाड़ी, हीरा नगर
2. वीर गुलाब— दीनू भाई पन्त, डोगरी संस्था, जम्मू
3. महाकाव्य दियां परिभाशां, लक्षण, तत्त्व ते डोगरी च महाकाव्य दा उद्भव ते विकास

#### **सलेबस दी बंड**

##### **यूनिट- 1**

‘महात्मा विदुर’ महाकाव्य दे पैहले च’ऊं सर्गे दे आधार पर सप्रसंग व्याख्या  
ते पाठ्य समग्री बारै सुआल 8,8

##### **यूनिट- 2**

‘महात्मा विदुर’ महाकाव्य दे अगले पञ्जे सर्गे दे आधार पर सप्रसंग व्याख्या, पाठ्य-समग्री ते  
रचनाकार बारै सुआल

(a) Long Answer Type Question 12  
(b) Short Answer Type Question 04

##### **यूनिट- 3**

‘वीर गुलाब’खण्ड काव्य दी पाठ्य-समग्री ते रचनाकार बारै सुआल

(a) Long Answer Type Question 12  
(b) Short Answer Type Question 04

## **UNIVERSITY OF JAMMU**

### **Syllabus for M.A. Dogri Semester – 1<sup>st</sup>**

#### **(Non-Choice Based Credit System)**

**(Syllabus for the examinations to be held in December 2019,  
December 2020 & December 2021)**

**Course No.: DOG102**

**Title: Prabandh Kavya**

#### **यूनिट– 4**

महाकाव्य दियां परिभाशां, लक्षण ते तत्व बारै सुआल

(a) Long Answer Type Question	12
(b) Short Answer Type Question	04

#### **यूनिट – 5**

डोगरी महाकाव्य दे उद्भव ते विकास बारै सुआल

(a) Long Answer Type Question	12
(b) Short Answer Type Question	04

#### **NOTE FOR PAPER SETTING:**

There will one question from each unit (containing a&b part) with 100% internal choice and the candidates will be required to answer all the questions (total questions to be attempted will be five).

#### **सहायक पुस्तकां:**

1. डोगरी शोध – 1999 – पोस्ट ग्रैजुएट डोगरी डिपार्टमेंट, जम्मू यूनिवर्सिटी, जम्मू
2. दीनू भाई ‘पन्त’ दा कविता-साहित्य, प्रकाशक : डोगरी संस्था, जम्मू
3. डोगरी साहित्य दा इतिहास : शिवनाथ, साहित्य अकादेमी, नगर्न दिल्ली ।
4. डोगरी साहित्य दा इतिहास:जितेन्द्र उधमपुरी, जे. एण्ड के. स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन
5. डोगरी भाशा ते अदब दी तिहासक परचोल: देशबन्धु डोगरा ‘नूतन’,अरुणिमा प्रकाशन, उधमपुर
6. भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्त : कृष्ण देव झारी, अशोक प्रकाशन, नई सङ्क, दिल्ली ।
7. काव्य के रूप : बाबू गुलाब राय, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-06.

**C. No. : 102**

**M. A. Dogri**

**विशे—सूची**

<b>यूनिट सं.</b>	<b>लेख</b>	<b>सफा नं.</b>
यूनिट – 1	सप्रसंग व्याख्या (महात्मा विदुर) (पाठ सं. 1-2)	5
यूनिट – 2	कवि दा जीवन—परिचे ते डोगरी काव्य च उंदा योगदान (पाठ सं. 3)  'महात्मा विदुर' महाकाव्य दा सार (पाठ सं. 4)	22 28
	'महात्मा विदुर' महाकाव्य दा मूल्यांकन (पाठ सं. 5)	40
	'महात्मा विदुर' महाकाव्य दा सार मूल्यांकन (पाठ सं. 6)	48
यूनिट – 3	दीनू भाई पंत दा जीवन—परिचे ते डोगरी साहित्य गी उं'दा योगदान (पाठ सं. 7)  डोगरी कविता साहित्य गी दीनू भाई पंत दा योगदान	59 68

(ਪਾਠ ਸं. 8)

'ਧੀਰ ਗੁਲਾਬ' ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਰਕ

75

(ਪਾਠ ਸं. 9)

ਯੂਨਿਟ - 4 ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਮਾਸ਼ਾ, ਲਕਣ, ਤਤਿਆਂ ਬਾਰੇ ਸੁਆਲ

88

(ਪਾਠ ਸं. 10-11)

ਯੂਨਿਟ - 5 ਡੋਗਰੀ ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਉਦੰਭਵ ਦੇ ਵਿਕਾਸ

101

(ਪਾਠ ਸं. 12)

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102**

**Unit - I**

**Semester - I**

---

**Lesson : 1**

### **महात्मा विदुर**

1.0 रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 पाठ-परिचे

1.3 पाठ-प्रक्रिया

1.3.1 पैहलੇ ਪਦਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ੰਗ ਵਿਆਖਿਆ

1.3.2 ਦੁਏ ਪਦਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ੰਗ ਵਿਆਖਿਆ

1.3.3 ਤ੍ਰਿਧੇ ਪਦਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ੰਗ ਵਿਆਖਿਆ

1.3.4 ਚੌਥੇ ਪਦਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ੰਗ ਵਿਆਖਿਆ

1.3.5 ਪਤਰਮੰ ਪਦਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ੰਗ ਵਿਆਖਿਆ

1.3.6 ਅਭਿਆਸ

1.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

1.5 ਵਿਦਿਆਰਥੀਂ ਦੇ ਅਭਿਆਸ ਆਸਟੈਕ ਕਿਸ਼ ਸੋਆਲ

1.6 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਂ

## **1.1 उद्देश्य**

- (क) काव्य दे पद्यांश दी व्याख्या पढ़ियै विद्यार्थी पूरे संदर्भ दी पछान करी लैडन ।
- (ख) पद्यांश च दिते गेदे विचारें दी गूढ़ जानकारी हासल होई सकग ।
- (ग) सप्रसंग व्याख्या पढ़ियै विद्यार्थी विशे समग्री समझियै अपने विचारें गी व्याख्यात्मी रूप च प्रकटने दी समर्थ हासल करी सकडन ।

## **1.2 पाठ-परिचे**

इस पाठ च ‘महात्मा विदुर’ महाकाव्य दे पैहले पंजे सर्ग चा किश पद्यांशें दी व्याख्या कीती गेदी ऐ ।

## **1.3 पाठ-प्रक्रिया**

- (क) पद्यांश दे संदर्भ च काव्य दे लेखक दा नां दित्ता गेदा ऐ ।
- (ख) पद्यांश दा चेचा संदर्भ प्रसंग दे अन्तर्गत दित्ता गेदा ऐ तां जे विद्यार्थी गी विशे वस्तु दा पता चली सकै ।
- (ग) पद्यांश च व्यक्त विचारें दी व्याख्या इस ढंगा कन्नै कीती गेदी ऐ जे विद्यार्थी उसी समझियै आपूं व्याख्या करने दी समर्थ हासल करी सकन ।

### **1.3.1 पैहले पद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या**

हां रानी गी पुत्र थ्होना ।  
पर जरमे दा अन्ना होना ॥  
एह माऊ दे दो पुआड़े ।  
उन सनमुख निहें नैन गुहाड़े ॥  
अन्नै-मुन्नै काज केह करना ?  
कुल-राखी जां राज केह करना ?  
तां तुस होर कुसै गी भेजो ।  
करै रौनक ते लो इस थेह जो ॥

**ਸਂਦਰ्भ :-**

ਏਹ ਕਾਵਿ-ਅੰਸ਼ ਸਾਫ਼ੀ ਪਾਠਯ ਕ੍ਰਮ ਚ ਲਗੇ ਦੇ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਦੇ ਪੈਹਲੇ ਸੰਗ ਥਮਾਂ ਲੈਤਾ ਗੇਦਾ ਏ । ਇਸਦੇ ਰਚਨਾਕਾਰ 'ਜ਼ਾਨ ਸਿੱਹ ਪਗੋਚ' ਹੋਰ ਨ ।

**ਪ੍ਰਸਾਂਗ :-**

ਇਸ ਪਦਾਰਥ ਚ ਰਿਸ਼ੀ ਵੇਦਵਾਿਸ ਮਾਂ ਸਤਿਆਵਤੀ ਗੀ ਰਾਨੀ ਅੰਖਿਕਾ ਗੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਨੇ ਆਹਲੇ ਅੜ੍ਹੇ ਪੁੱਤਰ ਬਾਰੈ ਸਨਾਂਦੇ ਨ ।

**ਵਾਖਿਆ :-**

ਭੀ਷ਮ ਦੇ ਸਾਥੋਂ ਰਿਸ਼ੀ ਵੇਦਵਾਿਸ ਜਿਸਲੈ ਮਾਂ ਸਤਿਆਵਤੀ ਦੀ ਪਰੋਸ਼ਾਨੀ ਹਲ ਕਰਨੇ ਆਸਟੈ ਮੈਡਲੋਂ ਪੁਜਦੇ ਨ ਤਾਂ ਰਾਨੀ ਸਤਿਆਵਤੀ ਉਨੌਂਗੀ ਸਾਰੀ ਗਲਲ ਸਨਾਇਥੈ ਅਪਨੀ ਨੂੰ ਅੰਖਿਕਾ ਗੀ ਪੁੱਤਰ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲੇਈ ਤੱਦੇ ਕਮਰੇ ਚ ਭੇਜਦੀ ਏ । ਪਰ ਰਾਨੀ ਅੰਖਿਕਾ ਵੇਦਵਾਿਸ ਦੇ ਰੂਪ ਗੀ ਦਿਕਖੀ ਢੱਡੈ ਕਨੌ ਅਪਨਿਆਂ ਅਕਖੀਂ ਬੰਦ ਕਰੀ ਲੈਂਦੀ ਏ । ਤਾਂ ਸਤਿਆਵਤੀ ਦੇ ਪੁਛਣੇ ਪਰ ਰਿਸ਼ੀ ਗਲਾਂਦੇ ਨ ਜੇ ਅੰਖਿਕਾ ਦੇ ਘਰ ਪੁੱਤਰ ਤੇ ਜਰੂਰ ਹੋਗ ਪਰ ਓਹ ਜਨਮ ਥਮਾਂ ਗੈ ਅੜਾ ਹੋਨਾ ਏ । ਇਸ ਪਿਛੋਂ ਰਾਨੀ ਦਾ ਅਪਨਾ ਗੈ ਦੋਸ਼ ਏ ਕੀ ਜੇ ਉਸ ਮਿਗੀ ਦਿਕਖਦੇ ਗੈ ਅਪਨਿਆਂ ਅਕਖੀਂ ਮਿਟੀ ਲੇਝਿਆਂ ਹਿਯਾਂ । ਤਾਂ ਸਤਿਆਵਤੀ ਰਿਸ਼ੀ ਵੇਦਵਾਿਸ ਗੀ ਗਲਾਂਦੀ ਏ ਜੇ ਏਹ ਅੜਾ ਰਾਜ-ਕਾਜ ਕਿਧਾਂ ਸਾਂਭਗ ਅਪਨੇ ਕੁਲੈ ਗੀ ਏਹ ਕਿਧਾਂ ਤਾਰਗ । ਅਪਨੇ ਵਂਸ਼ ਦੀ ਰਕ਼ਸ਼ ਕਿਧਾਂ ਕਰਗ । ਮਾਂ ਦੀ ਬਧਦੀ ਪਰੋਸ਼ਾਨੀ ਦਿਕਖਿਧੈ ਰਿਸ਼ੀ ਗਲਾਂਦੇ ਨ ਜੇ ਤੁਸ ਕੁਸੈ ਹੋਰ ਗੀ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਭੇਜੋ ਜਿਸਦਾ ਪੁੱਤਰ ਤੁਂਦੇ ਵਂਸ਼ ਗੀ ਚਾਨਨ ਕਰੀ ਸਕੇ ।

### 1.3.2 ਦੁਏ ਪਦਾਰਥ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸਾਂਗ ਵਾਖਿਆ

ਔੰਗਲੀ ਦਾ ਫਡੀ, ਏਹ ਟੁੰਡਾਲੀ ਭਾਰੀ ਬਡੀ,  
ਗੁੜੀ ਸਾਕਨੀ ਦੀ ਚਢੀ, ਅਊ ਰੇਹੀ ਧਿਕਕੇ ਖਾਨੇ ਗੀ !  
ਤਾਏ ਰਾਜ-ਰਾਨੀ, ਨਿਕਕੇ-ਬਡੇ ਦੀ ਜਬਾਨੀ,  
ਮੇਰੀ ਬੀਤੀ ਕਤਥ-ਕਹਾਨੀ, ਬਸ ਸੁਨਨੇ-ਸੁਨਾਨੇ ਗੀ !  
ਸ਼ਾਤਿਧੈ ਚ ਸਲਲ, ਜਿਭਜਾਂ ਖੁੜ੍ਹੀ ਗੇਦੀ ਭਲਲ,  
ਪੀਡੁ ਮਾਰੈ ਜਿੰਦੁ ਜਲਲ, ਪਲੈ-ਪਲੈ ਤਡਫਾਨੇ ਗੀ !  
ਅਗੋਂ ਪਿਛੋਂ ਦੁਕਖ, ਹੂਨ ਮਾਰੀ ਗੇਦੀ ਭੁਕਖ,  
ਸਾਬ ਸੁਖਨਾ-ਨ-ਸੁਖ, ਸੁਕਕੀ ਸੀਰ ਸਿਮਕਾਨੇ ਗੀ !

**संदर्भ :-**

एह काव्य-अंश साड़ी पाठ्य क्रम च लगे दे महाकाव्य 'महात्मा विदुर' दे दुए सर्ग थमां लैता गेदा ऐ । इसदे रचनाकार 'ज्ञान सिंह पगोच' होर न ।

**प्रसंग :-**

इक अन्ने ज्याने गी जन्म देने पर रानी अम्बिका दे मनै पर जो गुजरदी ऐ उसदा वर्णन कवि नै इनें सत्तरें च कीते दा ऐ ।

**व्याख्या :-**

हस्तानापुर दियें रानियें ते दासी दे गर्भ थमां पैदा होऐ दे धृतराष्ट्र, पांडू ते विदुर करी, हस्तानापुर च चबक्खा खुशी दा वातावरण हा । पर रानी अम्बिका अपने अन्ने पुत्ररै गी दिकिख्यै मनोमन पछतांदी ऐ । ओह सोचदी ऐ जे हून सारी उमर दुखें-कलेशें च गै लडनी ऐ, इस अन्ने गी उमर भर औंगल लाइयै चलाना पौग । ते सारे लोक उसी रमजां कराडन ते उसदी साकन रानी अम्बालिका दा उस शा बद्ध इज्जत-मान करडन । दिनै-रातीं उसी एह सोच सतांदी ते तड़फांदी रौंहदी ऐ । अपने अगं-पिच्छे उसी छड़े दुख गै दुख नजरी आँदे न । ते सुख सुखना मात्र सेही होंदे न । कवि ने प्रस्तुत काव्य-अंश च इक अन्ने ज्याने गी जन्म देने करी रानी अम्बिका दे मनै च पैदा होने आहले ही हीन भावें गी बांदै करने दी कौशिश कीती दी ऐ ।

### 1.3.3 त्रिये पद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या

ज्ञान जलै दी मच्छी ऐ,  
बड़े क्रठने ने हत्थ औना ऐं ।  
  
इक लत्ता स्हारै बगले दा,  
चित्त-ध्यान जआनै पौना ऐ ॥

**संदर्भ :-**

एह काव्य-अंश साड़ी पाठ्य क्रम च लगे दे महाकाव्य 'महात्मा विदुर' दे त्रिये सर्ग थमां लैता गेदा ऐ । इसदे रचनाकार 'ज्ञान सिंह पगोच' होर न ।

**प्रसंग :-**

इस काव्य-अंश च गुरुकुल च गुरु द्वारा अपने चेलें गी दित्ते गेदे उपदेश दा वर्णन कीता गेदा ऐ ।

**व्याख्या :-**

जिसलै त्रैवै भ्रा शिक्षा ग्रैहण करने आस्तै गुरुकुल च जंदे न तां गुरुकुल दे नियमें मताबक उंदी शिक्षा शुरू होई जंदी ऐ । गुरु रोज अपने आसन पर बैहियै अपने चेले गी उपदेश दिदे न । ओह अपने हर अमीर-गरीब शिश्यें गी इक बराबर समझदै होई एह समझांदे न जे ज्ञान अर्जित करना उन्ना गै कठन ऐ जिन्ना पानी चा हत्थें मच्छी पकड़ना अर्थात जिन्ने चिर मनै पर काबू नेई होऐ ज्ञान रूपी मच्छी हत्थ नेई औंदी । इसकरी मने दी एकाग्रतागै ज्ञान गी पाने दा इक मात्र रस्ता ऐ । फरैत जां भटकदा मन ज्ञान गी प्राप्त नेई करी सकदा । इस आस्तै गूढ़ तपस्या ते ध्यान दी जरूरत होंदी ऐ । जियां इक बगला इक लत्ते पर खड़ोइयै एकाग्रता कन्नै अपने शिकार गी पकड़ने च सफल होंदा ऐ ठीक उरसै चाल्ली माहनू बी इक ध्यान होइयै गै कुसै चीज गी सिक्खी सकदा ऐ ।

#### 1.3.4 चौथे पद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या

दऊं धड़ें बिच लोक बंडोये, शोर शरावा करदे ।

भीम सेन पर जान वारदे, दुर्योधन पर मरदे ॥

द्रोण ने शारा कीता, आखै दोऐ जने तुस जीते ।

अश्वतथामा गम्भै आई जोद्वे बक्ख-बक्ख कीते ॥

**संदर्भ :-**

एह काव्य-अंश साढ़ी पाठ्य क्रम च लगे दे महाकाव्य 'महात्मा विदुर' दे चौथे सर्ग थमां लैता गेदा ऐ । इसदे रचनाकार 'ज्ञान सिंह पगोच' होर न ।

**प्रसंग :-**

इस पद्यांश च कवि नै आचार्य द्रोण आसेआ गुरुकुल च शिक्षा ग्रहण करनै परैत भीम ते दुर्योधन दी परिक्षा गी भरे सभा मंडप च वर्णनत कीता दा ऐ ।

**व्याख्या :-**

गुरु द्रोण दे आखने पर राजा जिसलै जागतें दे शिक्षा—गुणें गी दिक्खने आस्तै इक सभा मंडप दा निर्माण करांदा ऐ ते इस उत्सव लेई पूरे नगरै च ढंढोरा फेरियै सभने गी औने दा सादा दित्ता जंदा ऐ । दुऐ दन भीषम, विदुर, धृतराष्ट्र, गंधारी, कुन्ती, देवकी आदि सब अपने—अपने थाहर आई बौहदे न । गुरु द्रोण मंगलाचरण कराइयै अपने चेलें गी अपने—अपने जोहर दसने दा इशारा करदे न । भीमसेन ते दुर्योधन खाड़े उत्तरियै अपने गुरजे कन्नै आपू बिच्चें इन्ना लड़दे न जे सारे लोक काहले पेर्ह जंदे न । सभा मंडप च आई दी जनता बी द'ऊं धड़ें च बंडोई जंदी । अद्वे भीम दा मनोबल बधांदे न ते अद्वे दुर्योधन दा । पूरे सभामंडप दौनी दा युद्ध दिक्खियै जित्थें धावरी जंदा उत्थें गै गुरु द्रोण थमां ग्रहण कीती दे उंदी शिक्षा गी सराहदा बी ऐ । आखर गुरु अपने पुत्तर अश्वतथामा गी शारा करदे न ते ओह दौने दे बिच जाइयै उनेंगी बक्खरा—बक्खरा करदा ऐ । ते गलांदा ऐ जे तुस दवै योद्वे ओह ते इस परिक्षा युद्ध च तुंदी दौने दी जित होई ऐ ।

### 1.3.5 पञ्चमां पद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या

अऊं सेवक हा, खरा सेवक अऊं

इक पिच्छे चलन की नौकर द'ऊं ?

तन नरोआ, शैल न कर पैर बी,

अपनै कशा रक्खना भी गैर की ?

**संदर्भ :-**

एह काव्य—अंश साढ़ी पाद्य क्रम च लगे दे महाकाव्य ‘महात्मा विदुर’ दे पञ्चमें सर्ग थमां लैता गेदा ऐ । इसदे रचनाकार ‘ज्ञान सिंह पगोच’ होर न ।

**प्रसंग :-**

इस काव्य—अंश च कवि नै गुरुकुल थमां शिक्षा ग्रहण करियै मैहलें परतोई आए दे विदुर दा अपने सेवकें प्रति दया भाव प्रगट कीते दा ऐ ।

**व्याख्या :-**

धृत, पांडू ते विदुर गुरुकुल थमां शिक्षा ग्रहण करियै जिसलै अपने मैहलें परतोई औंदे न

तां राज मैह्लें च विदुर गी अपनी सेवा च हर पल मौजूद हत्थ बद्धे दासें गी दिकिखयै चंगा  
नेई लगदा । ओह मणे मन सोचदे न जद में अपने कम्म आपूं करी सकनां एं, मेरे हत्थ  
पैर सलामत न तां फ्ही भला इ'नें हत्थ बद्धे दासें दी केह लोड़ । ते जेहङ्ग़ा आदमी अपने  
कम्म आपूं करी सकदा होए तां ओह दुएं पर की निर्भर रवै । ओह गलांदे न जे मैं पैह्लें  
बी सेवक हा ते हून बी इक सेवक साहिं जीवन गजारड । इस करी इक सेवक गी अपनी  
चाकरी आस्तै दुएं सेवकें दी भला केह लोड़ ।

#### 1.3.6 अभ्यास :-

ख'ल्ल दित्ते दे पद्यांशें दा संदर्भ ते प्रसंग दस्सियै व्याख्या करो :-

- (क) राज—मैहल सब सुन्ने पेदे ।  
दफतैनी न्हेरे बस रोह दे ॥  
उच्चे भवन—भला कित्त कारी ।  
जिसदे जीव सल्हे महामारी ॥  
घर केह ओह जित जगे निं दीये ।  
केह बाग बिना कोल पपीहे ॥  
चितरधन ते वचित्तर भाई ।  
औतर गे, नां बेल बधाई ॥  
मां चाँता बिच मक्कै करदी ।  
पल—पल खिन सुक्कै करदी ॥
- (ख) पौनपट्ट चुक्की, निक्की गल्लुएं च मुक्की,  
किश है शरम तुकी मेरी जिंद दिहां रोलदा ।  
पानी अऊं नुआगी, शैल करियै नुल्हागी,  
चिट्ठे टल्लू बी लुआगी, निंहा अप्पूं जिंद गोलदा ।  
बड़ा शैल सोहना, मेरा बच्चू मन मोहना,

तेरे बिनां मेरा होना, कोई जिज्ञां पानी छोलदा ।  
 तूं ऐं मेरे कोल, समां लंघै दा ऐ डोल,  
 तेरे मुहां बोल—बोल, मिगी मोतियें ने तोलदा ।

- (ग) एह गल्ल इजां ऐ कोई जिज्ञां,  
 भड पी—पी ऐ उपदेश करै ।  
 नई करो नशा, एह ऐब बुरा,  
 एह खरे भले दी अकल चरै ॥  
 जां इजां ऐ, कोई जिज्ञां,  
 गंद—गारै कन्नै भरोए दा ।  
 सबने गी आखै न्हौन खरा,  
 एह लक्खन—नरे—नरोए दा ॥

- (घ) बचन दित्ता याद, गद्दी सौंपनी,  
 मात गंगा धार उपर त्रौंकन ।  
 व्याह पैहलें करन तां गल्ल बनकदी,  
 घड़ी मुड़ियै सोच मथै ठनकदी ॥  
 बिच्चो—बिच तपाश, त्रै नग तुप्पने,  
 होन बी गुणवान बक्खबक्ख चुक्कने ।  
 करन घर वस्तार जेहडे सांभियै,  
 सुन्न बड़ै सार, सेवा आंभियै ॥

- (ङ) अत्त भली, एह सोच सनुहाकी, तूं आखी मैं मन्नी ।  
 मिगी मान तूं अज तक मेरी कित्ती कदें निं भन्नी ॥

ਇੜਾਂ ਬੀ ਦਿਨ ਢਾਲੈ ਪੇਦਾ, ਝਿਲਮਿਲ ਪੰਜ ਸਤ ਘਡਿਆਂ ।  
ਸਮੈਂ ਸਾਰਥੀ ਰਥ ਜੁਗਡੇ ਦਾ ਹਤਥ ਬਿਚ ਬਾਗਾਂ ਫਡਿਯੈ ॥  
ਪਰ ਸੱਸਾਰੀ ਪਿਰਤ ਪੁਰਾਨੀ ਬੜਾ ਗੈ ਘਰ ਸਾਂਮੈ ।  
ਛੋਰ ਕੁਸੈ ਦਾ ਹਕਕ ਨਿੰ ਬਨਦਾ ਜਿਨਾਂ ਮਰਜੀ ਆਂਮੈ ॥

**1.4 ਸਾਰਾਂਸ਼ :**

ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਵਿਦਾਰਥਿਦੇਂ ਆਸਤੈ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਸੱਗ ਬਿਚਾਂ ਕਿਸ਼ ਗਦਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸੰਗ ਵਾਖਿਆ ਦਿੱਤੀ ਗੇਂਦੀ ਏ। ਕਨੈ ਗੈ ਵਿਦਾਰਥਿਯੇਂ ਗੈ ਸੰਦਰਭ, ਪ੍ਰਸੰਗ ਤੇ ਵਾਖਿਆ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗਾ ਬਕਖਰੇ ਬਕਖਰੇ ਸੱਗ ਥਮਾਂ ਲੈਤੇ ਗੇਂਦੇ ਏਹ ਸੱਗ ਕੇਹੜੇ ਕੇਹੜੇ ਸੱਗ ਬਿਚਾਂ ਲੈਤਾ ਗੇਦਾ ਏ।

**1.5 ਵਿਦਾਰਥਿਯੇਂ ਦੇ ਅਭਿਆਸ ਆਸਤੈ ਕਿਸ਼ :**

ਅਂਸ ਪਾਠਯ-ਪੁਸ਼ਟਕ ਥਮਾਂ

**1.6 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਂ :**

ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ, ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਆ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ : ਜਿਤੇਨਦ੍ਰ ਉਧਮਪੁਰੀ

----0----

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102**

**Unit - I**

**Semester - I**

---

**Lesson : 2**

### **रूपरेखा**

2.0 रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 पाठ-परिचे

2.3 पाठ-प्रक्रिया

2.3.1 पैहले पद्धांश दी सप्रसंग व्याख्या

2.3.2 दुए पद्धांश दी सप्रसंग व्याख्या

2.3.3 त्रिये पद्धांश दी सप्रसंग व्याख्या

2.3.4 चौथे पद्धांश दी सप्रसंग व्याख्या

2.3.5 पञ्चमे पद्धांश दी सप्रसंग व्याख्या

2.3.6 अभ्यास

2.4 सारांश

2.5 विद्यार्थीयें दे अभ्यास आस्तै किश सोआल

2.6 सहायक पुस्तकां

## 2.1 ਉਦੇਸ਼

- (ਕ) ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਪਦਾਂਥ ਦੀ ਵਾਖਿਆ ਪਢਿਯੈ ਵਿਦਾਰ्थੀ ਪੂਰੇ ਸਨੰਦ ਦੀ ਪਛਾਨ ਕਰੀ ਲੈਣ ਨ ।
- (ਖ) ਪਦਾਂਥ ਚ ਦਿਤੇ ਗੇਦੇ ਵਿਚਾਰੋਂ ਦੀ ਗੁਢ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ ।
- (ਗ) ਸਪ੍ਰਸ਼ਾਂਗ ਵਾਖਿਆ ਪਢਿਯੈ ਵਿਦਾਰਥੀ ਵਿਸ਼ੇ ਸਮਗ੍ਰੀ ਸਮਝਿਯੈ ਅਪਨੇ ਵਿਚਾਰੋਂ ਗੀ ਵਾਖਿਆਤਸੀ ਰੂਪ ਚ ਪ੍ਰਕਟਨੇ ਦੀ ਸਮਰਥ ਹਾਸਲ ਕਰੀ ਸਕਣ ਨ ।

## 2.2 ਪਾਠ—ਪਰਿਚੇ

ਇਸ ਪਾਠ ਚ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਖੀਲੇ ਚਾਂਊ ਸਾਰੇ ਚਾ ਕਿਥ ਪਦਾਂਥਾਂ ਦੀ ਵਾਖਿਆ ਕੀਤੀ ਗੇਦੀ ਐ ।

## 2.3 ਪਾਠ—ਪ੍ਰਕਿਧਾ

- (ਕ) ਪਦਾਂਥ ਦੇ ਸਨੰਦ ਚ ਕਾਵਿ ਦੇ ਲੇਖਕ ਦਾ ਨਾਂਡ ਦਿਤਾ ਗੇਦਾ ਐ ।
- (ਖ) ਪਦਾਂਥ ਦਾ ਚੇਚਾ ਸਨੰਦ ਪ੍ਰਸ਼ਾਂਗ ਦੇ ਅਨੱਤਗਤ ਦਿਤਾ ਗੇਦਾ ਐ ਤਾਂ ਜੇ ਵਿਦਾਰਥੀ ਗੀ ਵਿਸ਼ੇ ਵਸਤੂ ਦਾ ਪਤਾ ਚਲੀ ਸਕੈ ।
- (ਗ) ਪਦਾਂਥ ਚ ਵਕਤ ਵਿਚਾਰੋਂ ਦੀ ਵਾਖਿਆ ਇਸ ਫੰਗ ਕਨੌ ਕੀਤੀ ਗੇਦੀ ਐ ਜੇ ਵਿਦਾਰਥੀ ਉਸੀ ਸਮਝਿਯੈ ਆਪੂਰ ਵਾਖਿਆ ਕਰਨੇ ਦੀ ਸਮਰਥ ਹਾਸਲ ਕਰੀ ਸਕਨ ।

### ◆ ਪੈਹਲੇ ਪਦਾਂਥ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ਾਂਗ ਵਾਖਿਆ

ਬਾਣ ਚਲਾਯਾ ਪਾਂਡੂ ਦਾ ਹਰਣੇ ਦੀ ਜਿਨ੍ਦੂ ਲਗਾ ।

ਹਰਣ ਨਿਹਾਂ, ਹੁਨ ਸਾਧੁ ਹਾ ਇਕ ਏਹ ਕੈਸਾ ਫੰਗ ਬਜ਼ਾ ॥

ਜਾਧਾਂ ਨਿੰ ਸੁਕਕਾ, ਸ਼ਾਪ ਤੁਗੀ ਤੂਂ ਇਸੈ ਮੌਤੀ ਮਰਗਾ ।

ਜਦੁੰ ਜਨਾਨੀ ਛੂਹਗਾ ਅਪਨੀ ਹੋਨਾ ਜਿਨ੍ਦੂ ਹਰਜਾ ॥

### ਸਨੰਦ :—

ਏਹ ਕਾਵਿ—ਅਂਥ ਸਾਡੀ ਪਾਠਿ ਕ੍ਰਮ ਚ ਲਗੇ ਦੇ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਦੇ ਪੈਹਲੇ ਸਾਰੇ ਥਮਾਂ ਲੈਤਾ ਗੇਦਾ ਐ । ਇਸਦੇ ਰਚਨਾਕਾਰ 'ਜ਼ਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ' ਹੋਰ ਨ ।

**प्रसंग :-**

इस काव्य-अंश च कवि ने पांडू राज गी किन्दम मुनि द्वारा थहोने आहले शराप दा वर्णन प्रस्तुत कीते दा ऐ । ते इथै शराप खीर उसदी मौत दा कारण बनदा ऐ ।

**व्याख्या :-**

इक बारी पांडू राज जंगल च शिकार खेढऱ्यन जंदा ऐ तां उत्थें उसी हिरण-हिरणी अपनी काम लीला च मगन लभदे न । पांडू शिकार गी सामने दिकिखयै रेही नेई पांदा बगैर किश सोचे-समझे काम वासना च लीन हिरण पर तीर चलाई दिंदा ऐ । पर बदकिस्मती दिकखो जे ओह हिरण नेई किन्दम मुनि हे । पांडू राज पछतांदा दे बडा पर किन्दम मुनि मरदे-मरदे उसगी शराप दिंदे न जे जियां तूं मेरै कनै कीती, जेहडी मौत में मरा करना खीर तूं बी इस्सै मौती मरगा । किन्दम मुनि पांडू गी शराप दिंदे होई गलांदे न जे तूं जिस दिन बी कुसै जनानी गी छूहगा उस्सै दिन उस बेल्लै गै तेरे प्राण नश्ट होई जाडन ।

◆ **दुए पद्यांश दी सप्रसंग व्याख्या**

मैहलै आई रूप दासी दा धारी !

चुककी प्रभु गी ते बट्टी डुआरी !!

मौहरा मली दुद्ध अपना पिलाया !

इक सीक खिच्ची लज बी मुकाया !!

**संदर्भ :-**

एह काव्य-अंश साढी पाठ्य क्रम च लग्ये दे महाकाव्य 'महात्मा विदुर' दे दुए सर्ग थमां लैता गेदा ऐ । इसदे रचनाकार 'ज्ञान सिंह पगोच' होर न ।

**प्रसंग :-**

इस काव्य-अंश च कवि कृष्ण लीला दा बखान करदे होई, ज्याने कृष्ण द्वारा रूप बदलियै आई दी राक्षनी पुतना दे बध दा बडा सुंदर वर्णन प्रस्तुत कीते दा ऐ ।

**व्याख्या :-**

अपने भने हत्थे मौती थमां डरे दे कंस गी जिसलै पता चलदा ऐ जे उसगी मारने आहला

ਗੋਕਲ ਗ੍ਰਾਂ ਚ ਜਸ਼ੋਦਾ ਦੇ ਘਰ ਪਲਾ ਕਰਦਾ ਏ ਤਾਂ ਓਹ ਕ੃ਣ ਗੀ ਮਾਰਨੇ ਦੀ ਹਰ ਮਮਕਨ ਕੌਸ਼ਲ  
ਕਰਦਾ ਏ । ਤੇ ਇਕ ਦਿਨ ਓਹ ਅਪਨੀ ਦਾਸੀ ਰਾਕ਼ਨੀ ਪੁਤਨਾ ਗੀ ਜਾਧਾਨੇ ਕ੃ਣ ਗੀ ਮਾਰਨੇ ਆਸਟੈ  
ਗੈਕਲ ਭੇਜਦਾ ਏ । ਪੁਤਨਾ ਬਡੀ ਚੌਰੀ—ਚਲਾਕੀ ਕਨੈ, ਇਕ ਸੁੰਦਰ ਜਨਾਨੀ ਦਾ ਰੂਪ ਧਾਰੀ  
ਜਸ਼ੋਦਾ ਦੇ ਘਰ ਜਾਈ ਪੁਜਦੀ ਏ । ਤੇ ਉਥੋਂ ਸੁਤੇ ਦੇ ਜਾਧਾਨੇ ਕ੃ਣ ਗੀ ਅਪਨੇ ਹਤਥੋਂ ਚ ਚੁਕਕੀ ਲਾਡ  
ਲਾਂਦੇ—ਲਾਂਦੇ ਅਪਨੇ ਸਤਨੋਂ ਪਰ ਮੈਹਰਾ ਮਲਿਯੈ ਦੁੱਖ ਪਲਾਨ ਲਗਦੀ ਏ । ਪਰ ਪ੍ਰਭੁ ਦੀ ਲਾਲਾ ਦਿਕਖੋ  
ਜੇ ਪ੍ਰਾਣ ਲੈਨ ਆਈ ਦੀ ਪੁਤਨਾ ਗੀ ਆਪੂ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਾਣੋਂ ਥਮਾਂ ਹਤਥ ਧੋਨੇ ਪੈਂਦੇ ਨ । ਜਾਧਾਨਾ ਕ੃ਣ  
ਦੁੱਖ ਪੈਂਦੇ—ਪੈਂਦੇ ਇਕ ਐਸੀ ਸੀਕ ਬਟਦਾ ਏ ਜੇ ਲਹੂ ਚੂਸਿਯੈ ਉਸਦੇ ਪ੍ਰਾਣ ਬੀ ਕੜੀ ਟਕਾਂਦੇ ਏ ।

#### ◆ ਤ੍ਰਿਯੇ ਪਦਾਂਸਾਂ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸਾਂਗ ਵਾਖਿਆ

ਬਾਹਰੋਂ ਲਿਮਿਨ—ਪੋਚ, ਮਨੈ ਬਿਚ ਹੋਆ ਕੋਲੇ !

ਏਹ ਦੁਬਧਾ ਦਾ ਭਾਵ, ਕਰੈ ਦਾ ਅਪਨੇ ਖੋਲੇ !!

ਕਰਨੀ—ਕਥਨੀ ਫਕ਼ ਚ ਮਾਛਨੂ ਪਾਪੀ ਬਨਦਾ !

ਮੋਹ ਹਾ ਸੁਹਾਈ, ਝੂਠੇ ਤਮ੍ਹ ਤਨਦਾ !!

**ਸੰਦੰਭ :-**

ਏਹ ਕਾਵਿ—ਅੰਸਾ ਸਾਡੀ ਪਾਠਿ ਕ੍ਰਮ ਚ ਲਗੇ ਦੇ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਦੇ ਤ੍ਰਿਯੇ ਸੰਗ ਥਮਾਂ  
ਲੈਤਾ ਗੇਦਾ ਏ । ਇਸਦੇ ਰਚਨਾਕਾਰ 'ਜ਼ਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ' ਹੋਰ ਨ ।

**ਪ੍ਰਸਾਂਗ :-**

ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਸਤਰੋਂ ਚ ਕਹਿ ਨੈ ਧੂਤਰਾ਷ਟ ਚ ਅਨਦਰੋ—ਅਨਦਰ ਪਲਨੇ ਆਹਲੇ ਪਾਂਡੁਏਂ ਪ੍ਰਤਿ ਦੋਖੀ ਸਵਾ  
ਦਾ ਵਰਣਨ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ।

**ਵਾਖਿਆ :-**

ਜਿਸਲੈ ਵਿਦੁਰ ਨੈ ਖੁਸ਼ ਹੋਇਥੈ ਏਹ ਖੁਸ਼—ਖ਼ਬਰੀ ਧੂਤਰਾ਷ਟ ਗੀ ਸਨਾਂਦਾ ਏ ਜੇ ਕੌਰਵ ਕੁਲ ਦੀ ਬੇਲ  
ਯਾਗਤੋਂ ਹੋਰ ਬਧਾਈ ਏ ਤਾਂ ਧਥਤ ਗੀ ਏਹ ਲਗਦਾ ਏ ਜੇ ਦ੍ਰੁਪਦ ਰਾਜੇ ਦੇ ਜਗ ਚ ਉਸਦੀ ਧੀ ਕ੃ਣਾ  
ਦਾ ਬਾਹ ਉਸਦੇ ਦੁਰੋਧਨ ਕਨੈ ਹੋਯਾ ਹੋਨਾ, ਓਹ ਵਿਦੁਰ ਗੀ ਆਖਦਾ ਏ ਜੇ ਮਿਗੀ ਪੈਹਲੋਂ ਗੈ ਪਤਾ  
ਹਾ ਜੇ ਦੁਰੋਧਨ ਨੈ ਉਥੈ ਜਸ਼ ਕਮਾਯਾ ਏ । ਤਾਂ ਪਰਤੇ ਚ ਵਿਦੁਰ ਧੂਤ ਗੀ ਸਨਾਂਦੇ ਨ ਜੇ ਏਹ ਜਸ਼  
ਦੁਰੋਧਨ ਨੈ ਨੈਈ ਅਰਜੁਨ ਏਹ ਕਮਾਯਾ ਏ । ਤੇ ਇਸ ਓਹ ਪੱਜੈ ਭਾ ਦ੍ਰੁਪਦ ਰਾਜ ਚ ਗੈ ਰੌਵਾ ਕਰਦੇ  
ਨ । ਏਹ ਗਲਲ ਸੁਨਦੇ ਸਾਰ ਗੈ ਧੂਤਰਾ਷ਟ ਦਾ ਮਨ ਢਠੀ ਗੇਆ । ਓਹ ਮਨੋਮਨ ਜਲਨ—ਭੁਜਨ

ਲਗਾ। ਪਰ ਵਿਦੁਰ ਦੇ ਸਾਮਨੈ ਓਹ ਅਪਨੇ ਮਨੋਭਾਵੋਂ ਗੀ ਬੁਆਸਰਦਾ ਨੇਈ ਤੇ ਗਲਾਂਦਾ ਏ ਜੇ ਮਿਗਿ ਕੌਰਵ ਤੇ ਪਾਂਡਵ ਦੌਨੀ ਚ ਕੋਈ ਫਰਕ ਨੇਈ, ਦਵੈ ਮੇਰੀ ਲੇਈ ਬਰਾਬਰ ਨ। ਤੇ ਮੇਰੀ ਪੀਡ ਸਮਝਦੇ ਨ। ਪਰ ਅੰਦਰੋ—ਅੰਦਰੀ ਓਹ ਜਲਿਯੈ ਕੋਲਾ ਹੋਈ ਜਂਦਾ ਏ। ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ ਦਾ ਇਧੈ ਦੋਗਲਾ ਸਭਾ ਗੈ ਉਸਦਾ ਤੇ ਉਸਦੇ ਬੱਸ ਦੀ ਤਥਾਹੀ ਦਾ ਕਾਰਣ ਹਾ। ਕਥਿ ਗਲਾਂਦਾ ਏ ਜੇ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ ਸਾਹੀਂ ਸੁਹੈਂ ਪਰ ਝੂਠੋਂ ਦੇ ਮਹਰਕਖੇ ਚਾਢਨੇ ਆਹਲੇ ਲੋਗ ਖੀਰ ਪਾਪ ਦੇ ਦਲ—ਦਲ ਚ ਖੁਬਦੇ ਜਂਦੇ ਨ।

### ◆ ਚੌਥੇ ਪਦ्यਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ਾਂਗ ਵਾਖਿਆ

ਹੇ ਧਰਮ—ਮੂਰਤ ! ਯੁਧਿ਷਼ਠਿਰ ਬਚਾਓ !

ਬੜਾ ਚੰਗ ! ਥਾਡੀ ਨਜ਼ਰ ਨਿੰ ਚਕੋਂਦੀ !

ਬਲੀ ਭੀਮ ! ਗੁਰਜੇ ਗੀ ਚੁਕਕੇ ਦਨਾ ਭਰ !

ਤੁਸ ਚੁਪ ! ਨੇਈ ਗਲਲ ਸੂਹਾਂ ਗਲੋਂਦੀ !

ਅਰਜੁਨ ! ਤੁਸਸੈ ਬਾਣੀਂ ਬਰਖਾ ਬਾਰਾਓ !

ਕੁਥੋਂ ਧਨੁ਷ ? ਕੀ ਨਿੰ ਡੋਰੀ ਖਚੋਂਦੀ ?

ਨਕੂਲ—ਸੈਹੁਦੇਵੋ ! ਚਲਾਓ ਹਾਂ ਸ਼ਸਤਰ,

ਖਾਲੀ ! ਕੋਈ ਭਲਲ ਬਚੀਂ ਨਿੰ ਥਹੋਂਦੀ !

### ਸਾਂਦਰਭ :-

ਏਹ ਕਾਵਿ—ਅੰਸ਼ ਸਾਡੀ ਪਾਠ੍ਯ ਕ੍ਰਮ ਚ ਲਗੇ ਦੇ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਦੇ ਚੌਥੇ ਸਾਰੇ ਥਮਾਂ ਲੈਤਾ ਗੇਦਾ ਏ। ਇਸਦੇ ਰਚਨਾਕਾਰ 'ਜ਼ਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ' ਹੋਰ ਨ।

### ਪ੍ਰਸ਼ਾਂਗ :-

ਇਸ ਪਦ्यਾਂਸ਼ ਚ ਕਥਿ ਨੈ, ਦ੍ਰੋਪਦੀ ਦਾ ਭਰੀ ਸਭਾ ਚ ਪੱਜੋਂ ਪਾਂਡੂਏਂ ਅਗੋਂ ਅਪਨੀ ਇਜ਼ਜ਼ਤ ਬਚਾਨੇ ਲੇਈ ਤਰਲੇ—ਮਿਨਤਾਂ ਕਰਨੇ ਦਾ ਬਰਲਾਪ ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ।

### ਵਾਖਿਆ :-

ਜਿਸਲੈ ਯੁਧਿ਷਼ਠਿਰ ਅਪਨੇ ਭਾਏ ਸਮੇਤ ਅਪਨਾ ਆਪ ਗੀ ਤੇ ਕ੃ਣਾ (ਦ੍ਰੋਪਦੀ) ਗੀ ਬੀ ਜੁਏ ਹਾਰੀ ਦਿੰਦਾ ਏ ਤਾਂ ਦੁਸ਼ਾਸਨ ਕ੃ਣਾ ਗੀ ਬਾਲੋਂ ਥਮਾਂ ਘਸਿਟਿਧੈ ਭਰੀ ਸਭਾ ਚ ਲੇਈ ਔਂਦਾ ਏ ਤੇ ਕਰਣ ਦੇ ਆਖਨੇ ਪਰ ਉਸੀ ਨਿਰਵਸਤ੍ਰ ਕਰਨ ਲਗਦਾ ਏ। ਤਾਂ ਅਪਨੀ ਇਜ਼ਜ਼ਤ ਦੀ ਰਖਾ ਲੇਈ ਬੇ—ਬਸ ਕ੃ਣਾ ਕੌਰਵੋਂ

ਦੇ ਦਾਸ ਬਨੀ ਚੁਕੇ ਦੇ ਸ਼ੂਰਵੀਰ ਪੱਜੋਂ ਪਾਂਡੂਏਂ ਅਗੋਂ ਛਨਦੇ ਕਰਦੀ ਐ । ਸਭਨੋਂ ਸ਼ਾ ਪੈਹਲੇਂ ਓਹ ਧਰ्म ਦੀ ਸੂਰਤ ਯੁਧਿ਷਼ਠਰ ਅਗੋਂ ਬਾਸਤੇ ਪਾਂਦੀ ਐ ਜੇ ਓਹ ਉਸਦੀ ਰਖਾ ਕਰੈ ਪਰ ਸ਼ਰਮਸਾਰ ਯੁਧਿ਷਼ਠਰ ਉਸ ਕਨੈ ਅਪਨਿਆਂ ਅਕਖੀਂ ਤਕ ਨੇਈ ਮਲਾਈ ਸਕਦਾ । ਫਹੀ ਬਲਕਾਰੀ ਭੀਸ ਤੇ ਧਨੁ਷ਧਾਰੀ ਅਰਜੁਨ ਅਗੋਂ ਫਰਾਯਾਦ ਕਰਦੀ ਤੇ ਤੱਦੀ ਵੀਰਤਾ ਗੀ ਝਾਂਕੋਰਦੀ ਐ । ਨਕੂਲ—ਸੈਹਦੇਵ ਜਨੇਹ ਵੀਰ ਧੋਵਾਏਂ ਅਗੋਂ ਬੀ ਰੌਂਦੀ—ਰਡਾਂਦੀ ਐ । ਪਰ ਜੁਏ ਚ ਹਰੇ ਦੇ ਪੱਜੋ—ਪੱਜ ਪਾਂਡੂ ਪੁਤਰ ਕੌਰਵੇਂ ਕਨੈ ਦ੍ਰੋਪਦੀ ਦੇ ਇਸ ਅਪਨਾ ਦਾ ਬਦਲਾ ਬੇ—ਬਸ ਹੋਂਦੇ ਨ ਤੇ ਭਰੀ ਸਭਾ ਚ ਅਪਨਾ—ਅਪਨਾ ਸਿਰ ਝੁਕਾਈ ਬੈਠੇ ਦੇ ਰੌਂਹਦੇ ਨ ।

#### ◆ ਪੜਮੋਂ ਪਦਯਾਂਸ਼ ਦੀ ਸਪ੍ਰਸ਼ਾਂਗ ਵਾਖਿਆ

ਤੁਸ, ਧਰਮ ਅਵਤਾਰੀ

ਜਗ ਨਿਆਂ ਦੀ ਜੋਤ ਜਗਾਈ ।

ਥਾਡੇ ਪੈਰੋਂ ਦੀ ਘਾਸਸਾ,

ਹੋਨੀ ਐ ਲੋਕ ਭਲਾਈ ।

ਮੂਰਖ ਅਕਖੀ ਦਾ ਅਨੈ,

ਭੀ ਡਾਪਰ ਪਰ ਗਮੂਰੀ ।

ਲਹੁਏ ਦੇ ਨਾਡੂ ਬਗਾਨੇ,

ਛੂਨ ਐ ਜੁਵਾਂ ਜ਼ਰੂਰੀ ।

**ਸਾਂਦਰਭ :-**

ਏਹ ਕਾਵਿ—ਅਂਸ਼ ਸਾਫ਼ੀ ਪਾਠ੍ਯ ਕ੍ਰਮ ਚ ਲਾਗੇ ਦੇ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਦੇ ਪੜਮੋਂ ਸਾਰੀ ਥਮਾਂ ਲੈਤਾ ਗੇਦਾ ਐ । ਇਸਦੇ ਰਚਨਾਕਾਰ 'ਜ਼ਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ' ਹੋਰ ਨ ।

**ਪ੍ਰਸ਼ਾਂਗ :-**

ਇਨ੍ਹੋਂ ਪੱਕਿਯੋਂ ਚ ਵਿਦੁਰ ਭਗਵਾਨ ਕ੃ਣ ਗੀ ਕੌਰਵੇਂ ਪਾਂਡਵੇਂ ਮਜ਼ਾਟੈ ਮਠੋਂਦੀ ਤਨੋਤਨੀ ਕਰੀ ਅਪਨੇ ਸਮੂਲਚੇ ਕੁਲ ਦੀ ਲਾਜ ਬਚਾਨੇ ਦਾ ਅਨੁਰੋਦ ਕਰਦੇ ਨ ।

**ਵਾਖਿਆ :-**

ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਪਦਯਾਂਸ਼ ਚ ਵਿਦੁਰ ਅਪਨੇ ਘਰ ਆਏ ਦੇ ਭਗਵਾਨ ਕ੃ਣ ਗੀ ਅਨੁਰੋਦ ਕਰਦੇ ਨ ਜੇ ਓਹ ਕੌਰਵ

ते पांडवें दी सुलाह कराइयै उंदा कुल बचान पर कृष्ण विदुर गी गलांदे न जे तुसें सारी उमर कोई माड़ा कम्म नेई कीता ते अजें बी तुस अपनी पूरी कौशश करा करदे ओह जे एह विनाश थोई जा । तुस चिंता छोड़ो जो जियां करग ओह उआं गै भरग । पर विदुर कृष्ण गी गलांदे न जे तुस चाहो तां एह धर्मयुद्ध होने शा रुकी सकदा ऐ । की जे तुंदी मर्जी कन्नै गै एह सारी दुनिया चलदी ऐ । परते च भगवान कृष्ण गलांदे न जे धृतराष्ट्र अक्खीं दा ते अन्ना ऐ गै पर हुन ओह अपने पायें करी दमागे दा बी अन्ना होई गेदा ऐ । जेहड़ा तुंदे जनेह महात्मा दी गल्ल नेई मनदा ओह मेरी केह सुनग । हुन ते लहुए दे हाड़ बगने न, इस युद्ध गी हुन कोई नेई रोकी सकदा ते समूलचे संसार च शांती लई एह धर्म युद्ध होना बी जरुरी ऐ ।

### अभ्यास :-

ख' ल्ल दित्त दे पद्यांशें दा संदर्भ ते प्रसंग दस्तियै व्याख्या करो :-

- (क) पलै बिज्ज धरती चम्माके—चम्माके !  
गड़ा—गड़, गड़ागड़, धम्माके—धम्माके !!  
भी मोहलधारें ही बरखा दी बोल्ली !  
अखचौ जिझजां लद्द इन्द्र ने खोल्ली !!  
भिड़े बात अगें फुहारें गी धिक्के !  
धरती ते अम्बर होई गेदे इक्कै !!
- (ख) सलगै अगनी जाड़, तां उहए जीव न बचदे ।  
धरती अन्दर थाहर, बनाई जो तप तपदे ॥  
बाहुऐं अपनै जोर, दा होना मता जरुरी ।  
पौदे मुहऐं भार, जिंदे कशा छड़ी गमूरी ॥  
जप, योग तप ध्यान, ज्ञान दी लो जगानी ।  
सील—सभाऽ सच—ठंड, बी जिन्नी बधै बधानी ॥
- (ग) उस्सै समै भी गधे, कुत्ते, गिहड़,

आई सभा सामने हे हुआं के !  
 हे राम ! अपसगन दिक्खी डरे सब,  
 धृत पाप बांडे भी अपने हे झांके !  
 झट डरदे मारे पांडू मुक्त कीते,  
 गेई दासता वर कृष्णा गी बांके !  
 पांडू चले बो सुयोधन दुखी,  
 पच्छ हिरदे दा थम्मी 'यै लांदा ऐ टांके !

(घ) तुं अजें निं भलेआं भाखी,  
 अर्जुन दी जुद्ध कमाई ।  
 तीरें दी बरखा कन्ने,  
 जग सारा देग रुढ़ाई ।  
 तूं विदुर महात्मा जैसे  
 गुरुएं दी गल्ल निं मन्नी ।  
 मां बबै बी समझाया,  
 इक सिक्ख निं गंडी ब'न्नी ।

#### 2.4 सारांश

इस पाठ च विद्यार्थियें आस्तै 'महात्मा विदुर' महाकाव्य दे किश खीरले चेऊ सर्ग बिण्णा दी सप्रसंग व्याख्या दित्ती गेदी ऐ। कन्नै गै संदर्भ, प्रसंग ते व्याख्या बौर जानकारी हासल होई सकग। बक्खरे –बक्खरे सर्ग थमां लैते गैद एह कहडे सर्ग बिच्चां लैता गेदा ऐ।

- 2.5 विद्यार्थियें दे अभ्यास आस्तै किश – अशं पाठ्य-पुस्तक थमां
- 2.6 सहायक पुस्तकां – 'महात्मा विदुर'
- डोगरी साहित्य दा इतिहास : डॉ जितेन्द्र उधमपुर

.....0.....

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102**

**Unit - II**

**Semester - I**

**Lesson : 3**

---

### **LIFE AND CONTRIBUTION OF POET AND STUDY IN DIFFERENT ASPECTS OF " MAHATMA VIDUR-"**

कवि दा जीवन—परिचे ते डोगरी काव्य च उंदा योगदान

3.0 रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 पाठ—परिचे

3.3 पाठ—प्रक्रिया

3.3.1 श्री ज्ञानसिंह पगोच ते डोगरी काव्य—साहित्य गी इंदा योगदान।

3.4 सारांश

3.5 कठिन शब्द

3.6 अभ्यास आस्तै सोआल

3.7 सहायक—पुस्तकां

3.1 उद्देश्य

इस पाठ गी पढ़ियै विद्यार्थियें गी डोगरी दे मशहूर कवि 'श्री ज्ञानसिंह पगोच' हुंदे जीवन—परिचे ते डोगरी काव्य—साहित्य गी उंदे नमुले योगदान बारै विस्तृत जानकारी

ਹਾਸਲ ਹੋਗ ਤੇ ਝਿੰਦੇ ਵਕ਼ਿਤਵ ਤੇ ਕ੃ਤਿਤਵ ਦੇ ਬਾਰੇ ਚ ਵਿਦਾਰ੍ਥੀ ਕੁਸੈ ਬੀ ਕਿਸਮਾ ਦੇ ਸੁਆਲੋਂ ਦੇ ਉਤਰ ਦੇਨੇ ਚ ਸਮਰਥ ਹੋਡਨ ।

### 3.2 ਪਾਠ—ਪਰਿਚੇ

ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਸ਼੍ਰੀ ਜ਼ਾਨਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੁਂਦੇ ਵਕ਼ਿਤਵ ਤੇ ਕ੃ਤਿਤਵ ਸਰਬਾਂਧੀ ਲੋਡ਼ਚਦੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਗੇਦੀ ਐ ।

### 3.3 ਪਾਠ—ਪ੍ਰਕਿਧਾ

#### 3.3.1 ਸ਼੍ਰੀ ਜ਼ਾਨਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਕਾਵਿ—ਸਾਹਿਤਿ ਗੀ ਝਿੰਦਾ ਯੋਗਦਾਨ ।

- (ਕ) ਸ਼੍ਰੀ ਜ਼ਾਨਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੁਂਦਾ ਜੀਵਨ—ਪਰਿਚੇ
- (ਖ) ਸ਼੍ਰੀ ਜ਼ਾਨਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੁਂਦਿਆਂ ਰਚਨਾਂ
- (ਗ) ਸ਼੍ਰੀ ਜ਼ਾਨਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੁਂਦੇ ਕਾਵਿ—ਸਾਹਿਤਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਰਕ
- (ਘ) ਸ਼੍ਰੀ ਜ਼ਾਨਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਕਾਵਿ—ਸਾਹਿਤਿ ਗੀ ਤਾਂਦਾ ਯੋਗਦਾਨ

#### 1. ਜੀਵਨ—ਪਰਿਚੇ

ਡੋਗਰੀ ਕਾਵਿ—ਸਾਹਿਤਿ ਚ ਅਪਨਾ ਟਕੋਹਦਾ ਨਾਂ ਰਕਖਨੇ ਆਹਲੇ ਹੋਨਹਾਰ ਕਵਿ 'ਸ਼੍ਰੀ ਜ਼ਾਨਸਿੰਹ ਪਗੋਚ' ਹੁਂਦਾ ਜਨਮ 15 ਮੈਈ 1948 ਈ. ਚ ਜਿਲਾ ਕਟੁਆ ਦੀ ਤਸੀਲ ਹੀਰਾਨਗਰ ਦੇ ਇਕ ਗ੍ਰਾਮ ਪਟਿਆਲੀ ਚ ਇਕ ਰਾਜਪੂਤ ਘਰਾ ਚ ਹੋਆ । ਏਹ ਇਕ ਐਸੇ ਸਾਹਿਤਕਾਰਨ ਜੇਹਡੇ ਅਪਨੀ ਕਾਵਿ—ਸਾਧਨਾ ਚ ਰੁਜ਼ੇ ਦੇ ਰੌਂਹਦੇ ਨ ਤੇ ਕਵਿ ਗੋਸ਼ਿਟਿਆਂ ਜਾਂ ਮੁਸ਼ਾਯਰੇਂ ਚ ਕਦੋਂ ਗੈ ਜਾਂਦੇ ਨ ।

ਝਿੰਦੀ ਮੁੰਡਲੀ ਪਢਾਈ ਅਪਨੇ ਗ੍ਰਾਮ ਚ ਗੈ ਹੋਈ ਤੇ ਜਿਲਾ ਕਟੁਆ ਦੇ ਡਿਗ੍ਰੀ ਕਾਲੇਜ ਥਮਾਂ ਝਿੰਨੋਂ 12ਮੀਂ ਜਮਾਤ ਪਾਸ ਕੀਤੀ । 12ਮੀਂ ਪਾਸ ਕਰਨੇ ਬਾਦ ਏਹ ਅਪਨੇ ਗ੍ਰਾਮ ਵਾਪਸ ਆਈ ਗੇ । ਘਰੈ ਦੀ ਮਾਲੀ ਹਾਲਤ ਖੁਸ਼ਤਾ ਹੋਨੇ ਕਰੀ ਏਹ ਅਪਨੀ ਪਢਾਈ ਅਗੇ ਜਾਰੀ ਨੇਈ ਰਕਖੀ ਸਕੇ । 1972 ਚ ਝਿੰਨੋਂ ਜਮ੍ਮੂ ਯੂਨੀਵਰਸਟੀ ਦੇ ਕਮਿਸ਼ਨੀ ਵਿਭਾਗ ਚ ਬਤੌਰ ਸਟੋਰ ਕੀਪਰ ਅਪਨੀ ਨੌਕਰੀ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ । ਤੇ ਫਹੀ ਆਖਰ 31 ਮੈਈ 2008 ਚ ਏਹ ਸਰਵਿਸਿਜ ਟ੍ਰਾਂਸਪੋਰਟ ਤੇ ਏਸਟੇਟ ਵਿਭਾਗ ਥਮਾਂ ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਰਜਿਸਟਰ ਦੇ ਔਹਦੇ ਪਰਾ ਰਿਟਾਯਰ ਹੋਏ । ਝਿੰਦਿਆਂ ਧਰਮਪਲੀ ਹੋਰ ਮਤਿਆਂ ਪਛੀ—ਲਿਖੀ ਦਿਧਾਂ ਤੇ ਨੇਈ ਪਰ ਬਡਿਆਂ ਪਰੋਪਕਾਰੀ, ਸੈਹਨਸੀਲ ਤੇ ਪਤਿਵਰਤਾ ਨ । ਪਗੋਚ ਹੁਂਦੀ ਸਾਹਿਤਿ ਸਿਰਜਨਾ ਝਿੰਦਾ ਖਾਸ ਜੋਗਦਾਨ ਰੇਹਾ ਐ ।

## 2. साहित्य-रचना

ज्ञानसिंह पगोच होरें गी बचपन थमां गै धार्मिक ते पौराणिक ग्रंथें दा गूढ़ अध्ययन करने च रुचि ही। इनें ग्रंथें दा अध्ययन करने दा इंदे पर इन्ना असर होआ जे सन् 1972 थमां एह शुद्ध शाकारारी होई गे। पौराणिक ग्रंथें दा अध्ययन करिये एह उंदे पात्रें शा इन्नें मुतासर होए जे किश-ना-किश लिखने दी योजना बनादे रेह। इनें डोगरी साहित्य गी इक खंड-काव्य ते दो महाकाव्य देइये डोगरी काव्य-साहित्य गी सगगोसार कीता।

इंदी रचनाएं दा ब्लौरा इस चाल्ली ऐ :-

- (क) न्यां (महाकाव्य 1984)
- (ख) मतंग आश्रम (खंड-काव्य 1986)
- (ग) महात्मा विदुर (महाकाव्य 2003)

## 3. ज्ञानसिंह पगोच हुंदा डोगरी काव्य-साहित्य गी योगदान

### (क) न्यां<sup>५</sup>

सन् 1984 च छपने आह्ला एह महाकाव्य डुगगर दे प्रसिद्ध शहीद करसान बावा जित्तो दे जीवन पर अधारत ऐ। पगोच हुंदी डोगरी च छपने आहली एह पैहली साहित्यक रचना ऐ। एह गाथा सत्तें सर्गे च बंडोई दी ऐ ते इसदा अधार बावा जित्तो दी कारक ऐ। सामंतवादी शक्तियें दे खलाफ न्यां लेई लङ्डे होई बावा जित्तो नै किस चाल्ली अपना बलिदान दित्ता उसदा बडा मार्मिक चरित्रण इस महाकाव्य च होए दा ऐ।

### (ख) मतंग आश्रम

ज्ञानसिंह पगोच हुंदा एह काव्य 1986 च प्रकाशत होआ। एहदा कथानक बालमीकी रामायण च आए दे 'राम-शबरी मिलन' प्रसंग पर अधारत ऐ। एह काव्य बी सत्तें सर्गे च बंडोए दा ऐ। भील जाती दी धी शबरी बडी सोहल सुभा दी ते उच्च बचारे आहली नारी ही। उसदे जीवन दा मता समां दक्खनी भारत च पम्पा नदी दे कंडे मतंग रिशी दे आश्रम च बीतेआ ते उंदे शा गै उसने भक्ति दा सूखम ज्ञान प्राप्त कीता। शबरी दे सुभा-सुआत्म, अथाह प्रेम, भक्ति ने कवि गी इस काव्य गी लिखने दी प्रेरणा दित्ती। पगोच होरें शबरी दे जीवन बारै, संघर्ष ते ईश्वर-प्रेम गी बडी बखूबी प्रस्तुत कीते दा ऐ। इस खंड-काव्य

ਪਰ ਪਗੋਚ ਹੋਰੇਂ ਗੀ ਜੋ.ਏਂਡ. ਕੇ ਅਕੈਡਮੀ ਆਫ ਆਰਟ, ਕਲਵਰ ਏਂਡ ਲੈਂਗਵੇਜਿਜ ਜਸ਼੍ਨੂ ਆਸੋਆ ਸਮਾਨ ਹਾਸਲ ਐ ।

### (ਗ) ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ

ਇੱਨਦਾ ਤ੍ਰਿਯਾ ਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਅਗਸਤ 2003 ਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਹੋਇਥੈ ਪਾਠਕਾਂ ਸਾਮਨੇ ਆਯਾ । ਮਹਾਭਾਰਤ ਦੀ ਕਥਾ ਗੀ ਅਧਾਰ ਬਨਾਇਥੈ ਇਨ੍ਹੋਂ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਰਚਨਾ ਕੀਤੀ । ਪੂਰਾ ਮਹਾਕਾਵਿ ਮਹਾਭਾਰਤ ਦੇ ਇਕ ਪਾਤ੍ਰ 'ਵਿਦੁਰ' ਦੇ ਜੀਵਨ-ਚਰਿਤ੍ਰ ਪਰ ਅਧਾਰਿਤ ਐ । ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਦਸ਼ਸੇਆ ਗੇਦਾ ਐ ਜੇ ਕਿਸ ਚਾਲੀ ਇਕ ਦਾਸੀ ਪੁੱਤਰ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਨੈ ਇਕ ਬਨਾਸ਼ਕਾਰੀ ਯੁਦਧ ਗੀ ਰੋਕਨੇ ਦਾ ਜਤਨ ਕੀਤਾ ਹਾ । ਪੂਰੇ ਮਹਾ-ਕਾਵਿ ਚ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਗੀ ਇਕ ਸੋਹਗਾ-ਸਿਧਾਨਾ, ਕੁਸ਼ਲ ਕੂਟਨੀਤਿਜ਼, ਅਹਿੰਸਾਵਾਦੀ, ਧਰਮ ਦਾ ਪਾਲਨ ਕਰਨੇ ਆਲਾ ਇਕ ਮਹਾਨ ਸੰਤ ਦੇ ਰੂਪੈ ਚ ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕੀਤੇ ਦਾ ਐ । ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ 'ਰੁਵੇਂ ਤੇ ਲਕਣਾਂ ਪਰ ਪੂਰਾ ਉਤਰਨੇ ਆਹਲਾ ਏਹ ਇਕ ਸਬੂਰਾ ਮਹਾਕਾਵਿ ਐ । ਪੂਰਾ ਮਹਾਕਾਵਿ ਪਢਨੈ ਪਰੈਨਤ ਪਾਠਕਾਂ ਗੀ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਐ ਜੇ ਮਹਾਭਾਰਤ ਦੇ ਧਰਮ ਯੁਦਧ ਚ ਕਿਸ ਚਾਲੀ ਨੈ ਧਰਮ ਦੀ ਜਿਤ ਹੋਈ ਤੇ ਪਾਂਡਵੋਂ, ਕੌਰਵੋਂ ਗੀ ਕਿਧਾਂ ਹੋਇਆ ।

ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਲੇਈ ਜਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੋਰੇਂ ਗੀ ਜਸ਼੍ਨੂ ਕਲਵਰਲ ਅਕੈਡਮੀ ਤੇ ਸਾਹਿਤਿਆ ਅਕਾਦਮੀ ਦਿਲੀ ਪਾਸੇਆ ਸਮਾਨਿਤ ਕੀਤਾ ਗੇਦਾ ਐ । ਏਹ ਮਹਾਕਾਵਿ ਖਾਸੀ ਰੁਚੀ ਬਨਾਈ ਰਖਨੇ ਆਹਲਾ ਤੇ ਪਾਠਕਾਂ ਗੀ ਸਿਖ-ਮਤ ਦੇਨੇ ਆਹਲਾ ਐ ।

ਏਹਦੇ ਇਲਾਵਾ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਆ ਦੇ ਖੇਤਰ ਚ ਪਗੋਚ ਹੁਨਦਾ ਅਪਨਾ ਇਕ ਖਾਸ ਥਾਹਰ ਐ । ਇੱਨਿਧਿਆਂ ਏਹ ਕ੃ਤਿਆਂ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਆ ਗੀ ਇਕ ਮਹਤਵਪੂਰਣ ਦੇਨ ਐ । ਮਨ੍ਨੇ ਪਰਮਨ੍ਨੇ ਦੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਆਕਾਰੋਂ ਪਗੋਚ ਹੁਨਦੀ ਗਿਨਤਰੀ ਕੀਤੀ ਜਨ੍ਦੀ ਐ ।

'ਮਤਾਂ ਆਸ਼ਰਮ' ਖੰਡ ਕਾਵਿ ਤੇ 'ਨਿਆਂ' ਤੇ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਬਾਗੈਰ ਬੀ ਜਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੁਨਿਦਿਆਂ ਕੇਈ ਹੋਰ ਸਾਹਿਤਿਆ ਰਚਨਾ ਬੀ ਮਿਲਦਿਆਂ ਨ, ਜੇਡਿਆਂ ਸ਼ੀਰਾਜਾ ਡੋਗਰੀ ਤੇ ਲੋਡ ਪਤਿਕਾਏਂ ਚ ਛਪੀ ਚੁਕੀ ਦਿਇਆਂ ਨ ।

ਇਨ੍ਹਾਂ ਕ੃ਤਿਆਂ ਚ "ਧਰਤੀ ਦੇ ਚਿਤ੍ਰਗੁਪਤ", "ਆਸਰਾ" (ਰੇਡਿਯਾਈ ਨਾਟਕ), "ਭਾਵ, ਭਕਤਿ, ਵਿਚਾਰ", "ਮਜ਼ਾਂ" ਤੇ "ਗੋਪੀ" ਲੇਖ ਬਾਗੈਰਾ ਸ਼ਾਮਲ ਨ ।

ਜਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੋਰੇਂ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਪ੍ਰਬੰਧ-ਸਾਹਿਤਿਆ ਗੀ ਏਹ ਅਸਰ ਰਚਨਾ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਿਥੈ ਇਸ ਸਾਹਿਤਿਆ ਗੀ ਸਾਗਰੇ ਕਰਨੇ ਦਾ ਬੜਾ ਚੇਚਾ ਧੋਗਦਾਨ ਦਿੱਤੇ ਦਾ ਐ ।

ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਆ ਸਿਰਜਨਾ ਚ ਲਗਾਤਾਰ ਰੁਜ਼ੇ ਦੇ ਨ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਆ ਜਗਤ ਚ ਇਕ ਅਸਿਟ

ਛਾਪ ਛੋਡੀ ਦੀ ਏ ਤੇ ਇੰਦਾ ਨਾਂ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਮਨ੍ਨੇ—ਪਰਮਨ੍ਨੇ ਦੇ ਕਵਿਧਿਆਂ ਚ ਔਂਦਾ ਏ ।

ਅਪਨੀ ਰਿਟੋਂਯਰਮੈਂਟ ਦੇ ਬਾਦ ਬੀ ਪਗੋਚ ਹੋਰ ਲਗਾਤਾਰ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿ ਸਿਰਜਨਾ ਚ ਰੁਜ਼ੇ ਦੇ ਨ ।

### 3.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਠਿਯੈ ਵਿਦਾਰਥਿਯਾਂ ਗੀ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੰਢ ਕਵਿ 'ਜਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ' ਹੁੰਦੀ ਸਰੋਖਡ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸਦੇ ਲਾਵਾ ਤਦੇ ਫ਼ਾਰਾ ਡੋਗਰੀ ਕਾਵਿ ਦੇ ਜੋਗਦਾਨ ਬਾਰੈ ਬੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਕਰੀ ਸਕਣ। ਡੋਗਰੀ ਚ ਤੰਦਾ ਅਨਮੂਲਲਾ ਜਾਗਦਾਨ ਰੇਹਾ ਏ। ਇਸਦੇ ਲਾਵਾ ਤੱਛਿਧੇ ਰਚਨਾਏ ਬਾਰੈ ਬੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਕਰੀ ਸਕਣ।

### 3.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਾਬਦ

- |           |            |           |
|-----------|------------|-----------|
| 1) ਵਿਸਤੂਤ | 2) ਲੋਡ਼ਚਦੀ | 3) ਟਕੋਹਦਾ |
| 4) ਜਮਾਤ   | 5) ਪੌਰਾਣਿਕ | 6) ਨਿਆਂ   |
| 7) ਹੋਨਹਾਰ | 8) ਨਮੂਲਲਾ  |           |

### 3.6 ਅਭਿਆਸ ਆਸਤੈ ਸੋਆਲ

- 1) ਜਾਨ ਸਿੰਹ ਪਗੋਚ ਹੁੰਦਾ ਜੀਵਨ ਪਰਿਚੇ ਅਪਨੇ ਸ਼ਾਬਦਾਂ ਚ ਲਿਖੋ।
- 
- 
- 
- 
- 

- 2) 'ਨਿਆਂ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਬਾਰੈ ਵਿਸਤੂਤ ਜਾਨਕਾਰੀ ਦੇਓ
- 
- 
- 
-

3) 'महात्मा विदुर' महाकाव्य दे पैहले त्र'ऊं संग्रे दा सार लिखो।

4) पगोच हुंदी रचनाएं बारै नोट लिखो।

### 3.7 सहायक पुस्तकां

## ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ्य ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ : ਡਾਂ. ਜਿਤੇਨਦ੍ਰ ਉਧਮਪੁਰੀ

## **M.A. DOGRI**

---

<b>Course No. 102</b>	<b>Unit - II</b>
<b>Semester - I</b>	<b>Lesson : 4</b>

---

### **ਸਾਰ**

- 4.0 ਰੂਪਰੇਖਾ
- 4.1 ਤਵੈਸ਼ਯ
- 4.2 ਪਾਠ-ਪਰਿਚੇ
- 4.3 ਪਾਠ-ਪ੍ਰਕਿਧਾ
  - 4.3.1 ਪੈਹਲੇ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.2 ਦੁਏ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.3 ਤ੍ਰਿਧੇ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.4 ਚੌਥੇ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.5 ਪੜਮੇਂ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.6 ਛੇਮੇਂ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.7 ਸਤਮੇਂ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.8 ਅਠਮੇਂ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ
  - 4.3.9 ਨੌਮੇਂ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ

#### **4.4 सारांश**

#### **4.5 कठिन शब्द**

#### **4.6 अभ्यास आस्तै सोआल**

#### **4.7 सहायक पुस्तकां**

#### **4.1 उद्देश्य**

इस पाठ गी पढ़िये विद्यार्थी समूलचे महाकाव्य 'महात्मा विदुर' दे कथानक कन्नै बाकफ होडन ते नौ सर्गं च बंडोए दे इस महाकाव्य दे हर सर्ग गी समझनै च एह पाठ विद्यार्थियें लई मदगार साबत होग । ते विद्यार्थी कुसै बी चाल्ली दे सुआलें दे उत्तर देने च समर्थ होडन ।

#### **4.2 पाठ परिचे**

इस पाठ च 'महात्मा विदुर' महाकाव्य दे सभनै सर्गं दे सार दित्ते गेदे न ।

#### **4.3 पाठ-प्रक्रिया**

'महात्मा विदुर' महाकाव्य दे नौं सर्गं दे सारें दा ब्यौरा ।

1. पैहले सर्ग दा सार
2. दुए सर्ग दा सार
3. त्रिये सर्ग दा सार
4. चौथे सर्ग दा सार
5. पञ्चमे सर्ग दा सार
6. छेमे सर्ग दा सार
7. सतमे सर्ग दा सार
8. अष्टमे सर्ग दा सार
9. नौमे सर्ग दा सार

#### 4.3.1 ਪੈਹਲੇ ਸੱਗ ਦਾ ਸਾਰ

ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਗੁਰੂ ਵੰਦਨਾ ਕਨੈ ਕੀਤੀ ਗੇਦੀ ਏ । ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਕਥਾਨਕ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਮਾਂਡਿ ਮੁਨਿ ਥਮਾਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਣਦੀ ਏ । ਮਾਂਡਿ ਮੁਨਿ ਬਚਪਨ ਥਮਾਂ ਗੈ ਬਡੇ ਪਾਂਗੇਬਾਜ਼ ਹੈ । ਜਿ'ਧਾਂ ਇਨ੍ਹੋਂ ਜਗਾਨੀ ਚ ਪੈਰ ਪਾਯਾ ਤਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਗੀ ਆਤਮਜ਼ਾਨ ਹੋਈ ਗੇਅ ਤੇ ਓਹ ਕ ਰਿਸ਼ੀ ਬਨੀ ਗੇ । ਸਾਂਸਾਰੀ ਮੋਹ ਮਾਧਾ ਗੀ ਛੋਡਿਧੈ ਜਾਂਗਲੈ ਚ ਈਸ਼ਵਰ ਭਕਿ ਕਰਨੈ ਲੇਈ ਚਲੀ ਗੇ । ਉਤਥੋਂ ਇਨ੍ਹੇ ਨੈ ਇਕ ਬਡੀ ਗੈ ਅਜੀਵ ਘਟਨਾ ਘਟੀ, ਚੌਰ ਰਾਜੇ ਦਾ ਧਨ ਚੁਰਾਈ ਲੇਈ ਆਏ ਤੇ ਰਾਤੀ ਦੇ ਨਹੈਰੈ ਚ ਇਨ੍ਹੇ ਅਗੈ ਆਨੀ ਸੁਣ੍ਹੇਆ । ਧਨੈ ਦੀ ਪਡਤਾਲ ਪੇਈ ਤਾਂ ਰਾਜੇ ਦੇ ਸੈਨਿਕਾਂ ਮੁਨਿ ਗੀ ਚੌਰ ਸਮਝੀ ਪਕੜੀ ਲੇਤਾ ਤੇ ਰਾਜੇ ਦੇ ਦਰਬਾਰ ਲੇਈ ਗੇ । ਰਾਜੇ ਨੈ ਮੁਨਿ ਗੀ ਫਾਂਸੀ ਦਾ ਹੁਕਮ ਸੁਨਾਈ ਦਿਤਾ । ਮਾਂਡਿ ਮੁਨਿ ਇਸ ਬੇ-ਨਾਈ ਗੀ ਦਿਕਖੀ ਕ੍ਰਾਧਿਤ ਹੋਈ ਜਨਦੇ ਨ ਤੇ ਰਾਜੇ ਗੀ ਸ਼ਾਪ ਦੇਈ ਦਿਨਦੇ ਨ ਜੇ ਤੂਂ ਦਾਸੀ ਪੁਤਰ ਬਨੀ ਜਾਗਾ ।

ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਦੀ ਰਾਨੀ ਸਤਿਵਤੀ ਗੀ ਇਸ ਗਲਲਾ ਦਾ ਬਡਾ ਦੁਖ ਹਾ ਜੇ ਓਹਦੇ ਬੰਸ ਗੀ ਬਧਾਨੇ ਆਹਲਾ ਕੋਈ ਨੋਈ ਏ । ਓਹਦਿਆਂ ਤੈ ਨੂੰ ਵਿਧਵਾ ਹੋਈ ਗੇਦਿਆਂ ਹਿਆਂ ਤੇ ਇਕ ਪੁਤਰ ਮੀਥਮ ਨੇ ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਬਹੁਚਾਰੀ ਰੈਹਨੇ ਦਾ ਪ੍ਰਣ ਪਾਏ ਦਾ ਹਾ । ਅਪਨੀ ਚਿੜਤਾ ਗੀ ਰਾਨੀ ਅਪਨੇ ਪੁਤ੍ਰ ਮੀਥਮ ਕਨੈ ਬਖਾਨਦੀ ਏ । ਚਾਨਚਕ ਉਸੀ ਚੇਤਾ ਆਈ ਜਨਦਾ ਏ ਜੇ ਓਹਦੇ ਪਿਤਾ ਬਡੇ ਧਰਮੀ ਕਰਮੀ ਹੈ, ਜੇਹੜੇ ਰਾਹਗੀਰੋਂ ਗੀ ਕਿਸ਼ਤੀ ਪਰ ਬਠਾਈ ਨਦੀ ਪਾਰ ਕਰਾਂਦੇ ਹੋ । ਇਕ ਬਾਰੀ ਰਿਸ਼ੀ 'ਪਰਾਸ਼ਰ' ਉਸ ਨਦੀ 'ਰ ਆਏ ਹੋ । ਅ'ਊਂ ਉਸ ਕਿਸ਼ਤੀ ਦੀ ਭੇਤੀ ਹੀ ਤੇ ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਨੈ ਸਿਗੀ ਸ਼ਾਰਾ ਕਹਿਯੈ ਆਕਖੇਆ ਜੇ ਤੂਂ ਮੁਨੀਵਰ ਗੀ ਨਦੀ ਪਾਰ ਟਾਪਾਈ ਆ । ਪਰਾਸ਼ਰ ਰਿਸ਼ੀ ਦੇ ਮਨੈ ਚ ਅਪਨੇ ਕੁਲੇ ਗੀ ਅਗੋਂ ਬਧਾਨੇ ਦਾ ਮੋਹ ਹਾ ਇਸ ਕਰੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਅਪਨੀ ਮਾਧਾ ਤੇ ਸ਼ਕਿ ਨੈ ਸਤਿਵਤੀ ਗੀ ਇਕ ਪੁਤਰ ਦਿਤ ਹਾ ਤੇ ਕਨੈਂ ਗੈ ਆਕਖੇਆ ਹਾ ਜੇ ਇਕ ਦਿਨ ਏਹ ਇਕ ਸ਼ਹਾਨ ਰਿਸ਼ੀ ਵੇਦ ਵਾਸ ਬਨਡਗ । ਬਚਪਨ ਚ ਗੈ ਰਿਸ਼ੀ ਵੇਦ ਵਾਸ ਅਪਨੀ ਮਾਝ ਗੀ ਛੋਡਿਧੈ ਜਾਂਗਲੈ ਚ ਤਪਸਥਾ ਕਰਨੈ ਆਸਤੈ ਚਲੀ ਗੇ ਹੋ ।

ਸਤਿਵਤੀ ਗੀ ਇਸ ਦੁਖੈ ਆਹਲੇ ਬਲਲੈ ਪੁਤ੍ਰ, ਵੇਦ ਵਾਸ ਦਾ ਚੇਤਾ ਆਂਦਾ ਏ ਤੇ ਓਹ ਮੀਥਮ ਗੀ ਵੇਦ ਵਾਸ ਗੀ ਤੁਪਨੈ ਲੇਈ ਆਖਦੀ ਏ । ਮਾਂ ਦੇ ਦੁਖੀ ਹੋਨੇ ਦੀ ਗਲ ਸੁਨਿਧੈ ਰਿਸ਼ੀ ਵੇਦਵਾਸ ਝਟਪਟ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਆਈ ਜਨਦੇ ਨ, ਤੇ ਮਾਂ ਗੀ ਕਚਨ ਦਿਨ੍ਹੇ ਨ ਜੇ ਕੁਲੈ ਦੀ ਸੁਕਦੀ ਬੇਲ ਗੀ ਪਰਤਿਧੈ ਹਹਾ-ਮਹਾ ਕਰੀ ਦੇਗੜਨ । ਸਤਿਵਤੀ ਅਪਨੀ ਤੌਨੈ ਨੂੰ ਗੀ ਬਾਰੀ-ਬਾਰੀ ਰਿਸ਼ੀ ਵੇਦ ਵਾਸ ਕੋਲ ਭੇਜਦੀ ਏ । ਪੈਹਲੀ ਨੂੰ ਅਮਿਕਾ ਜਿਸਲੈ ਵੇਦ ਵਾਸ ਦੇ ਵਚਿਤਰ ਰੂਪ ਗੀ ਦਿਕਖਦੀ ਏ ਤਾਂ ਓਹਦੇ ਆਨ੍ਹੇ ਪਰਤ ਮਾਰੀ ਦਿਨ੍ਹੇ ਨ । ਵੇਦ ਵਾਸ ਮਾਂ ਗੀ ਆਕਖਦੇ ਨ ਜੇ ਇਸਦੇ ਘਰ ਹੋਨੇ ਆਹਲਾ ਪੁਤਰ ਅਨਨਾ ਹੋਗ । ਫਹੀ ਮਾਂ ਦੂੰਝ ਨੂੰ ਅਮਾਲਿਕਾ ਗੀ ਭੇਜਦੀ ਏ ਓਹਦਾ ਰਾਂਗ ਵੇਦ-ਵਾਸ ਗੀ ਦਿਕਖਿਧੈ ਪੀਲਾ ਹੀ ਜਨਦਾ ਏ ਤਾਂ ਵੇਦ ਵਾਸ ਮਾਝ ਗੀ ਗਲਾਨ੍ਹੇ ਨ ਜੇ ਇਸਦੇ ਘਰ ਪੁਤਰ ਤੇ ਹੋਗ ਪਰ ਓਹ ਸਦਾ ਗੈ ਕਸਰੀ ਰੋਹਗ । ਫਹੀ ਸਤਿਵਤੀ ਅਪਨੀ ਬੜੀ ਨੂੰ ਗੀ ਵੇਦ-ਵਾਸ ਕੋਲ ਭੇਜਦੀ ਏ ਪਰ

ਬਡੀ ਨੂੰ ਚਲਾਕੀ ਨੈ ਦਾਸੀ ਗੀ ਵੇਦ-ਵਾਸ ਦੇ ਕਕਥ ਚ ਭੇਜੀ ਦਿੱਦੀ ਏ । ਦਾਸੀ ਬਡੇ ਸ਼ਾਨਤ ਸੁਭਾ ਨੈ ਵੇਦ-ਵਾਸ ਦੀ ਸੇਵਾ ਕਰਿਧੈ ਉਸੀ ਖੁਸ਼ ਕਰਦੀ ਏ । ਵੇਦ-ਵਾਸ ਦਾਸੀ ਦੇ ਸ਼ਾਂਤ ਸੁਭਾਓ ਤੇ ਸੁਨਦਰ ਰੂਪ ਗੀ ਦਿਕਿਖਧੈ ਅਪਨੇ ਅਦਭੁਤ ਤੋਜ ਦੀ ਬਰਖਾ ਓਹਦੇ ਘਰ ਕਰਦੇ ਨ ਤੇ ਗਲਾਨਦੇ ਨ ਜੇ ਤੇਰੇ ਘਰ ਹੋਨੇ ਆਹਲਾ ਪੁਤਰ ਇਕ ਮਹਾਨ ਆਤਮਾ ਹੋਗ । ਇਸ ਚਾਲੀ ਅੰਭਿਕਾ ਦੇ ਘਰ ਅੰਨ੍ਹੇ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ, ਅੰਮਾਲਿਕਾ ਦੇ ਘਰ ਕਸਰੀ ਪਾਂਡੂ ਰਾਜ ਤੇ ਦਾਸੀ ਦੇ ਘਰ ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ ਦਾ ਜਨਮ ਹੋਨਦਾ ਏ ।

#### **4.3.2 ਦੁਏ ਸੰਗ ਦਾ ਸਾਰ**

ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਨਗਰ ਇਕ ਬਾਰੀ ਫ਼ਹੀ ਰਸ਼ਾਈ-ਬਸ਼ਾਈ ਜਾਂਦਾ ਏ ਜਿਸਲੈ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਦੀ ਰਾਨਿਯੋਂ ਤੇ ਦਾਸੀ ਘਰ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ, ਪਾਂਡੂਰਾਜ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਪੈਦਾ ਹੋਏ । ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਦਾ ਵਾਤਾਵਰਣ ਇਕਦਮ ਬਦਲੀ ਜਨਦਾ ਏ । ਚਵਕਖੈ ਖੁਸ਼ਿਆਂ ਛਾਈ ਜਨਿਆਂ ਨ । ਅੰਭਿਕਾ ਅਪਨੇ ਅੰਨ੍ਹੇ ਪੁੱਤਰੇ ਗੀ ਦਿਕਖੀ ਮਨੋਮਨ ਪਛਤਾਂਦੀ ਏ ਪਰ ਇਸੀ ਅਪਨੀ ਕਿਸਮਤ ਦਾ ਫੇਰ ਸਮਝੀ ਉਸੀ ਝਣ੍ਹ ਗਲੈ ਨੈ ਲਾਈ ਲੈਂਦੀ ਏ । ਦੂਝੀ ਰਾਨੀ ਅੰਮਾਲਿਕਾ ਅਪਨੇ ਪੀਲੇ-ਮੁਸ਼ੇ ਪੁੱਤਰੇ ਗੀ ਦਿਕਖੀ ਬਡੀ ਦੁਖੀ ਹੋਨਦੀ ਏ । ਓਹ ਬਡੀ ਗੈ ਭੋਲੀ-ਮਾਲੀ ਏ । ਅਪਨੀ ਕਿਸਮਤ ਗੀ ਕੋਸਦੀ ਏ । ਪਰ ਤੌਲੈ ਗੈ ਓਹਦੇ ਮਨੈ ਚ ਭਰੋਚੀ ਦੀ ਮਮਤਾ ਫੁਝੀ ਪੌਨਦੀ ਏ ਤੇ ਓਹ ਅਪਨੇ ਬਮਾਰ ਤੇ ਪੀਲੇ-ਮੁਸ਼ੇ ਗਿਲਲੇ ਗੀ ਛਾਤੀ ਨੈ ਲਾਇਧੈ ਪੂਰਾ ਧਾਰ ਦਿੱਦੀ ਏ ।

ਦਾਸੀ ਪੁੱਤਰ ਵਿਦੁਰ ਸਭਾਓ ਦਾ ਬਡਾ ਚੰਚਲ ਹਾ । ਓਹ ਸਭਨੀ ਦਾ ਬਡਾ ਲਾਡਲਾ ਹਾ, ਸਬੈ ਉਸੀ ਬਡਾ ਧਾਰ ਕਰਦੇ ਹੋ । ਦਾਦੀ ਸਤਿਆਵਤੀ ਦਾ ਓਹ ਸਭਨੇ ਸਾ ਲਾਡਲਾ ਪੋਤ੍ਰੁ ਹਾ, ਓਹ ਉਸੀ ਬਡਾ ਧਾਰ ਕਰਦੀ ਹੀ । ਮੀਘ ਤਾਊ ਬੀ ਯਾਨੇ ਵਿਦੁਰ ਨੈ ਯਾਨਾ ਬਨੀ ਜਨਦੇ ਹੋ ਤੇ ਓਹਦੈ ਨੈ ਖੇਡਦੇ ਤੇ ਸ਼ਾਰਾਰਤੀਂ ਕਰਦੇ ਹੋ । ਵਿਦੁਰ ਚ ਸ਼ਾਰਾਰਾਤੀਪਨ ਹੋਨੇ ਦੇ ਕਨੈ-ਕਨੈ ਗੰਭੀਰਤਾ ਤੇ ਸਵੇਦਨਾ ਬੀ ਹੀ ਓਹ ਅਪਨੇ ਅੰਨ੍ਹੇ ਭਾਓ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ ਤੇ ਬਮਾਰ ਰੋਹਨੈ ਆਹਲੇ ਭਾਓ ਪਾਂਡੂ ਦੀ ਜਰੂਰਤ ਪੈਨੇ 'ਰ ਪੂਰੀ-ਪੂਰੀ ਮਦਦ ਕਰਦਾ ਹਾ । ਇਸ ਚਾਲੀ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ, ਪਾਂਡੂ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾ-ਦੀਕਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ ਜਨਦੀ ਏ ਤੇ ਉਨੋਂਗੀ ਚੰਗਾ ਜ਼ਾਨ ਹਾਸਲ ਕਰਨੈ ਲੇਈ ਗੁਰੂਕੁਲ ਭੇਜੀ ਦਿੱਤਾ ਜਨਦਾ ਏ । ਦੁਏ ਸੰਗ ਚ ਤੈਵੈ ਭਾਓ ਗੁਰੂਕੁਲ ਸ਼ਿਕਾ ਗ੍ਰਹਣ ਕਰਨ ਜਨਦੇ ਨ ।

#### **4.3.3 ਤ੍ਰਿਧੇ ਸੰਗ ਦਾ ਸਾਰ**

ਇਸ ਸੰਗ ਚ ਗੁਰੂਕੁਲ ਦੀ ਮਰਧਾ ਦੇ ਮਤਾਬਕ ਤ੍ਰੀਨੀ ਭਾਏਂ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ ਜਨਦੀ ਏ । ਗੁਰੂ ਰੋਜ ਅਪਨੇ ਆਸਨ 'ਰ ਬੇਹਿਧੈ ਅਪਨੇ ਸ਼ਿ਷ਿਆਂ ਗੀ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੱਦੇ ਨ । ਗੁਰੂ ਅਪਨੇ ਸ਼ਿ਷ਿਆਂ ਗੀ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੱਦੇ ਹੋਈ ਕਰਮ ਦਾ ਮਹਤਵ ਦਰਸਦੇ ਨ । ਸ਼ਿ਷ਿਆਂ ਗੀ ਆਕਖਦੇ ਨ ਜੇ ਤੁਸ ਕਰਮਯੋਗੀ ਬਨੋ ਤੇ ਸੰਸਾਰ ਚ ਧਾਰ ਕਮਾਓ । ਗੁਰੂਕੁਲ ਚ ਮੈਹਲੋਂ ਥਮਾਂ ਆਏ ਦੇ ਰਾਜਕੁਮਾਰ ਤੇ ਝੁਗਿਗਿਆਂ ਥਮਾਂ ਆਏ ਦੇ ਗਰੀਬ

ਜਾਗਤ ਬੀ ਹੈ । ਪਰ ਸ਼ਿਕਸਾ ਦੇ ਉਸ ਮਨਦਰ ਚ ਕੋਈ ਉਚਚ-ਨੀਚ ਦੀ ਗਲਲ ਨੇਈ ਕਰਦਾ ਹਾ । ਉਥੋਂ ਸਬੈ ਇਕਕੈ ਬਾਰਾਵਰ ਹੈ । ਧੂਤ, ਪਾਂਡੂ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਚਾ ਵਿਦੁਰ ਸਭਨੇ ਥਮਾਂ ਸ਼ਧਾਨਾ ਤੇ ਸੇਹਤਮਂਦ ਹਾ । ਇਸ ਕਰੀ ਵਿਦੁਰ ਨੈ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦਾ ਮਨ ਜੀਤੀ ਲੈਤੇ ਦਾ ਹਾ, ਤੇ ਉਨ੍ਦੇ ਮਨੈ ਚ ਖਾਸਾ ਥਾਹਰ ਹਾ ਵਿਦੁਰ ਲੇਈ । ਵਿਦੁਰ ਮਹੇਸ਼ਾ ਅਪਨੇ ਮਨੈ ਦੀ ਅਗਾਜ ਸੁਨਦਾ ਤੇ ਓਹਦੀ ਸ਼ਵੇਦਨਾ ਤੇ ਪਰੋਪਕਾਰ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਉਸੀ ਮਹੇਸ਼ਾ ਦੁਖਿਧਿੰਦੀ ਸੇਵਾ ਲੇਈ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਕਰਦੀ ਹੀ । ਗੁਰੂਕੁਲ ਚ ਇਨ੍ਦੀ ਪਢਾਈ ਪੂਰੀ ਹੋਈ ਜਨਦੀ ਏ ਇਸ ਲੇਈ ਆਹ ਮੈਹਲੇਂ ਚ ਜਾਨੇ ਲੇਈ ਬਡੇ ਉਤਸਾਹਿਤ ਹੈ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਏਹ ਪਤਾ ਨੇਈ ਹਾ ਜੇ ਕਦੂਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਈ ਲੈਨੇ ਗਿਤੈ ਔਗ ਤੇ ਕਦੂ'ਓਹ ਘਲ ਪੁਜ਼ਡਨ ।

ਆਖਰ ਉਨ੍ਦੇ ਤਾਊ ਭੀ਷ਮ ਉਨ੍ਹਾਂ ਲੈਨ ਆਈ ਜਨਦੇ ਨ । ਤ੍ਰੌਨੇ ਭਾਏਂ ਗੀ ਜਿਤਥੇ ਘਰ ਜਾਨੇ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਹੀ ਉਥੋਂ ਗੈ ਗੁਰੂਕੁਲ ਛੋਡਨੇ ਦਾ ਦੁਖ ਬੀ ਹਾ । ਤੇ ਆਖਰ ਗੁਰੂ ਜੀ ਅਪਨੇ ਭਾਵੇਂ ਗੀ ਦਬਾਇਥੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਦਾ ਕਰਦੇ ਨ ।

ਇਸ ਸਾਗ ਚ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ, ਪਾਂਡੂ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਗੁਰੂਕੁਲ ਚ ਸ਼ਿਕਸਾ ਗ੍ਰਹਣ ਕਰਨਾ ਤੇ ਉਨਦਾ ਮੈਹਲੈ ਵਾਪਸ ਪਰਤੋਨੇ ਦਾ ਵ੍ਰਤਾਨਤ ਏ ।

#### 4.3.4 ਚੌਥੇ ਸਾਗੰ ਦਾ ਸਾਰ

ਇਸ ਸਾਗ ਚ ਧੂਤ ਪਾਂਡੂ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਅਪਨੀ ਸ਼ਿਕਸਾ ਪੂਰੀ ਕਰਿਯੈ ਗੁਰੂਕੁਲ ਥਮਾਂ ਘਰ ਪਰਤੋਈ ਆਂਦੇ ਨ । ਤ੍ਰੌਨੇਂ ਅਪਨੀ ਮਾਤਾਏਂ ਤੇ ਦਾਦੀ ਗੀ ਚਰਣ ਵਨਦਨਾ ਕੀਤੀ ਤੇ ਹਿਰਖ ਭਰਾਚੇ ਹਤਥ ਉਨ੍ਦੇ ਸਿਰ ਫੇਰਿਧੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਛਾਤੀ ਲਾਈ ਲੇਅਾ । ਦਾਦੀ ਸਤਿਆਵਤੀ ਦੀ ਇਚਛਾ ਹੋਈ ਜੇ ਤ੍ਰੈਵੇ ਅਪਨੀ ਪਢਾਈ ਪੂਰੀ ਕਰੀ ਬੈਠੇ ਨ ਤੇ ਹੁਨ ਇਨ੍ਦੇਂ ਬਾਹ ਕਰੀ ਦੇਨੇ ਚਾਹਿਦੇ । ਤ੍ਰੌਨੀ ਆਸਤੈ ਉਚਿਤ ਕੁਡਿਧਿੰਦੀ ਦੀ ਤੋਪ ਪੇਈ ਗੇਈ । ਬੜੇ ਭਾਡ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ ਬਾਹ ਗਂਧਾਰੀ ਕਨ੍ਹੈ ਹੋਆ ਆਹ ਸ਼ਿਵੇਂ ਦੀ ਬਡੀ ਭਕਤਨ ਹੈ । ਪਾਂਡੂ ਰਾਜ ਦਾ ਬਾਹ ਰਾਜਾ ਸੂਰਸੇਨ ਦੀ ਕੁਡੀ ਕਨ੍ਹੈ ਹੋਆ । ਰਾਜਕੁਮਾਰੀ ਦਾ ਨਾਂ ਕੁਨਤੀ ਹਾ ਤੇ ਆਹ ਦੁਵਾਸਾ ਰਿਸ਼ੀ ਦੀ ਬਡੀ ਭਗਤਨ ਹੈ । ਪਾਂਡੂ ਰਾਜ ਨੈ ਮਦਰ ਦੇਸ ਦੇ ਨਰੇਸ਼ ਦੀ ਕਨਿਆ ਮਾਦਰੀ ਕਨ੍ਹੈ ਇਕ ਹੋਰ ਬਾਹ ਕੀਤੇ ਦਾ ਹਾ । ਧੂਤ ਤੇ ਪਾਂਡੂ ਰਾਜ ਦੇ ਵਾਦ ਫਹੀ ਵਿਦੁਰ ਦੇ ਬਾਹ ਦੀ ਬਾਹੀ ਹੀ । ਇਸ ਕਰੀ ਵਿਦੁਰ ਲੇਈ ਉਚਿਤ ਕਨਿਆ ਦੀ ਤਪਾਸ਼ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ ਗੇਈ । ਭੀ਷ਮ ਹੁਨ੍ਦੀ ਨਜਰੀ ਚ ਇਕ ਬਡੀ ਸ਼ੈਲ ਤੇ ਸੁਸ਼ੀਲ ਕਨਿਆ ਤੇ ਏ ਹੀ ਪਰ ਇਕਕੈ ਗਲੇ ਦੀ ਤੁਟੀ ਹੀ ਜੇ ਕਨਿਆ ਇਕ ਸ਼ੁਦਰ ਨਾਰੀ ਦੀ ਧੀਅ ਹੀ । ਉਸਦਾ ਨਾਂ ਹਾ ਦੇਵਕੀ ।

ਦੇਵਕੀ ਗੀ ਦਿਕਖਨੈ ਆਸਤੈ ਭੀ਷ਮ ਵਿਦੁਰ ਗੀ ਲੇਈ ਜਨਦੇ ਨ । ਵਿਦੁਰ ਬਡਾ ਸੱਸਕਾਰੀ ਤੇ ਜ਼ਾਨਵਾਨ ਹਾ, ਆਹ ਗਲਾਂਦਾ ਏ ਜੇ ਕੋਈ ਬੀ ਉਚਚ-ਨੀਚ ਵਰਾਸਤ ਚ ਨੇਈ ਥਹੋਂਦੀ ਏਹ ਤੇ ਕਰਮੈ ਅਨੁਸਾਰ ਮਿਲਦੀ ਏ । ਇਕ ਨੀਚ ਕੁਲੈ ਚ ਜਨਮੇ ਦਾ ਮਾਹਨੂ ਅਪਨੈ ਕਰਮੈਂ ਕਰੀ ਤੇ ਚੰਗੈ ਸੋਚ-ਵਿਚਾਰੇਂ ਨੈ ਉਚਚਾ ਹੋਈ ਸਕਦਾ ਏ । ਇਸ ਚਾਲੀ ਵਿਦੁਰ ਦੇਵਕੀ ਗੀ ਸ਼ੀਕਾਰ ਕਰੀ ਲੈਨਦਾ ਏ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਦੇ

व्याह दियां त्यारियां शुरू होई जन्दियां न । सत्यवती अपने पूरे परिवार समेत जान्नी लेझयै विदुर गी देवकी नै व्याहने लई जन्दी ऐ ।

ਇਸ ਚਾਲੀ ਵਿਦੁਰ ਦਾ ਬਾਹ ਦੇਵਕੀ ਕਨੈ ਹੋਈ ਜੰਦਾ ਏ ।

#### 4.3.5 ਪੜਮੋਂ ਸਗੋਂ ਦਾ ਸਾਰ

ਇਸ ਸੰਗ ਚ ਤੈਵੈ ਭਾਏਂ ਦੇ ਘੁੱਸ਼ਟ-ਜੀਵਨ ਦਾ ਵਰਣਨ ਕੀਤਾ ਗੇਦਾ ਹੈ । ਦਾਦੀ ਸਤਿਆਵਤੀ ਦੇ ਮਨਾ ਚ ਏਹ ਚਿਤਾ ਲਗਗੀ ਦੀ ਹੀ ਜੇ ਰਾਜ-ਪਾਠ ਹੂਨ ਕੁਸਦੇ ਹਥ ਸੌਂਪੇਅਾ ਜਾ । ਰਾਜ-ਘਰਾਨੇ ਦੀ ਮਰਧਾ ਦੇ ਮਤਾਬਕ ਰਾਜ-ਪਾਠ ਮਹੇਸ਼ਾਂ ਬਡੇ ਪੁਤਰਾ ਗੀ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ । ਪਰ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ ਦੇ ਅੰਨ੍ਹੇ ਹੋਨੇ ਕਰੀ ਸਤਿਆਵਤੀ ਤੇ ਭੀਖਿਮ ਨੇ ਏਹ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਜੇ ਪਾਂਡੂ ਰਾਜ ਗੀ ਹਉਣਾਪੁਰ ਦਾ ਰਾਜਾ ਬਨਾਯਾ ਜਾ । ਸਤਿਆਵਤੀ ਤੇ ਭੀਖਿਮ ਵਿਦੁਰ ਦੀ ਕੌਸ਼ਲਤਾ ਗੀ ਜਾਨਦੇ ਹੋ ਇਸ ਕਰੀ ਵਿਦੁਰ ਗੀ ਬਜੀਰ ਦਾ ਓਹਵਾ ਦੇਨੇ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕੀਤਾ ਗੇਅਾ ।

ਇਕ ਬਾਰੀ ਪਾਂਡੂ ਕੁਤੈ ਜਾਂਗਲ ਚ ਸ਼ਕਾਰ ਪਰ ਗੇਦਾ ਹੋਂਦਾ ਏ ਤਾਂ ਉਥੋਂ ਹਿਰਣ ਤੇ ਹਿਰਣੀ ਕਾਸ ਲੀਲਾ ਚ ਰੁਜ਼ੇ ਦੇ ਹੈ, ਪਾਂਡੂ ਹਿਰਣ ਉਪਰ ਵਾਣ ਚਲਾਂਦਾ ਏ, ਓਹ ਹਿਰਣ ਨੇਈ ਆਪੂ ਕਿਨਦਮ ਸੁਨਿ ਹੈ ਜੇਹਡੇ ਪਾਂਡੂ ਗੀ ਸ਼ਰਾਪ ਦਿੰਦੇ ਨ ਜੇ ਤੂਂ ਜਦੂਂ ਬੀ ਅਪਨੀ ਸ਼੍ਰੀ ਦਾ ਸੰਪਰਾ ਕਰਗਾ ਤਾਂ ਤੂਂ ਉਸਲੈ ਗੈ ਨਿਟ ਹੋਈ ਜਾਗਾ। ਪਾਂਡੂ ਇਸ ਸ਼ਰਾਪ ਕੋਲਾ ਬੜਾ ਦੁਖੀ ਹੋਂਦਾ ਏ ਤੇ ਅਪਨੀ ਦੁਖੀ ਵਧਾ ਗੀ ਕੁਨ੍ਤੀ ਅਗੋਂ ਪ੍ਰਕਟ ਕਰਦਾ ਏ ਤੇ ਗਲਾਂਦਾ ਏ ਜੇ ਸਾਢਾ ਕੁਲ ਹੂਨ ਕਿਧਾਂ ਅਗੇ ਬਧਗ। ਕੁਨ੍ਤੀ ਉਸੀ ਸਾਹਰਾ ਦਿੰਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਂਦੀ ਏ ਜੇ ਦੁਰਵਾਸਾ ਰਿਸ਼ੀ ਆਸੇਆ ਦਿਤੇ ਦਾ ਮਨ੍ਤ੍ਰ ਜ਼ਰੂਰ ਕੋਈ ਚਮਤਕਾਰ ਕਰਗ। ਮੰਤ੍ਰ ਕਾਰਣ ਕੁਂਤੀ ਦੇ ਘਰ ਪੱਜ ਤੇ ਵੇਦਵਾਂਧ ਦੀ ਸ਼ਕਤਿ ਕਾਰਣ ਗੰਧਾਰੀ ਦੇ ਘਰ 100 ਪੁਤਰ ਪੈਦਾ ਹੋਂਦੇ ਨ।

ਪਾਂਡੂ ਰਾਜ ਇਕ ਬਾਰੀ ਮਾਦਰੀ ਕਨੈ ਜਾਂਗਲੈ ਚ ਭ੍ਰਮਣ ਕਰਨੇ ਗੀ ਜਂਦਾ ਏ । ਜਾਂਗਲੈ ਦੇ ਵਾਤਾਵਰਣ ਚ ਓਹ ਅਪਨੇ ਸ਼ਯਮ ਗੁਆਈ ਦਿੰਦਾ ਏ ਤੇ ਮਾਦਰੀ ਦਾ ਸ਼੍ਰਧਾ ਕਰਨੇ ਦੀ ਕੋਥਾਸ਼ ਕਰਦਾ ਏ, ਮਾਦਰੀ ਦੇ ਮਨਾ ਕਰਨੇ ਪਰ ਬੀ ਓਹ ਨੈਈ ਰੁਕਦਾ ਏ ਤੇ ਅਪਨਾ ਜਾਨ ਗੁਆਈ ਬੌਂਹਦਾ ਏ । ਧੂਤਰਾ਷ਟ ਗੀ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਦਾ ਰਾਜਾ ਬਨਾਈ ਦਿੱਤਾ ਜਂਦਾ ਏ ।

ਦੁਰ్ਯੋਧਨ ਨੇ ਪਾਂਡਵਾਂ ਗੀ ਨੁਕਸਾਨ ਪੁਜਾਨੇ ਦਿਯਾਂ ਮਤਿਆਂ ਕੋਥਾਂ ਕੀਤਿਆਂ ਪਰ ਓਹ ਕਾਮਜਾਬ ਨੇਈ ਹੋਆ । ਕਾਰ੍ਯਾਂ ਤੇ ਪਾਂਡਵਾਂ ਚ ਬਲ ਅਜਮਾਈ ਆਸਟੈ ਅਖਾਡੇ ਦਾ ਅਧੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗੇਆ ਹਾ, ਜਿਥੋਂ ਅੰਜੁਨ ਸਭਨੋਂ ਥਮਾਂ ਤੇਜ, ਧਨੁ-ਧਰ ਬਨਿਯੈ ਸਾਮਨੈ ਆਯਾ । ਕੌਰਵ ਸ ਗਲਲ ਗੀ ਦਿਕਿਖਾਇ ਜਲੀ-ਮੁਜੀ ਗੇ, ਪਰ ਕਾਰ੍ਯਾਂ ਦੀ ਕਥੀ ਦਾ ਕਰਣ ਨੇ ਅੰਜੁਨ ਕਨ੍ਹੈ ਮਕਾਬਲਾ ਕਰਨੇ ਦੀ ਚਨੌਤੀ ਦਿੱਤੀ ਹੀ । ਇਸ ਚਾਲਲੀ ਕਰਣ ਤੇ ਅੰਜੁਨ ਚ ਮਕਾਬਲਾ ਹੋਆ । ਇਹ ਦੂਧਾ ਦਿਕਿਖਾਇ ਕੁਨ੍ਠੀ ਬੇ-ਹੋਸ਼ ਹੋਈ ਜਾਂਦੀ ਏ । ਕੀ ਜੇ ਕਰਣ ਬੀ ਕੁਨ੍ਠੀ ਗੀ ਸੂਰਜ ਦੇਵ ਆਸੇਆ ਦਿੱਤੀ ਦੀ ਓਹਦੀ ਲਾਵਾਦ ਹੀ ।

#### 4.3.6 ਛੇਮੋਂ ਸਾਰੀ ਦਾ ਸਾਰ

'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਛੇਮੋਂ ਸਾਰੀ ਚ ਵਿਦੁਰ ਤੇ ਦੇਵਕੀ ਚ ਹੋਈ ਦੀ ਗਲ਼ਬਾਤ ਦਾ ਵਰਣਨ ਏ। ਵਿਦੁਰ ਕ੃ਣ ਭਾਗਵਾਨ ਦੀ ਪੂਰੀ ਕਹਾਨੀ ਦੇਵਕੀ ਗੀ ਸੁਨਾਂਦੇ ਨ। ਮਥੁਰਾ ਦੇ ਰਾਜਾ ਉਗਰਸੇਨ ਦੇ ਘਰ ਕਂਸ ਨਾਂ ਦਾ ਜਾਗਤ ਹੋਆ। ਪਤੇ ਭਵਿਕਖਵਾਣੀ ਕੀਤੀ ਏਹਦੀ ਮੈਤ ਏਹਦੇ ਭਨੇਏ ਦੇ ਹਤਥੋਂ ਹੋਨੀ ਏ। ਇਸ ਲੇਈ ਕਂਸ ਇਸ ਗਲਲੈ ਥਮਾਂ ਢਰੀ ਤੇ ਉਸਨੇ ਏਹ ਪ੍ਰਣ ਪਾਈ ਲੈਤਾ ਜੇ ਅਪਨੀ ਭੈਨੂ ਦਾ ਇਕ ਬੀ ਜਾਗਤ ਜਿਨ੍ਦਾ ਨੇਈ ਰੌਹਨ ਦੇਗ। ਕਂਸ ਨੈ ਅਪਨੀ ਭੈਨ ਦੇਵਕੀ ਤੇ ਅਪਨੇ ਭਨੋਏ ਵਾਸੁਦੇਵ ਗੀ ਜੇਲੈ ਬਨਦ ਕਰੀ ਦਿੱਤਾ। ਉਨ੍ਦੇ ਜਿਨ੍ਹੇ ਜ੍ਯਾਨੇ ਹੋਨਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂਗੀ ਮਾਰਦਾ ਜਨਦਾ ਹਾ। ਪਰ ਹੋਨੀ ਗੀ ਕਾਈ ਨੇਈ ਟਾਲੀ ਸਕਦਾ। ਭਗਵਾਨ ਕ੃ਣ ਨੈ ਉਸੀ ਮਾਰਨੈ ਲੇਈ ਆਪੂ ਕਂਸ ਦੀ ਭੈਨ ਦੇਵਕੀ ਦੇ ਘਰ ਜਨਮ ਲੈਤਾ। ਕ੃ਣ ਦਾ ਜਰਮ ਹੋਨਦੇ ਗੈ ਵਾਸੁਦੇਵ ਗੀ ਆਕਾਸ਼ਵਾਣੀ ਹੋਈ ਜੇ ਓਹ ਜ੍ਯਾਨੇ ਗੀ ਚੁਕਿਧੈ ਵੁੰਦਾਵਨ ਨਂਦ ਦੇ ਘਰ ਛੋਡੀ ਔਨ ਤੇ ਜਸ਼ੋਦਾ ਦੇ ਗਰੰਥ ਚ ਪੈਦਾ ਹੋਈ ਦੀ ਕੁਝੀ ਲੇਈ ਔਨ। ਵਾਸੁਦੇਵ ਕ੃ਣ ਗੀ ਟੋਕਰੀ ਚ ਪਾਇਧੈ ਨਂਦ ਦੇ ਘਰ ਗੋਕੁਲ ਛੋਡੀ ਆਂਦੇ ਨ ਤੇ ਜਸ਼ੋਦਾ ਦੀ ਧੀ। ਗੀ ਮਥੁਰਾ ਲੇਈ ਆਂਦੇ ਨ। ਕਂਸ ਗੀ ਜਿਸਲੈ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਏ ਜੇ ਦੇਵਕੀ ਨੈ ਜ੍ਯਾਨੇ ਗੀ ਜਨਮ ਦਿੱਤਾ ਏ ਤਾਂ ਓਹ ਉਸੀ ਮਾਰਨੈ ਲੇਈ ਜੇਲਖਾਨੈ ਪੁਜ਼ੀ ਜਨਦਾ ਏ ਤੇ ਉਸ ਕਨਾ ਗੀ ਦੇਵਕੀ ਸ਼ਾ ਖੁਸਿਧੈ ਪਤਥਰੈ ਰ ਪਟਕਦਾ ਏ। ਓਹ ਕਂਜਕ ਦੇਵੀ ਰੂਪ ਹੀ ਜੇਹਡੀ ਓਹਦੇ ਹਤਥੈ ਚ ਨਿਕਲਿਯੈ ਸਮਾਨੈ ਰ ਮੀਲਕ ਬਨਿਧੈ ਚਮਕਦੀ ਏ ਤੇ ਆਕਾਸ਼ਵਾਣੀ ਕਰਦੀ ਏ ਜੇ ਤੁਹਾਂ ਮਾਰਨੈ ਆਹਲਾ ਜਸ਼ੋਦਾ ਦੇ ਘਰ ਪਲਾ ਕਰਦਾ ਏ। ਓਹ ਕ੃ਣ ਗੀ ਮਾਰਨੇ ਦੀ ਪੂਰੀ ਕੋਥਿਸ਼ ਕਰਦਾ ਏ ਤੇ ਅਪਨੀ ਰਾਕਖਾਨੀ ਪੁਤਨਾ ਗੀ ਗੋਕਲ ਭੇਜਦਾ ਏ। ਕ੃ਣ ਦੇ ਪ੍ਰਾਣ ਲੈਨ ਆਈ ਦੀ ਪੂਤਨਾ ਦੇ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਾਣ ਨਿਕਲੀ ਜਨਦੇ ਨ। ਕ੃ਣ ਦੁੜ੍ਹੈ ਰਾਹੋਂ ਪੂਤਨਾ ਦੀ ਸ਼ਕਤਿ ਦਾ ਏਹਸਾਸ ਹੋਨਦਾ ਏ। ਫਹੀ ਓਹ ਅਪਨੇ ਦੌਂ ਰਾਕਸ਼ਾਂ ਗੀ ਕ੃ਣ ਗੀ ਮਾਰਨੈ ਲੇਈ ਭੇਜਦਾ ਏ ਪਰ ਓਹ ਬੀ ਕ੃ਣ ਦੀ ਸ਼ਕਤਿ ਅਗੈ ਬੇਵਸ ਹੋਇਧੈ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਾਣੇ ਥਮਾਂ ਹਤਥ ਧੋਈ ਦਿੱਨਦੇ ਨ।

ਕਂਸ ਕ੃ਣ ਗੀ ਮਾਰਨੈ ਲੇਈ ਨਿਤ ਨਮਿਆਂ ਧੋਜਨਾ ਬਨਾਂਦਾ ਏ। ਇਕ ਬਾਰੀ ਓਹ ਅਪਨੇ ਇਕ ਦੂਤ ਗੀ ਗੋਕਲ ਭੇਜਦਾ ਏ ਤੇ ਕ੃ਣ ਗੀ ਮਾਰਨੈ ਲੇਈ ਨਿਤ ਨਮਿਆਂ ਧੋਜਨਾ ਬਨਾਂਦਾ ਏ। ਇਕ ਬਾਰੀ ਓਹ ਅਪਨੇ ਇਕ ਦੂਤ ਗੀ ਗੋਕਲ ਭੇਜਦਾ ਏ ਤੇ ਕ੃ਣ ਤੇ ਬਲਰਾਮ ਗੀ ਨਿਧੀ ਭੇਜਦਾ ਏ ਜੇ ਮੈਂ ਇਕ ਅਖਾਡੇ ਦਾ ਆਧੋਜਨ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ਤੇ ਸਾਰੋਂ ਗੀ ਉਥੋਂ ਅਪਨੀ—ਅਪਨੀ ਜੋਰ—ਅਜਮਾਈ ਲੇਈ ਸਾਫ਼ਾ ਦਿੱਤੇ ਦਾ ਏ। ਕ੃ਣ ਤੇ ਬਲਰਾਮ ਮਾਝ—ਬਬੈ ਦਾ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਲੇਇਧੈ ਮਥੁਰਾ ਜਾਨੇ ਦੀ ਤਾਰੀ ਕਰਦੇ ਨ। ਮਥੁਰਾ ਪੁਜਿਧੈ ਕ੃ਣ ਪੈਹਲੋਂ ਰਾਕਸ਼ਾਂ ਦਾ ਸਫਾਯਾ ਕਰਦੇ ਨ ਤੇ ਫਹੀ ਕਂਸ ਗੀ ਮਾਰੀ ਸੁਕਾਨਦੇ ਨ ਤੇ ਫਹੀ ਅਪਨੇ ਪਿਤਾ ਵਾਸੁਦੇਵ ਤੇ ਮਾਂ ਦੇਵਕੀ ਗੀ ਜੇਲ ਦਾ ਕਵਿਧੈ ਅਪਨੇ ਨਾਨਾ ਉਗਰਸੇਨ ਗੀ ਮਥੁਰਾ ਦਾ ਰਾਜਪਾਠ ਸੌਂਪੀ ਦਿੱਨਦੇ ਨ।

#### 4.3.7 ਸਤਮੋਂ ਸਾਰੋਂ ਦਾ ਸਾਰ

ਦੇਵਕੀ, ਵਿਦੁਰ ਸ਼ਾ ਜਿਸਲੈ ਕ੃ਣ ਭਗਵਾਨ ਦਾ ਗੁਣਗਾਨ ਸੁਨਦੀ ਏ ਤਾਂ ਮਨੋਮਨ ਸੋਚਨ ਲਗਦੀ ਏ ਜੇ ਸਾਡੇ ਭਾਗੋਂ ਚ ਬੀ ਕਦੋਂ ਕ੃ਣ ਸੁਰਾਰੀ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਲਿਖੇ ਦੇ ਹੋਗਨ। ਦੇਵਕੀ ਸੋਚਦੀ ਏ ਜੇ ਕਦੋਂ ਨਰ-ਨਰਾਧਾਰ ਦਾ ਮੇਲ ਹੋਈ ਗੇਆ ਤਾਂ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਦੇ ਸਾਰੇ ਦੁਖ ਕਲੇਸ਼ ਮਿਟ੍ਟੀ ਜਾਡਨ। ਕੌਰਵੋਂ ਜਿਸਲੇ ਪਾਂਡਵਾਂ ਗੀ ਖਤਮ ਕਰਨੇ ਦੀ ਇਕ ਨਮੀ ਚਾਲ ਸੋਚੀ ਤਾਂ ਵਿਦੁਰ ਦੀ ਕੁਝਲ ਵੁਦ਼ਿ ਤੁਂਦੀ ਇਸ ਕੂਟ ਨੀਤੀ ਗੀ ਸਮਝੀ ਗੇਈ ਹੀ। ਇਸ ਲੋਈ ਤੱਤੋਂ ਯੁਧਿ਷਼ਟਿਰ ਕਨੈ ਇਸ ਸਾਰੇ ਮੇਦ ਗੀ ਖੋਲ੍ਹੀ ਦਿੱਤਾ ਤੇ ਉਨੋਂਗੀ ਚੌਕਨੇ ਰੈਹਨੇ ਤਾਈ ਆਕਥੇਆ। ਕੌਰਵੋਂ ਸੋਚੇ ਦਾ ਹਾ ਜੇ ਜਿਸਲੈ ਪਾਂਡੂ ਜਾਂਗਲ ਜਾਈ ਤਥੋਂ ਵਾਰਾਣਵਤ ਉਤਸਵ ਮਨਾਗਨ ਤਾਂ ਲਕਡੀ ਦੇ ਬਨੇ ਦੇ ਮੈਹਲੋਂ ਚ ਤਾਂਨੋਂਗੀ ਫੂਕੀ ਦਿੱਤਾ ਜਾਗ। ਵਿਦੁਰ ਨੈ ਯੁਧਿ਷਼ਟਿਰ ਗੀ ਸਾਰੀ ਗਲਲ ਸਮਝਾਈ ਦਿੱਤੀ ਹੀ। ਜਦੂਂ ਪਾਂਡਵ ਜਾਂਗਲੈ ਚ ਜਾਈ ਤਥੀ ਲਕਡੀ ਦੇ ਮੈਹਲ ਚ ਰੌਹਦੇ ਨ ਤਾਂ ਵਿਦੁਰ ਦੇ ਗੁਪਤਚਰ ਮੈਹਲੋਂ ਦੇ ਅਨਦਰੋ-ਅਨਦਰ ਇਕ ਸੁਰਾਂਗ ਕਛੂੰ ਦਿੱਤੇ ਨ ਤਾਂ ਜੇ ਮੈਹਲੈ ਚ ਗਗ ਲਗਨੈ ਛ ਪਾਂਡਵ ਇਸ ਸੁਰਾਂਗ ਰਾਹੋਂ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲੀ ਸਕਨ। ਸਾਰੇ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਵਾਸਿਯੋਂ ਤੇ ਕੌਰਵੋਂ ਏਹ ਸੋਚੀ ਲੈਤਾ ਜੇ ਪਾਂਡਵ ਮੈਹਲੋਂ ਅਨਦਰ ਫਕੋਈ ਗੇ ਨ। ਕੌਰਵ ਬੀ ਲੋਕਾਚਾਰੀ ਅਪਨਾ ਦੁਖ ਦਸ਼ਨ ਲਗੇ ਪਰ ਅਨਦਰੋ-ਅਨਦਰੀ ਮਤੇ ਖੁਣਾ ਹੈ। ਕੌਰਵੋਂ ਦੀ ਏਹ ਚਾਲ ਬੀ ਕਾਮਯਾਬ ਨੇਈ ਹੋਈ। ਪਾਂਡਵ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਦੇ ਗੁਪਤਚਰ ਅਪਨੇ ਬਨਾਈ ਦੀ ਖੋਏ (ਸੁਰਾਂਗ) ਰਸਤੈ ਠੀਕ-ਠਾਕ ਬਾਹਰ ਆਈ ਗੇ।

ਕ੃ਣਾ ਦ੍ਰੁਪਦ ਰਾਜੇ ਦੀ ਧੀਓ ਹੀ, ਓਹਦੇ ਲੋਈ ਸ਼ੈਲ ਵਰ ਤੁਧਨੈ ਗਿਤੈ ਰਾਜਾ ਦ੍ਰੁਪਦ ਨੈ ਇਕ ਜਗ ਦਾ ਅਧੋਜਨ ਕੀਤਾ ਤੇ ਉਸ ਜਗੈ ਚ ਇਕ ਸ਼ਰਤ ਰਕਖੀ ਜੇ ਜੇਹੜਾ ਮਾਹਨੂ ਥਲਲੈ ਰਕਖੇ ਦੇ ਤੇਲਾ ਦੇ ਕਢਾਟੈ ਚ ਦਿਕਿਖਿਥੈ ਤੁਧਰ ਘੂਮਦੀ ਮਛਲੀ ਗੀ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਲਾਈ ਦੇਗ, ਤਾਂਥੈ ਮੇਰੀ ਧੀਓ ਦਾ ਵਰ ਬਨਡ। ਉਸ ਜਗੈ ਚ ਪਂਜੈ ਪਾਂਡੂ ਭਾਓ ਬਾਦਵਾਨੋਂ ਦਾ ਭੇਸ ਬਦਲੀ ਆਂਦੇ ਨ। ਦੁਰਿੰਧਨ, ਕਰਣ ਤੇ ਕੋਈ ਹੋਰ ਰਾਜਕੁਮਾਰ ਬੀ ਆਂਦੇ ਨ। ਦੁਰਿੰਧਨ ਸ਼ਬਨੈ ਸ਼ਾ ਪੈਹਲੋਂ ਉਠਦਾ ਏ ਪਰ ਓਹ ਇਸ ਕੋਸ਼ਸ਼ ਚ ਕਾਮਯਾਬ ਨੇਈ ਹੋਨਦਾ। ਆਖਰ ਧਨੁ-ਧਾਰੀ ਅਰਜਨ ਕਮਾਨ ਚੁਕਿਥੈ ਤੁਧਰ ਘੂਮਦੀ ਮਛਲੀ ਦੀ ਅਕਖੀਂ ਚ ਨਿਸ਼ਾਨਾ ਲਾਂਦਾ ਏ। ਤੇ ਫਹੀ ਕ੃ਣਾ ਅਰਜੁਨ ਦੇ ਗਲ ਵਰਸਾਲਾ ਪਾਈ ਵਿੰਦੀ ਏ ਤੇ ਰਾਜਾ ਦ੍ਰੁਪਦ ਗੀ ਅਪਨੀ ਧੀਓ ਆਸਤੈ ਮਨਚਾਹੇਧਾ ਵਰ ਮਿਲੀ ਜਂਦਾ ਏ। ਰਾਜਾ ਧੂਤਰਾ਷ਟ੍ਰ ਨੈ ਏਹ ਸੋਚੇ ਦੇ ਹਾ ਜੇ ਕ੃ਣਾ ਦਾ ਵਾਹ ਕੌਰਵੋਂ ਦੇ ਕੁਸੈ ਰਾਜਕੁਮਾਰੈ ਨੈ ਹੋਨਾ ਏ ਪਰ ਜਿਸਲੈ ਉਸੀ ਵਿਦੁਰ ਕੋਲਾ ਏਹ ਪਤਾ ਲਗਦਾ ਏ ਜੇ ਪਾਂਡਵ ਜਿਨ੍ਦੇ ਨ ਤੇ ਦ੍ਰੁਪਦ ਰਾਜੇ ਦੇ ਜਗ ਚ ਓਹਥੀ ਗੇਦੇ ਹੈ ਤਾਂ ਓਹ ਮਨੈ ਕੋਲਾ ਬਡਾ ਦੁਖੀ ਹੋਂਦਾ ਏ। ਵਿਦੁਰ ਜਾਈ ਦ੍ਰੁਪਦ ਰਾਜੇ ਨੈ ਮਿਲਦਾ ਏ ਤੇ ਪਾਂਡੂ ਪੁਤਰੋਂ ਗੀ ਘਰ ਵਾਪਸ ਆਨੇ ਲੋਈ ਆਖਦਾ ਏ।

#### 4.3.8 ਅਠਮੋਂ ਸਾਰੋਂ ਦਾ ਸਾਰ

ਕੌਰਵੋਂ, ਪਾਂਡਵਾਂ ਕਨੈ ਵਾਧਦਾ ਕੀਤੇ ਦਾ ਹਾ ਜੇ ਜਿਸਲੈ ਓਹ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਵਾਪਸ ਆਉਣ ਤਾਂ ਉਨੋਂਗੀ

ਬਕਖਰਾ ਰਾਜਪਾਠ ਦਿੱਤਾ ਜਾਗ । ਵਾਧਦੈ ਦੇ ਮਤਾਬਕ ਪਾਂਡਵੋਂ ਗੀ ਇੰਦ੍ਰਪ੍ਰਸਥ ਦਾ ਰਾਜਪਾਠ ਸੌਂਪੇਆ ਗੇਆ । ਪਾਂਡਵੋਂ ਅਪਨੀ ਇੰਦ੍ਰਪ੍ਰਸਥ ਦੀ ਸੀਮਾਏਂ ਗੀ ਉਤਰ, ਪੂਰਵ ਤੇ ਦਕਖਿਣ ਕਨਾ ਮਿਲਾਈ ਲੇਆ । ਪਾਂਡਵੋਂ ਅਪਨੀ ਵੀਰਤਾ ਤੇ ਸਚਵਾਈ ਦੇ ਅਧਾਰ ਉਪਰ ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ 'ਰ ਅਪਨੀ ਜਿਤ ਦਾ ਝੰਡਾ ਚਾਢੀ ਦਿੱਤਾ । ਇਕ ਬਾਰੀ ਪਾਂਡਵੋਂ ਦੇ ਮਨੈ ਚ ਜਗ ਕਰਨੇ ਸੋਚ ਆਈ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਜਗ ਕੀਤਾ ਜਗੈ ਚ ਕੌਰਵੋਂ ਸਮੇਤ ਕੇਈ ਉਚਚ ਬ੍ਰਾਹਮਣੋਂ ਗੀ ਤੇ ਕੇਈ ਰਿਸ਼ੀ—ਮੁਨਿਯੋਂ ਗੀ ਸਾਦਾ ਦਿੱਤਾ । ਪਾਡਵੋਂ ਦਾ ਰਾਜ—ਪਾਠ ਦਿਕਖੀ ਕੌਰਵ ਫਕੋਈ ਗੇ । ਇੰਦ੍ਰਪ੍ਰਸਤ ਦਾ ਰਾਜ—ਪਾਠ ਖੁਸ਼ਸਨੈ ਲੇਈ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਆਇਧੈ ਕੇਈ ਸਕੀਮਾਂ ਬਨਾਨੇ ਲਗੇ । ਯੁਦ੍ਧ ਚ ਓਹ ਪਾਂਡਵੋਂ ਗੀ ਜਿੱਤੀ ਨੇਈ ਸਕਦੇ, ਪਰ ਸੋਚਦੇ ਨ ਕਿਸ ਚਾਲੀ ਉਨੱਗੀ ਇੰਦ੍ਰਪ੍ਰਸਥ ਦਾ ਰਾਜ—ਪਾਠ ਥੋਹੇ, ਇਸ ਕਰੀ ਸ਼ਕੁਨੀ ਨੈ ਇਕ ਨਮੀਂ ਚਾਲ ਚਲਦਾ ਏ । ਪਾਂਡਵੋਂ ਗੀ ਜੁਆ ਖੇਲਨੈ ਲੇਈ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਬਲਾਂਦਾ ਏ । ਸਕਾਰੀ ਕਨੈ ਕੌਰਵ, ਯੁਧਿ਷਼ਿਤਰ ਕੋਲਾ ਸੁਨਾ, ਚਾਂਦੀ, ਹਾਥੀ ਘੋੜੇ ਸੇਨਾ ਤੇ ਰਾਜਪਾਠ ਜਿੱਤੀ ਲੈਂਦੇ ਨ । ਯੁਧਿ਷਼ਿਤਰ ਨੈ ਅਪਨੇ ਆਪ ਗੀ ਤੇ ਅਪਨੇ ਚੌਨੀਂ ਭਾਏਂ ਗੀ ਦਾਤ ਉਪਰ ਲਾਈ ਦਿੰਦਾ ਏ ਤੇ ਭਾਏਂ ਸਮੇਤ ਅਪਨੇ ਆਪੇ ਗੀ ਹਰਾਈ ਜਂਦਾ ਏ । ਵਿਦੁਰ ਸ ਬੇ—ਨਾਈ ਗੀ ਦਿਕਖਿਧੈ ਬੜਾ ਦੁਖੀ ਹੋਨਦਾ ਏ । ਯੁਧਿ਷਼ਿਤਰ ਗੀ ਸ਼ਕੁਨੀ ਉਕਸਾਂਦਾ ਏ ਜੇ ਓਹ ਕ੃਷ਣ ਗੀ ਦਾਤ ਉਪਰ ਲਾਈ ਦੇਏ । ਪਾਂਡਵ ਆਖਰ ਕ੃਷ਣ ਗੀ ਬੀ ਹਾਰੀ ਦਿੰਦੇ ਨ ਤੇ ਦੁਸ਼ਾਸਨ ਕ੃਷ਣ ਗੀ ਵੇ—ਇੱਜਤ ਕਰਨੈ ਲੇਈ ਬਾਲੋਂ ਦਾ ਫਡਿਧੈ ਰਾਜ—ਦਰਬਾਰ ਤੋਡੀ ਤ੍ਰੀਡੀ ਆਂਨਦਾ ਏ । ਭਰੀ ਸਭਾ ਚ ਕਰਣ ਦੁਸ਼ਾਸਨ ਗੀ ਆਖਦਾ ਏ ਜੇ ਕ੃਷ਣ ਗੀ ਨਿਵਸਤਰ ਕੀਤਾ ਜਾ । ਕ੃਷ਣ ਗੀ ਜਿਸਲੈ ਏਹ ਲਗਦਾ ਏ ਜੇ ਇਸ ਰਾਜ—ਸਭਾ ਚ ਕੋਈ ਬੀ ਓਹਦੀ ਇੱਜਤ ਨਲਾਮ ਹੋਨੇ ਸ਼ਾ ਨੇਈ ਬਚਾਈ ਸਕਦਾ ਤਾਂ ਓਹ ਸਚਵੀ ਮਨੈ ਨੈ ਭਗਵਾ ਕ੃ਣ ਗੀ ਧਾਦ ਕਰਦੀ ਏ । ਕ੃ਣ ਭਗਵਾਨ ਦ੍ਰੋਪਦੀ ਦੀ ਇੱਜਤ ਬਚਾਨੈ ਲੇਈ ਟੌਡੀ ਆਂਦੇ ਨ । ਦੁਸ਼ਾਸਨ ਦ੍ਰੋਪਦੀ ਦੀ ਸਾਡੀ ਖਿਚਦਾ ਜਂਦਾ ਏ ਪਰ ਈਸ਼ਵਰ ਸ਼ਕਤਿ ਨੈ ਸਾਡੀ ਬਧਦੀ ਗੈ ਜਨਦੀ ਏ । ਬਾਰੀ—ਬਾਰੀ ਸਾਰੇ ਕੌਰਵ ਕੋਥਾਂ ਕਰਦੇ ਨ ਪਰ ਨਾਕਾਮੀ ਦਾ ਮੁਹ ਦਿਕਖਨਾ ਪੈਂਦਾ ਏ । ਧੂਤ ਇਸ ਪ੍ਰਮੁ ਮਾਧਾ ਗੀ ਸਮਝੀ ਜਨਦਾ ਏ, ਇਸ ਲੇਈ ਦਰਬਾਰ ਬਰਖਾਸਤ ਕਰਿਧੈ ਪਾਡਵੋਂ ਗੀ ਰਾਜ—ਪਾਠ ਬਾਪਸ ਦੇਈ ਦਿੰਦਾ ਏ । ਇਸ ਗਲਲੈ ਥਮਾਂ ਦੁਖੀ ਹੋਇਧੈ ਸੁਧੋਧਨ ਕ ਨਮੀਂ ਚਾਲ ਚਲਦਾ ਏ । ਪਾਂਡਵੋਂ ਗੀ ਪਰਤੀ ਜੁਆ ਖੇਲਨੇ ਲੇਈ ਸਦੀ ਮੇਜਦਾ ਏ । ਸ਼ਰਤ ਬੱਡੀ ਕਠਨ ਹੀ, ਜੇਹੜਾ ਜੁਏ ਚ ਹਾਰਗ, ਓਹ ਰਾਜਪਾਠ ਛੋਡਿਧੈ ਤੈਹਰਾਂ ਬੇਰੇ ਵਨਵਾਸ ਕਰਨ ਚਲੀ ਜਾਗ । ਪਾਂਡਵ ਇਸ ਬਾਰੀ ਫਹੀ ਹਾਰੀ ਜਨਦੇ ਨ ਤੇ ਸ਼ਰਤ ਮਤਾਬਕ ਉਨੱਗੀ ਤੇਹਰੋਂ ਬਘੇ ਦਾ ਬਨਵਾਸ ਹੋਈ ਜਨਦਾ ਏ । ਪਾਂਡਵ ਕ੃਷ਣ ਗੀ ਲੇਇਧੈ ਤੈਹਰਾਂ ਬੇਰੇ ਬਨਵਾਸ ਕਵਣ ਚਲੀ ਜਨਦੇ ਨ । ਅਪਨੀ ਮਾਂ ਕੁਨ੍ਤੀ ਗੀ ਚਾਚਾ ਵਿਦੁਰ ਦੀ ਦੇਖ—ਰੇਖ ਚ ਛੋਡੀ ਜਨਦੇ ਨ ।

#### 4.3.9 ਨੌਮੇਂ ਸਾਰੋਂ ਦਾ ਸਾਰ

ਮਾਂ ਕੁਨ੍ਤੀ ਪੁਤਰੋਂ ਦੀ ਬਨਵਾਸ ਚਲੀ ਜਾਨੈ 'ਰ ਬੱਡੀ ਚਿੱਤਾ ਚ ਰੈਹਨਦੀ ਏ । ਕੁਨ੍ਤੀ ਗੀ ਵਿਦੁਰ ਬੇ—ਫਿਕਰ ਹੋਨੇ ਲੇਈ ਗਲਾਂਦੇ ਨ । ਜੇਹਦੇ ਪੁਤਰ ਯੁਧਿ਷਼ਿਤਰ ਜਨੇਹ ਧਰਮੀ, ਮੀਮ ਜਨੇਹ

बल—शाली , अर्जुन जनेह धनुष—धारी ते नकुल ते सहदेव जनेह वीर होन उसी चिन्ता करने दी कोई लोड़ नेई । धृतराष्ट्र गी विदुर इक बारी फही समझाने दी कोशश करदे न पर ओह पुट्ठा गै जबाव दिन्दा ऐ । इस गल्ला थमां दुखी ते निराश होइयै ओह कुत्ती गी देवकी कोल छोड़ियै आपूं जंगलै पास्सै पौन्दे न । उत्थें उन्दी मलाटी पांडवें नै होन्दी ऐ । विदुर पांडवें नै मिलियै कृष्ण कोल चली जंदे न ते कौरवें-पांडवें च सुलाह कराने दी इक्क होर कोशश करदे न । ओह कृष्ण अग्गे प्रार्थना करदे न जे ओह हस्तनापुर जाइयै कौरवें-पांडवें च संन्धि करान ।

कृष्ण भगवान धृतराष्ट्र कोल जन्दे न । पर धृत कौरवें-पांडवें दी संन्धि दे प्रस्ताव गी ठुकराई दिन्दे न । कृष्ण अपनी कोशश च नाकाम होइयै परतोई औंदे न ते पांडवें गी युद्ध दी त्यारी लेई प्रेरित करदे न । पांडव मानसिक तौर 'र अपने भाएं कौरवें नै युद्ध करनै लेई त्यार नेई हे पर कृष्ण उनेंगी समझान्दे न जे धरम दे इस युद्ध च अधरम दा नष्ट होना निश्चत ऐ भाएं ओह अपना किन्ना बी सकका की नेई होऐ । फही कुरुखेतर च कौरवें ते पांडवें दा महा युद्ध होंदा ऐ जिस च धृतराष्ट्र दे सारे पुत्र मारे जन्दे न । युद्ध जीती पांडव हस्तनापुर वापस औंदे न । पांडव अपने सकके—सरबन्धियें गी मारियै बड़े दुखी हे पर कृष्ण उनेंगी समझान्दे न जे जिनें भरी सभा च नारी गी निरवस्त्र करने दी कोशश कीती ते नारी दी इज्जत नेई भाखी उन्दा इयै हाल होन्दा ऐ । हस्तनापुर च परती राम—राज्य आई जंदा ऐ ते प्रजा सुखी जीवन व्यतीत करन लगदी ऐ । धृतराष्ट्र राजपाठ छोड़ी सन्यासी बनी जन्दा ऐ । इस धरम युद्ध च विदुर ने भाएं कोई शस्त्र ते नेई चुकेआ पर धर्म ते सच्च दे राहें पांडवें गी परती राज—पाठ दुआनै च इक महत्वपूर्ण भूमिका नभाही । आखर इस धरम युद्ध च बुराई पर अछाई दी जित्त होंदी ऐ ।

#### 4.4 कठिन शब्द

- |     |               |     |       |     |        |
|-----|---------------|-----|-------|-----|--------|
| 1)  | मद्दगार       | 2)  | बंश   | 3)  | मोह    |
| 4)  | किश्ती        | 5)  | कसरी  | 6)  | कोसदी  |
| 7)  | शिक्षा—दीक्षा | 8)  | घृस्त | 9)  | कौशलता |
| 10) | प्रण          | 11) | सुरंग | 12) | कढ़ाटै |
| 13) | धनुश—धारी     | 14) | मकारी |     |        |

#### 4.6 अभ्यास आस्तै सोआल

1) 'महात्मा विदुर' महाकाव्य दे पैहले त्र'ऊं दा सार अपਨੇ ਸ਼ਬਦਾਂ ਚ ਲਿਖੋ।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

2) 'ਮहात्मा विदुर' महाकाव्य दੇ ਲੇਖਕ ਦਾ ਜੀਵਨ ਪਰਿਚੇ ਲਿਖੋ।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

3) 'ਮहात्मा विदुर' महाकाव्य दੇ ਅਠਮੇ ਸੱਗ ਦਾ ਸਾਰ ਲਿਖੋ।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

#### 4.7 सहायक पुस्तकां

- 1) 'महात्मा विदुर'
- 2) डोगरी साहित्य दा इतिहास : डॉ. जितेन्द्र उधमपुरी

.....0.....

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102** **Unit - II**

**Semester - I** **Lesson : 5**

---

**'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਭਾਵ ਤੇ ਵਿਸ਼ੋਂ ਦੇ ਅਧਾਰ ਪਰ ਸੂਲਧਾਂਕਨ**

**5.0 ਰੂਪਰੇਖਾ**

**5.1 ਉਦੇਸ਼ਯ**

**5.2 ਪਾਠ—ਪਰਿਚੇ**

**5.3 ਪਾਠ— ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ**

**5.3.1 ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਸੂਲਧਾਂਕਨ ਭਾਵ—ਪਕਖ ਦੇ  
ਆਧਾਰ ਉਪਰ**

**5.4 ਸਾਰਾਂਸ਼**

**5.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ**

**5.6 ਅਭਿਆਸ ਆਸਤੈ ਸੋਆਲ**

**5.7 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਂ**

**5.1 ਉਦੇਸ਼ਯ**

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿਥੈ ਵਿਦ्यਾਰ्थੀ ਸਮੂਲਚੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਆਏ ਦੇ ਬਕਖ—ਬਕਖ ਵਿਸ਼ੋਂ ਤੇ ਇਸਦੇ  
ਭਾਵ—ਪਕਖ ਕਨੈ ਬਾਕਫ ਹੋਡਨ ਤੇ ਪੂਰੇ ਕਾਵਿ ਚ ਕਵਿ ਨੇ ਕੇਹ ਆਕਖਨਾ ਚਾਹੇਦਾ ਏ ਵਿਸ਼੍ਵਾਸ  
ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਕਰਡਨ । ਤੇ ਕਾਵਿ ਬਾਰੈ ਕੁਸੈ ਬੀ ਚਾਲਲੀ ਦੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਂ ਦੇ ਉਤਤਰ ਦੇਨੇ ਚ ਸਮਰਥ  
ਹੋਡਨ ।

## 5.2 ਪਾਠ–ਪਰਿਚੇ

ਇਸ ਪਾਠ ਚ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਆਏ ਦੇ ਵਿਖੋਂ ਤੇ ਭਾਵ–ਪਕਖ ਸਰਬਂਧੀ ਸਰੋਖੜ੍ਹ ਜਾਨਕਾਰੀ ਮਸ਼ਾਲਾਂ ਦੇਇਥੈ ਦਿੱਤੀ ਗੇਂਦੀ ਏ ।

## 5.3 ਪਾਠ–ਪ੍ਰਕਿਧਿਆ

### 5.3.1 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਰਕ ਭਾਵ–ਪਕਖ ਦੇ ਅਧਾਰ ਉਪਰ

ਕਾਵਿ ਦੇ ਮਨੈ ਦੀ ਚੀਜ਼ ਏ ਤੇ ਜਿ'ਧਾਂ ਮਨੈ ਦੀ ਕੀ ਸੀਮਾਂ ਜਾਂ ਥਾਹ ਨੇਈ ਹੋਂਦੀ ਤੁਸੱਥੈ ਚਾਲਲੀ ਕਾਵਿ ਦੀ ਬੀ ਕੌਈ ਸੀਮਾਂ ਜਾ ਹਵਾ ਬਨਾ ਨੇਈ ਹੋਂਦਾ । ਸਨ् 2003 ਚ ਛਪਨੇ ਆਹਲਾ 'ਜਾਨ ਸਿੱਹ ਪਗੋਚ' ਹੁੰਦਾ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਵਿਖਿ ਪ੍ਰਸਿੱਛ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਬਾਰਤ' ਗੀ ਅਧਾਰ ਬਨਾਇਥੈ ਰਖੇਆ ਗੇਦਾ ਏ । ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਕਥਾਨਕ ਮਹਾਭਾਰਤ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪਾਤਰ 'ਵਿਦੁਰ ਦੇ ਜੀਵਨ–ਚਰਿਤ੍ਰ ਪਰ ਅਧਾਰਤ ਏ । ਰਚਨਾਕਾਰ ਨੈ ਅਪਨੇ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ 'ਵਿਦੁਰ' ਦੇ ਸਮਪੂਰਣ ਵਕਤਿਤਵ ਦਿਯੋਂ ਚਰਿਤ੍ਰਿਕ ਖੂਬਿਯਾਂ ਗੀ ਗੋਹਾਡਨੇ ਦੀ ਸਫਲ ਕੋਣਿਕਾ ਕੀਤੀ ਦੀ ਏ । ਕਵਿ ਨੇ ਵਿਦੁਰ ਗੀ ਇਕ ਸੋਹਗੇ–ਸ਼ਾਨੇ, ਧਰਮ ਦੇ ਪਾਲਕ, ਇਕ ਸ਼ਹਾਨ ਸਾਂਤ ਦੇ ਰੂਪੈ ਚ ਅਪਨੀ ਇਸ ਰਚਨਾ ਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ । ਜਿ'ਨੇ ਧਰਮ ਯੁਦਧ ਚ ਸਚਵ ਦਾ ਸਾਥ ਦਿੱਤਾ । ਕਾਵਿ ਚ ਤੁੰਦੇ ਇਸ ਚਾਲਲੀ ਦੇ ਯੋਗਦਾਨ ਤੇ ਸੁਸ਼ੀਲ ਗੁਣੋਂ ਕਰੀ ਗੈ ਕਵਿ ਨੈ ਵਿਦੁਰ ਗੀ ਮਹਾਤਮਾ ਦਾ ਪਦ ਦਿੱਤੇ ਦਾ ਏ । ਪਗੋਚ ਹੋਰੋਂ ਅਪਨੇ ਇਸ ਸਮੂਲਚੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਗੀ ਨੌਂ ਸੱਗੋਂ ਚ ਬਣਿਥੈ 240 ਸਫੋਂ ਚ ਸਮਪੂਰਣ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ।

ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਪੈਹਲੇ ਸੱਗ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਗੁਰੂ–ਵੰਦਨਾ ਕਨ੍ਨੈ ਕਰਿਥੈ ਕਵਿ ਨੇ ਮਾਂ ਸਰਖਤੀ ਦੀ ਵੰਦਨਾ ਬੜੇ ਸੁਚ੍ਚੇ ਤੇ ਸੁਂਦਰ ਸ਼ਬਦੋਂ ਚ ਕਿਥ ਇ'ਧਾਂ ਕਰਦਾ ਏ ।

ਹਥ ਵੀਨਾ ਤੇ ਹੱਸ ਸੁਆਰੀ ।  
ਗਲ ਮਾਲਾ ਫੁਲਿੰਦੀ ਭਾਰੀ ॥  
ਵੇਦ ਮੰਤ੍ਰ ਵਿਦਾ ਦੀ ਦਾਤੀ ।  
ਕਵਿ ਕਲਾ—ਕੌਸ਼ਲ ਪਰਤਾਪੀ ॥  
ਤ੍ਰੂ ਨਿਰਮਲ ਬੁਦਧਿ ਦੀ ਦਾਤਾ ।  
ਦਧਾ ਕਰੋ ਸਭਨੈ ਪਰ ਮਾਤਾ ॥

ਮਾਂਗਲਾਚਰਣ ਦੇ ਮਗਰਾ ਸੁਨਿ ਵੇਦਵਾਸ ਦੇ ਅਦਭੁਤ ਤੇਜ਼ ਤੇ ਰੂਪ ਥਮਾਂ ਭਰਿਥੈ ਰਾਨੀ ਅੰਭਿਕਾ ਤੇ ਅੰਮਾਲਿਕਾ ਗੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਣੇ ਆਹਲੇ ਅਨੇ ਤੇ ਬਮਾਰ ਪੁਤਤੋਂ ਦਾ ਵਰਣਨ ਕਵਿ ਇਸ ਚਾਲਲੀ ਕਰਦਾ ਏ ।

हां रानी गी पुत्तर थहोना ।  
 पर जरमे दा अन्ना होना ॥  
 एह माऊ दे दो पुआड़े ।  
 उन सनमुख निहें नैन गुहाड़े ॥

x x x x x x

निककी नूंह अम्बालिका रानी ।  
 भेजी सुनमुख वेद-ज्ञानी ॥  
 दिखदे गै होआ तन पीला ।  
 खेढ़ी पल अन-चाही लीला ॥  
 दिखदे सार गै बोल्ले जोगी ।  
 फल्ल ते थ्होग, ब भुस्सा रोगी ॥

मुनि थमां प्राप्त दो रोगी पोत्तरुएं दी गल्ल सुनियै सत्यावती अपनी बड़ी नूंह गी शैल  
 चाल्ली समझाइये वेद व्यास कोल जाने गी गलांदी ऐ पर डरी-त्राही दी नूंह अपने थाहर  
 अपनी दासी गी मुनि कश भेजी दिंदी ऐ । ते इस भोली-भाली आज्ञाकारी दासी दी कुक्खा  
 चा वेद व्यास दे तेज कारण क स्वस्थ पुत्तर विदुर दा जन्म होंदा ऐ । वेद व्यास थमां दासी  
 गी थ्होने आहले नरोए पुत्तर दे वरदान गी कवि नै अपनी सुंदर भाशा राहें इस चाल्ली  
 बखाने दा ऐ :-

मन मेरा जीती तूं लेदा ।  
 तेरै खोट कपट निं रेहदा ॥  
 सुन्दर-शैल शबीला सोहना ।  
 घर तेरै इक पुत्तर होना ॥

दुऐ सर्ग च धृत, पांडू ते विदुर दे जन्म करी हस्तिनापुर च खुशी दे वातावरण गी प्रस्तुत  
 कीते दा ऐ ते कवि विदुर दे बाल-रूप ते उसदे शलैपे गी इ'यां वर्णत करदा ऐ ।

ਲਾਲ ਲਾਲ ਬੁਲਲ ਜਿ'ਧਾਂ ਕਧਾਲੁਏਂ ਦਾ ਫੁਲ,  
 ਸਾਰੈ ਮਚੀ ਗੇਦੀ ਹੁਲਲ, ਕੋਈ ਦਿਕਖਨੇ ਗੀ ਨਸ਼ੇ ਦਾ ।  
 ਸ਼ਲੈਪੇ ਦਾ ਓ ਧਨੀ, ਜਿਧਾਂ ਚੌਂਤਡੈ ਪ ਮਣੀਧ  
 ਅਗੋਂ ਪਿਚੋਂ ਕਨੀ ਕਨੀ ਲੋਈ ਅਪਨੀ ਚ ਦਸ਼ੇ ਦਾ ।

ਤ੍ਰਿਧੇ ਸਾਗ ਚ ਗੁਰਕੁਲ ਚ ਸ਼ਿਕਾ ਗ੍ਰੈਹਣ ਕਰਨ ਗੇਦੇ ਤ੍ਰੌਨੇ ਭਾਏਂ ਤੇ ਗੁਰਕੁਲ ਚ ਰੋਹਿਯੈ ਵਿਦੁਰ ਚ  
 ਪਲਨੇ—ਮਠੋਨੇ ਆਹਲੇ ਸਥਾਨੇ ਗੁਣੋਂ ਗੀ ਬਾਂਦੈ ਕੀਤਾ ਦਾ ਏ ।

ਸੋਚਨ ਗੁਰੂ, “ਮੇਰਾ ਬਚ੍ਚੂ ਏਹੁ”  
 ਮੇਰੇ ਕਦੁਂ ਹੁਕਮ ਦੈ ਥਲੈ ਏ ।  
 ਮਨ—ਆਂਦੀ ਸਥ ਕਿਥ ਦੇਆਂ ਇਸੀ,  
 ਜੋ ਕਿਥ ਬੀ ਮੇਰੈ ਪਲੈ ਏ ॥  
 ਕਿਨਾ ਕਰਮਠ ਇਕ ਜੋਗੀ ਏਹੁ,  
 ਜਾਗਤ ਪਰ ਧਰਮ ਜਾਨੀ ਏ ।  
 ਹੇ ਰਾਮ ! ਮਤਾ ਕਿਥ ਦੇਆਂ ਇਸੀ,  
 ਗੁਰੂ ਨੈਨ—ਸੀਸ ਦਾ ਪਾਨੀ ਏ ।

ਕਥਿ ਗੁਰੂ ਦੀ ਮਹਤਾ ਗੀ ਬਖਾਨਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਂਦਾ ਏ ਜੇ ਉਸ ਆਸਟੈ ਸਥ ਬਰੋਬਰ ਹੋਂਦੇ ਨ । ਗੁਰੂ  
 ਗੈ ਮਾਤ੍ਰ ਇਕ ਏਸਾ ਦੀਧਾ ਏ ਜੋ ਨਹੋਰੇ ਗੀ ਬੀ ਚਾਨਨ ਕਰੀ ਦਿੰਦਾ ਏ :—

ਇਸ ਕਰੀ ਗੁਰੂ ਗੀ ਨਮਨ ਕਰੋ,  
 ਚੁਪ ਮਨ੍ਨੋ ਉਸਦੇ ਆਖੈ ਗੀ ।  
 ਨਹੋਰੇ ਗੀ ਚਾਨਨ ਕਰਦਾ ਓਹੁ,  
 ਧਨ੍ਨ ਆਖੋ ਏਸੇ ਰਾਖੇ ਗੀ ।

ਚਾਥੇ ਸਾਗ ਚ ਕਥਿ ਜਿਥੋਂ ਤ੍ਰੌਨੇ ਭਾਏਂ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾ ਗ੍ਰੈਹਣ ਕਰਨੇ ਪਰੈਤ ਪਰਤੀ ਮੈਹਲੋਂ ਔਨੇ ਦਾ ਵਰਣਨ  
 ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕਰਦਾ ਏ ਉਥੋਂ ਗੈ ਧੂਤ, ਪਾਂਡੂ ਤੇ ਵਿਦੁਰ ਦੇ ਵਾਹ ਚ ਭਾਰਤੀ—ਸਾਧਾਤਾ—ਸਾਂਕੁਤੀ ਦਾ  
 ਗੁਣਗਾਨ ਕਰਦੇ ਹੋਈ ਭਾਰਤ ਚ ਨਾਰੀ ਦੀ ਮਹਤਾ ਦਾ ਬਖਾਨ ਬੀ ਕਰਦਾ ਲਭਦਾ ਏ । ਕਥਿ ਗਲਾਂਦਾ  
 ਏ ਜੇ ਜਿਥੋਂ ਨਾਰੀ ਦਾ ਮਾਨ—ਸਮਾਨ ਕੀਤਾ ਜਂਦਾ ਏ ਉਥੈ ਢੇਸਾ ਸੁਖਮਧੀ ਵਾਤਾਵਰਣ ਰੱਹਦਾ ਏ ।

फुल्ल वारे, भी तुआरी आरती,  
 केह प्यारी सम्यता ऐ भारती ।  
 सुखी ओह घर जिस च नारी मान ऐ,  
 बिना नारी ध्रिस्त नरक सम्मान ऐ ।

पञ्चमें सर्ग च पांडू राजा दी मौत ते धृतराष्ट्र दे हस्तनापुर दा राजा बनने दा वर्णन ऐ  
 | ते इस्सै सर्ग च कवि, प्रभु-भक्ति दे कन्नै-कन्नै देवकी दा अपने पति विदुर दे प्रति  
 सेवा-भाव बी दृशांदा ऐ :—

मनै च सेवाभाव दीप हा लट लट बलदा रौंहदा ।  
 करम तिलें दा तेल उद्दैं बत्ती उप्पर पौंदा ॥  
 बड़ै पैहर पति दै कन्नै उड्हना, न्हौंना, धोना ।  
 परमेसर दा नां जपने गी आसन उप्पर बौहना ॥

छठमें सर्ग च कवि ने विदुर ते देवकी दे वार्तालाप दा वर्णन कीता दा ऐ । देवकी दे पुच्छने  
 पर विदुर उसगी भगवान कृष्ण दे जन्म ते उंदी अद्विभुत लीलाएं बारै सनांदे न । इस सर्ग  
 च गै पगोच होरें राधा-कृष्ण दे पवित्र प्रेम दे संयोग ते वियोग दौनी पक्खें दा बड़ा मार्मक  
 वर्णन बी प्रस्तुत कीते दा ऐ । जियां —

जदूं तुस मेरे भाग ! एह जिंद छूहन्ने !  
 मेरे हिरखी अत्थरुं न होंदे चरूने !!  
 हे कान्ह मेरे ! मी मुरली सुनाओ !  
 घुली जां ! मिटी जां ! नेहा गीत लाओ !! (संयोग)

x x x x x x

बड़ा नर्थ ! हे राम ! कैसा बछोड़ा ?  
 जिझां बक्ख होआ हे हैंसें दा जोड़ा !!  
 बिनां पानी मच्छी, कड़ी धुप्प-धारी !  
 किझां जीन जीना वयोगै दी मारी !!

ਸਤਮੋਂ ਸਰਗ ਚ ਕੌਰਵ—ਪਾਂਡਵੋਂ ਗੀ ਮਾਰਨੇ ਆਸਤੈ ਨਮੀਂ ਚਾਲ ਚਲਦੇ ਨ ਪਰ ਵਿਦੁਰ ਦੀ ਕੁਸ਼ਲ ਪੁਛੀ  
ਤੰਦੀ ਇਸ ਚਾਲ ਗੀ ਸਮਯੀ ਜਾਂਦੀ ਏ । ਤੇ ਓਹ ਕੌਰਵੋਂ ਦੀ ਸਾਰੀ ਯੋਜਨਾ ਪੈਹਲੇ ਗੈ ਯੁਧਿ਷਼ਿਰ  
ਗੀ ਸਨਾਈ ਦਿੰਦੇ ਨ ।

ਤੂਂ ਭਰੀ ਬੈਠਾ ਹਾਂ, ਤੁਸੈਂ ਜਾਨੈ ਗੈ ਪੈਨਾ ।  
ਤੁਗੀ ਏਹ ਮੇਰੀ ਸਿਕਖ, ਤੂਂ ਚਤਰੇ ਬਨਿਯੈ ਰੈਹਨਾ ॥  
ਲਕਕਡ, ਲਾਖ ਤੇ ਤੇਲ, ਸਨੂੰ ਦਾ ਮੈਹਲ ਬਨਾਯਾ ।  
ਬਿੰਦ ਛੁਹਾਈ ਅਮਗ, ਤਾਂ ਤੱਡ—ਤੱਡ ਹੋਗ ਸਫਾਯਾ ॥

ਅਫੁਮੋਂ ਸਰਗ ਚ ਪਾਂਡੁ ਦ੍ਰੁਪਦ ਦੀ ਧੀਓ ਕ੃ਣਾ ਗੀ ਵਾਇਧੈ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਪਰਤੋਂਦੇ ਨ । ਤੇ ਤਾਨੋਂਗੀ  
ਇੰਦ੍ਰਪ੍ਰਸਥ ਦਾ ਰਾਜ—ਪਾਠ ਸੌਖੇਆ ਜਾਂਦਾ ਏ । ਵਿਦੁਰ ਯੁਧਿ਷਼ਿਰ ਗੀ ਉਪਦੇਸ਼ ਦਿੰਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਂਦੇ ਨ  
ਜੇ ਚੰਗਾ ਰਾਜਾ ਤਾਂ ਏ ਜੇਹੜਾ ਪ੍ਰਯਾ ਦੀ ਦੁਖ—ਤਕਲੀਫ਼ੋਂ ਗੀ ਸਮਯੀ ।

ਸਦਾ ਸਚਵ ਸਾਥੋਂ ਚਲੈ ਦੇਸ—ਗਦੀ  
ਜ਼ਾਨੀ ਤੇ ਵਿਦਾਨ ਦਾ ਮਾਨ ਕਰਨਾ ।  
ਗੁਣਿਧੋਂ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਦਾ ਹਕਕ ਬਨਦਾ,  
ਦੁਖਿਧੋਂ—ਗਰੀਬੋਂ ਤਲੀ ਦਾਨ ਧਰਨਾ ।

ਨੌਮੋਂ ਸਰਗ ਚ ਕੌਰਵੋਂ ਦੇ ਖਾਤਮੋਂ ਬਾਦ ਹਸਤਨਾਪੁਰ ਚ ਚੌਨੇ ਪਾਸ੍ਤੈ ਪ੍ਰੇਸ ਦੀ ਲਹੜ ਬਗਦੀ ਏ ਤੇ ਤਤ੍ਵੈਂ  
ਪਰਤਿਯੈ ਰਾਮ ਰਾਜ ਸਥਾਪਿਤ ਹੋਂਦਾ । ਪ੍ਰਯਾ ਦੇ ਸੁਖਦ ਜੀਵਨ ਦਾ ਵਰਣਨ ਕਵਿ ਅਪਨੇ ਸ਼ਬਦੋਂ ਚ ਇਧਾਂ  
ਕਰਦਾ ।

ਧਨ ਧਰਤੀ ਭਾਰਤ ਮਾਂ,  
ਜਿਤ ਧਰਮਰਾਜ ਜੇਹ ਰਾਜਾ ।  
ਪਰਤੀ ਆਯਾ ਰਾਮ—ਰਾਜ,  
ਲੋਕੋਂ ਬਿਚ ਮੇਲ—ਮਲਾਹਜਾ ।

ਖੀਰ ਚ ਏਹ ਗਲਾਯਾ ਜਾਈ ਸਕਦਾ ਏ ਜੇ ਭਾਵ—ਪਕਖ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇ ਦੀ ਫਿਲਿਟੀ ਕਨੈ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ  
ਚ ਨੇਕਾਂ ਕਥ—ਘਟਨਾ ਨ, ਜੇਹਡਿਆਂ ਜਨ—ਮਾਨਸ ਕਨੈ ਸਮਾਜੀ ਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਧਰਾਤਲ ਪਰ ਜੁਡੀ  
ਦਿਧਾਂ ਨ । ਏਹ ਮਾਨਵ ਗੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦੇਨੇ ਦੇ ਕਨੈ—ਕਨੈ ਗੂਢ ਤਰੀਕੈ ਨੈ ਸੋਚਨੇ ਪਰ ਬੀ ਮਜ਼ਬੂਰ

करदियां न । अपने कला-कौशल कन्नै पगोच होरें समूलचे महाकाव्य च ‘विदुर’ दे चरित्रिक गुणे गी पाठके सामने रक्खियै, उसी म्हातमा दी पदवी दुआने च पूरी सफलता हासल कीती दी ऐ ।

#### 5.4 सारांश

इस पाठ गी पढियै विद्यार्थ्यां गी डोगरी दे प्रसिद्ध महाकाव्य ‘महात्मा विदुर’ दे मुक्ख पात्र ‘विदुर’ बाऱै सरोखड जानकारी हासल होई सकग। इस महाकाव्य गी महाभारत दा आधार बनाइयै रचेआ गेदा ऐ। इसदा पूरा कयानक महात्मा विदुर दे जीवन-चरित्र उपर आधारत ऐ। ‘ज्ञान सिंह पगोच’ होरं इस महाकाव्य गी नौं सर्गं च बंडियै इसगी सफल बनाए दा ऐ। पगोच हुंदा एह महाकाव्य डोगरी दे सभनै महाकाव्य च अपना चेचा थाहर रखदा ऐ।

#### 5.5 कठिन शब्द :

- |               |                 |               |
|---------------|-----------------|---------------|
| 1) गोहाडने    | 2) सोहगे-स्याने | 3) गुरु-बंदना |
| 4) डरी-त्राही | 5) वरदान        | 6) पलने-मठोन  |
| 7) मानसिक     | 8) कला-कौशल     |               |

#### 5.6 अभ्यास आस्तै सोआल

- 1) ‘विदुर’ दा चरित्र-चित्रण करो ।
- 
- 
- 
- 
- 

- 2) भाव-पक्ख द्विरशी कन्नै महाकाव्य ‘महात्मा विदुर’ दा मुल्यांकन करो ।
- 
- 
- 
- 
-

- ### 3) भारती काव्य शस्त्र : डॉ. अर्चना केसर

## 5.7 सहायक पुस्तकां

- 1) 'महात्मा विदुर' ज्ञान सिंह पगोच
  - 2) डोगरी साहित्य दा इतिहास : डॉ. जितेन्द्र उधमपुरी

0

## **M.A. DOGRI**

---

<b>Course No. 102</b>	<b>Unit - II</b>
<b>Semester - I</b>	<b>Lesson : 6</b>

---

‘ਮहਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ’ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਕਲਾ-ਪਕਖ ਦੀ ਵਿਸ਼ਾ ਕਨੈ ਸੂਲਧਾਂਕਨ

6.0 ਰੂਪਰੇਖਾ

6.1 ਉਦੇਸ਼

6.2 ਪਾਠ-ਪਰਿਚੇ

6.3 ਪਾਠ- ਪ੍ਰਕਿਧਾ

6.3.1 ‘ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ’ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਅਲਕਾਰ-ਯੋਜਨਾ

6.3.2 ‘ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ’ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਰਸ-ਯੋਜਨਾ

6.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

6.5 ਕਥਿਨ ਸ਼ਾਬਦ

6.6 ਅਭ്യਾਸ ਆਸਤੈ ਸੋਆਲ

6.7 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਂ

6.1 ਉਦੇਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿੱਧੇ ਵਿਦਾਰੀ ਸਮੂਲਚੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਕਲਾ-ਪਕਖ ਕਨੇ ਰੂ-ਬ-ਰੂ ਹੋਡਨ ਤੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਕਵਿ ਨੈ ਬਕਖ-ਬਕਖ ਰਸੋਂ ਤੇ ਅਲਕਾਰੋਂ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕਰਿੱਧੈ ਅਪਨੀ ਰਚਨਾ ਚ ਕਿਸ

ਚਾਲੀ ਗੁਆਡ ਪੈਦਾ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ਤਫਸੀਲ ਕਨੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਕਰਡਨ । ਤੇ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਬਾਰੇ ਕਲਾ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕਨੈ ਸਰਬਂਧਤ ਕੁਸੈ ਬੀ ਚਾਲੀ ਦੇ ਪ੍ਰਸ਼ਨੋਂ ਦੇ ਉਤਤਰ ਚ ਸਮਰਥ ਹੋਡਨ ।

## 6.2 ਪਾਠ-ਪਰਿਚੇ

ਇਸ ਪਾਠ ਚ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਰਸ ਤੇ ਅਲੰਕਾਰ ਯੋਜਨਾ ਬਾਰੇ ਸਰੋਖਡ ਜਾਨਕਾਰੀ ਮਸਾਲਾਂ ਦਿੱਤੀ ਗੇਦੀ ਏ ।

## 6.3 ਪਾਠ-ਪ੍ਰਕਿਧਾ

1. 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਅਲੰਕਾਰ ਯੋਜਨਾ –
  - (ਕ) ਅਨੁਪ੍ਰਾਸ ਅਲੰਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ
  - (ਖ) ਧਮਕ ਅਲੰਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ
  - (ਗ) ਉਪਮਾ ਅਲੰਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ
  - (ਘ) ਰੂਪਕ ਅਲੰਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ
  - (ਡ) ਉਤਪ੍ਰੇਕਾ ਅਲੰਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ
  - (ਚ) ਮੁਹਾਬਰੋਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ
2. 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਰਸ ਯੋਜਨਾ –
  - (ਕ) ਕਰੂਣ ਰਸ
  - (ਖ) ਸ਼੍ਰਾਂਗਾਰ ਰਸ
  - (ਗ) ਵੀਰ ਰਸ
  - (ਘ) ਰੌਦ੍ਰ ਰਸ

### 6.3.1 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਅਲੰਕਾਰ-ਯੋਜਨਾ

ਕਾਵਿ ਗੀ ਆਕਰ්ਸ਼ਕ, ਸੁਨਦਰ ਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵਪੂਰਣ ਬਨਾਨੇ ਚ ਅਲੰਕਾਰੋਂ ਦਾ ਸਾਰੇ ਸ਼ਾ ਮਤਾ ਧੋਗਦਾਨ ਹੋਂਦਾ ਏ । ਅਲੰਕਾਰ ਪ੍ਰਭਾਵ ਤੇ ਸੁਨਦਰਤਾ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਕਥਨ ਗੀ ਸੱਕਿਲਿਤ ਬੀ ਬਨਾਂਦੇ ਨ ਅਰਥਾਤ ਗਾਗਰ ਚ ਸਾਗਰ ਭਰਨੇ ਦਾ ਕਮਮ ਕਰਦੇ ਨ । ਜਿਤਥੁੰ ਤਕ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਚ ਪ੍ਰਯੁਕਤ ਅਲੰਕਾਰੋਂ ਦੀ ਗਲਲ ਏ ਤਾਂ ਏਹ ਗਲਾਧਾ ਜਾਈ ਸਕਦਾ ਏ ਜੇ ਇਸ ਚ ਐਸਾ ਕੋਈ ਬੀ ਵਰਣਨ ਨੈਈ ਜਿਸ ਚ

शब्दालंकारें ते अर्थालंकारें दे कन्नै—कन्नै मुहावरें दा गुहाड़ नेई होऐ । समूलचे महाकाव्य च अलंकारें राहें पैदा होने आहली सुंदरता कवि दी बेजोड़ शैली दा गै प्रमाण दिदी ऐ ।

### (क) अनुप्रास अलंकार दा प्रयोग

गुरुकुल च शिक्षा ग्रैहण करन गेदे अपने चेले गी गुरु जिसलै अपने उपदेश दिंदे न तां अनुप्रास अलंकार दा इक चित्त छुहना उदाहरण इस चाल्ली मिलदा ऐ :—

हुन पल भर प्रभु ध्यान करो,  
अकर्ख, नक्क, कन्न सब भुलिल्यै ।  
तन रोम—रोम रस राम रचौ,  
चलै प्रेम—पुरा छ्वा झुलिल्यै ॥

इ'यां गै गुरु दे प्रवनचने दी म्हत्ता गी बसानने आस्तै कवि नै रूपक ते अनुप्रास अलंकार दा प्रयोग बखूबी कीते दा ऐ :—

गुर गल्लां मनै—बरेती पर,  
गूढा रंगे दा ठप्पा ऐ ।  
सिख—सोच—सभाड—सुआत्म कन्नै  
बडा मेल, ना टोला ठप्पा ऐ ।

इ'यां गै अनुप्रास अलंकार दे किश होर उदाहरण इस चाल्ली न जियां :—

सिर—सिर सुच्ची सोच समाया ।  
झटपट भीषम कोल सदाया ।

x x x x x x

चूहे—चिडे—चफेरै चक्कर  
भौडा पर भौडा दी टक्कर

#### (ਖ) ਯਮਕ ਅਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

ਧਮਕ ਅਲਕਾਰ ਦੇ ਬੀ ਕਿਥ ਇਕ ਖੂਬਸੂਰਤ ਉਦਾਹਰਣ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਮਿਲਦੇ ਨ –

ਆਈ ਰਥ ਕਥ ਹੈ ਰੁਕੇ, ਜ੍ਞਾਕੇ ਪਾਂਡੁਏਂ ਸੀਸ

ਸੀਸ ਦੇਈ ਗੁਰੂ ਆਖਦੇ, ਜਗ ਤੁੰਦੀ ਕੇਹ ਰੀਸ ।

ਸ਼ਬਦਾਲਕਾਰੋਂ ਸਾਹੀਂ ਸਮੂਲਚੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਅਰਥਾਲਕਾਰੋਂ ਅਰਥਾਤ ਉਪਮਾ, ਉਤਪ੍ਰੇਕਸ਼ਾ, ਰੂਪਕੋਂ ਆਦਿ ਬੀ ਖਾਸੀ ਬਰਤੂਨ ਨਜ਼ਰੀ ਆਂਦੀ ਐ । ਕਥਿ ਸ਼ਬਦੋਂ ਦੇ ਅਰੰਥ ਰਾਹੋਂ ਕਥਨ ਚ ਜਿਸ ਚਾਲੀ ਚਮਤਕਾਰ ਉਤਪਨਨ ਕਰਦਾ ਐ ਓਹ ਇਸਦੇ ਅਨੂਠੇ ਕਲਾ—ਕੌਸ਼ਲ ਦਾ ਗੈ ਪ੍ਰਭਾਵ ਐ ।

#### (ਗ) ਉਪਮਾ ਅਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

ਮਾਂ ਸਤਿਵਤੀ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਸੁਨਿਧੈ ਰਿਸੀ ਵੇਦ ਵਾਸ ਭੀ਷ਮ ਦੇ ਸਾਥੋਂ ਕਿਧਾਂ ਤੌਲੇਤੌਲੇ ਗੈਈ ਪੁਟਦੇ ਹਵਾਤਨਾਪੁਰ ਆਂਦੇ ਨ । ਕਥਿ ਇਨ੍ਹੋਂ ਦੋਏ ਬ੍ਰਹਮਚਾਰੀ ਮਹਾਪੁਰਸ਼ਾਂ ਦੀ ਸਫੁਰਤੀ ਦਾ ਬਖਾਨ ਸੁੰਦਰ ਉਪਮਾ ਰਾਹੋਂ ਇਧਾਂ ਕਰਦਾ ਐ ।

ਪੈਂਡਾ ਪਲ—ਪਲ ਸ਼ਬਦਾ ਇਜ਼ਾਂ ।

ਲਪਟਾਂਦੀ ਜਾ ਫੂਹਡੀ ਜਿਜ਼ਾਂ ॥

ਇਧਾਂ ਗੈ ਕਿਥ ਇਕ ਹੋਰ ਉਪਮਾਏਂ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ ਦਿਕਖੋ –

ਹਵਾਤਨਾਪੁਰ ਚਾਨਨ ਇਧਾਂ ।

ਸੁਰਗ—ਸ਼ੈਹਰ ਅਮਰਾਵਤੀ ਜਿਧਾਂ ॥

x x x x x x

ਮਿਛੀ ਵਾਣੀ ਪਕਖੁੱਲ ਬੋਲਨ ।

ਕਨੈ ਬਿਚ ਜਿਧਾਂ ਮਿਸਰੀ ਘੋਲਨ ॥

#### (ਧ) ਉਤਪ੍ਰੇਕਸ਼ਾ ਅਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

ਮਦਰ—ਦੇਸ਼—ਨਰੇਸ਼ ਦੀ ਮਾਦਰੀ ਤੇ ਦੇਵਕੀ ਦੀ ਸੁੰਦਰਤਾ ਗੀ ਕਥਿ ਉਪ੍ਰੇਕਸ਼ਾ ਅਲਕਾਰੋਂ ਰਾਹੋਂ ਕਿਥ ਇਸ ਚਾਲੀ ਬਾਂਦੈ ਕਰਦਾ ਐ :–

ਖੁਮਕ ਚਿਟੀ, ਦਾਗ ਨੇਹਾਂ ਚਾਦਰੀ  
ਡਲਕ ਚਮ੍ਬੇ ਦੀ ਕਲੀ, ਨਾਂ ਮਾਦਰੀ

X X X X X X

ਇਕ ਡਾਹਲੀ ਫੁਲ ਚਿਟਾ ਡਲਕਦਾ,  
ਦੂਰ ਤਾਰ ਗਾਸ ਝਿਲਮਿਲ ਝਲਕਦਾ ।  
ਦੇਵਕੀ ਹਾ ਨਾਂ ਦੇਵਕ ਪੁਤਰੀ,  
ਪਰੀ ਅਖਚੈ ਸੁਰਗ ਭੁਜ਼ਾਂ ਉਤਰੀ ॥

ਕਿਥ ਉਦਾਹਰਣ ਹੋਰ ਦਿਕਖੋ –

ਜਿਧਾ – ਜੈਂਤ ਸੈਹਸੀ ਦੀ ਛਣੀ ਦੀ ਇਝੜਾਂ ।  
ਖਰਗੋਸ਼ ਦਿਕਿਖਿਯੈ ਸ਼ੇਰੇ ਗੀ ਜਿਝੜਾਂ ॥

X X X X X X

ਪਾਨੀ ਪਰ ਇਝੜਾਂ ਬਾ ਬਿਲਦੀ ।  
ਜਿਝੜਾਂ ਧੀ ਬਜੋਗਨ ਮਾਂ ਮਿਲਦੀ ॥

### (ਭ) ਰੂਪਕ ਅਲਕਾਰ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ

ਸੁਨਦਰ–ਸੁਨਦਰ ਉਪਮਾਏਂ ਤੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਸਾਹੀਂ ਚਿਤ ਛੂਹਨੇ ਰੂਪਕ ਭੀ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਨਾਂ ਜਨ ਜਡੇ  
ਦੇ ਲਗਦੇ ਨ । ਜਿਧਾਂ :–

ਹੁਨ ਸੋਚੋਂ ਦੀ ਖੂਹਿਹਾ ਢੁਕੀ ।  
ਕਦੋਂ ਨਿੰ ਤੁਝੀ ਗਾਸਾ ਗੁਝੀ ॥

X X X X X X

ਆਸ ਪਖੇਰੂ ਫਂਘ ਨਿੰ ਖੋ'ਲੈ ।

X X X X X X

ਸੋਚ ਸਾਗਰ ਢੁਕਦਾ–ਤਰਦਾ ਭੀ਷ਮ ਹਾ ਕਥ ਆਯਾ

### (च) मुहाबरे दा प्रयोग

अलंकारे आहला लेखा समूलचे महाकाव्य च मुहाबरे दे बी खासे प्रयोग द्रिश्टीगोचर होंदे न | जिस करी काव्य-भाशा दा गुहाड होर मता बधी जंदा ऐ | जियां :-

मौती दे मूळ बी जाई लगदा

नित इथ्यै ठेलन ठेहलै दा ।

x x x x x x

सुखै सर्ती मन ऐ बाग-बाग

सुख ऐसी सुमन-सगळी ऐ ।

x x x x x x

मूळ बोल घटू, भले कम्म मते

शारमा बिच पानी-पानी ऐ ।

x x x x x x

भै आया दिक्खी ते आन्ने टडोंए ।

सुनेआं सित्र्जां सप्प सींधी गेआ हा ।

#### 6.3.2 'महात्मा विदुर' महाकाव्य च रस-योजना

काव्य दी आत्मा 'रस' गी मन्नेआ जंदा ऐ । इस करी काव्य च रस दा इक म्हत्तवपूर्ण थाहर होंदा ऐ । रस दशा च सहदय पाठक स्पर्श शून्य होई जंदा ऐ । महाकाव्य च कोई इक रस प्रधान होंदा ऐ ते बाकी गौण रूप च होंदे न । अर्थात् इक रस अंगीरस दे रूपै च होंदा ऐ ते बाकी अंगभूत रूप च । इसकरी महाकाव्य च लगभग सभने रसें दी बरतून जरुरी मन्नी जंदी ऐ । जित्थू तक 'महात्मा विदुर' महाकाव्य च रस योजना दा सवाल ऐ तां एह गलाया जाई सकदा ऐ जे इसदा अंगीरस 'करुण' ऐ पर कुतै-कुतै वीर, रौद्र, भ्यानक, आदि रसें दी योजना बी द्रिश्टीगोचर होंदी ऐ ।

### (क) करुण रस

जिसलै कंस गी पता चलदा ऐ जे उसी मारने आहला गोकुल च पला करदा ऐ तां ओह अपने सपाहियें गी गोकुल दे सभने सोहल ज्यानें गी मारने दा हुकम दिंदा । इस करुणा दे भाव गी कवि इस चाल्ली प्रस्तुत करदा ऐ :-

गोदें चा ज्याने पखोड़ी-पखोड़ी !

मारे, कोई गैहल-गुच्छल निं छोडी !!

सौहरे घर जंदे होई कृष्णा दी बरधाई दे मौकै पर उसदे मनै च उट्टने आहले भावे गी कवि ने बडे मार्मक ढंगै कनै इस चाल्ली व्यक्त कीते दा ऐ -

भी नजर मुडियै, दुड़ाई ही कृष्णा,

दिक्खी मैहल अपना बडी सूक्ष्म सुट्टी ।

परबस पेई कूंज पिंजरे च सोचै,

परदेस बासा हिका हूक उट्टी

भिरी हेरदी, बाग बूहटे खड़ोते,

दुआसी भरे, जियां रोंदे हे फुट्टी ।

### (छ) श्रंगार रस

श्रंगार रस दे दो पक्ख हांदे न 'संयोग' ते 'वियोग' इस महाकाव्य च बी श्रंगार रस दे इ'नें दोने पक्खें दी योजना नजरी औंदी ऐ

राधा-कृष्ण दे प्रेम प्रसंग दे संयोग पक्ख गी खूबसूरती इ'यां चित्रत कीते दा ऐ :-

चरणे च बैठी, कृष्ण बांह बधांदे !

दुआली ही हिरखें गलै ने हे लांदे !!

राधा गलैं फुल्ल-माला ही पाई !

इक फुल्ल जूऱे च दित्ता सजाई !!

जदूं तुस मेरे भाग ! एह जिंद छूहन्ने !

मेरे हिरख अत्थरुं न होंदे चरूने !!

हे काह्ह मेरे ! मी मुरली सुनाओ !

घुली जां ! मिटी जां ! नेहा गीत लाओ !!

ते जिसलै कृष्ण कैस दा संहार करने आस्तै मथुरा चली जंदे न तां उंदे वियोग च  
राधा दी दशा दा वर्णन कवि बड़े मार्मक ढंगै कनै इ'यां करदा ऐ :-

रथ रस्तै जंदा, राधा दूरे-दूरे !

चुप-चुप, मन हा वजोग बशूरे !!

रथ किश पलें बिच हा जमनां दै पारें !

राधा खड़ोती दी, दिखदी रुआरें !!

बड़ा नर्थ ! हे राम ! कैसा बछोड़ा ?

जिझ्रां बक्ख होआ हैंसें दा जोड़ा !!

बिनां पानी मच्छी, कड़ी धुप्प-धारी !

किझ्रां जीन जीना वयोगै दी मारी !!

### (ग) वीर रस

महाकाव्य च वीर रस दा इक बड़ा चित्त छूहना उदाहरण उसलै मिलदा ऐ जिसलै कृष्ण  
ते बलराम कंस दे सादै पर निडर होइयै दंगल च भाग लैने आस्तै मथुरा जाने लेई त्यार  
होई जंदे न ।

असें गी ऐ सादा, असें दौन्ने जाना !

असें गै एह कहानी, एह किस्सा मुकाना !!

x x x x x x

मुकाये मैं राकस, इत्थे जो मुकाने !

बलगै दे मां बब्ब बी जाइयै छुड़ाने !!

### (ਖ) ਰੌਦਰ ਰਸ

ਮਾਂਡਿ ਸੁਨਿ ਗੀ ਰਾਜੇ ਦੇ ਸਪਾਹੀ ਚੋਰ ਸਮਝਿਯੈ ਰਾਜ ਦਰਬਾਰ ਚ ਲੇਈ ਜਾਂਦੇ ਨ ਤੇ ਰਾਜਾ ਤਾਂਨੇਂਗੀ ਫਾਂਸੀ ਦੀ ਸਜਾ ਸੁਨਾਂਦਾ ਏ । ਸੁਨਿ ਇਸ ਬੇ—ਨਿਆਈ ਥਮਾਂ ਕ੍ਰਾਧਿਤ ਹੋਇਯੈ ਰਾਜੇ ਗੀ ਸ਼ਰਾਪ ਦੇਈ ਦਿੰਦੇ ਨ । ਇਸ ਪ੍ਰਸਾਂਗ ਚ ਰੌਦਰ ਰਸ ਗੀ ਮਸੂਸੇਆ ਜਾਈ ਸਕਦਾ ਏ :—

ਕ੍ਰਾਧੈ ਦੇ ਅਕਖੀਂ ਬਿਚ ਢਾਰੇ ।

ਖੜਕਾਏ ਧਰੰ ਦੇ ਦੁਆਰੇ ॥

x x x x x x

ਅਜਜ ਸਰਾਪ ਤੁਗੀ ਅ'ਊਂ ਦਿੱਨਾਂ

ਚੁਕਕ ਟੋਕਰੀ, ਲੈ ਕਰ ਬਿੰਨਾਂ ॥

x x x x x x

ਜਾ ਸੁਲੜਾਇ ਧਰੰ ਦਿਯਾਂ ਗੱਢਾਂ ।

ਨਿਆਂ ਤੇ ਬੇ ਨਿਆਈ ਦਿਯਾਂ ਬੰਡਾਂ ॥

ਚੁਪੀ ਨੈਈ ! ਦੇ ਉਤਰ ਤੂਂ ।

ਨਿਤਾਂ ਬਨੀ ਜਾ ਦਾਸੀ ਪੁਤਰ ਤੂਂ ॥

ਇਸੈ ਚਾਲੀ ਭਾਨਕ, ਵਾਤਸਲਿਆ, ਅਦਮੁਤ, ਸ਼ਾਂਤ ਆਦਿ ਰਸਾਂ ਦੀ ਧੋਜਨਾ ਵੀ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਥਾਹਰੈ—ਥਾਹਰੈ ਸਿਰ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਗੋਚਰ ਹੋਂਦੀ ਏ । ਖੀਰ ਚ ਮੁਖਸਰ ਤੌਰਾ ਪਰ ਏਹ ਗਲਾਯਾ ਜਾਈ ਸਕਦਾ ਏ ਜੇ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਭਾਵ—ਪਕਖ ਜਿੱਨਾ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਏ ਉਨਾ ਗੈ ਇਸਦਾ ਕਲਾ—ਪਕਖ ਬੀ ਸ਼ਸਤ੍ਰ ਏ ।

### 6.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਛਿਧੈ ਵਿਦਾਰਿਚਿਆਂ ਗੀ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੰਦ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਚ ਕਲਾ ਪਕਖ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਵਿਦਾਰਿਚਿਆਂ ਗੀ ਰਸ—ਅਲਕਾਰ ਦੀ ਬਰਤੂਨ ਕਿੱਤੇ ਕਿਸ ਚਾਲੀ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਗੀ ਲੇਖਕ ਨੇ ਖੂਬਸੂਰਤ ਬਨਾਏ ਦਾ ਏ। ਇਸਦੀ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਅਲਕਾਰੇ ਦੀ ਖੂਬਸੂਰਤੀ ਕਿੱਤੇ ਇਸ ਕਾਵਿ ਗੀ ਖੂਬਸੂਰਤ ਬਨਾਇਯੈ ਜੇਹੜਾ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਗੁਹਾਡ ਪੈਦਾ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ। ਉਸ ਬਾਰੈ ਵਿਦਾਰਿਚਿਆਂ ਗੀ ਸਰੋਖਡ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ।

## 6.5 कठिन शब्द

- |     |              |    |         |    |         |
|-----|--------------|----|---------|----|---------|
| 1)  | काव्य        | 2) | आकार्शक | 3) | गुरुकुल |
| 4)  | स्भा—सुआत्म  | 5) | चफैरे   | 6) | गैर्ड   |
| 7)  | द्रिश्टीगोचर | 8) | मार्मक  | 9) | वीर     |
| 10) | करुणा        |    |         |    |         |

## 6.6 अभ्यास आस्तै सौआल

ਖ'ਲ ਦਿੱਤੇ ਦੇ ਸੁਆਲੋਂ ਦੇ ਜਬਾਵ ਦੇਓ :—

1. 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਕਲਾ—ਪਕਖ ਦੇ ਅਧਾਰ ਪਰ ਸਮੀਕਸ਼ਾ ਕਰੋ ?

---

---

---

---

2. 'ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ' ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਰਸ ਯੋਜਨ ਪਰ ਲੇਖ ਲਿਖੋ ?

---

---

---

---

3. अलंकार काव्य दी सूंदरता बधांदे न, 'महात्मा विदुर' महाकाव्य दे हवाले कन्नै इस कथन दी पुश्टी करो ?
- .....0.....
- .....0.....
- .....0.....
- .....0.....

#### 6.7 सहायक पुस्तकां

- (क) डोगरी सोध (अंक – 8) – पोस्ट ग्रैजुएट डोगरी डिपार्टमैट, जम्मू यूनिवर्सिटी, जम्मू  
(ख) भारती काव्य–शास्त्र – डा. अर्चना केसर

## **M.A. DOGRI**

---

<b>Course No. 102</b>	<b>Unit - II</b>
<b>Semester - I</b>	<b>Lesson : 7</b>

---

**ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਦਾ ਜੀਵਨ ਪਰਿਚੇ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ्य  
ਗੀ ਉੰਦਾ ਜੋਗਦਾਨ**

**7.0 ਰੂਪਰੇਖਾ**

**7.1 ਉਦੇਸ਼ਧਾਰਾ**

**7.2 ਪਾਠ—ਪਰਿਚੇ**

**7.3 ਪਾਠ—ਪ੍ਰਕਿਧਾ**

7.3.1 ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਦਾ ਜੀਵਨ—ਪਰਿਚੇ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ्य ਗੀ ਉੰਦਾ ਜੋਗਦਾਨ

7.3.2 ਕਥਿ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ्य ਗੀ ਉੰਦਾ ਜੋਗਦਾਨ

7.3.3 ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਹੁਨਦੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ्य ਦਾ ਮੂਲਧਾਨ

**7.1 ਉਦੇਸ਼ਧਾਰਾ**

ਇਸ ਯੂਨਿਟ ਦੇ ਪਾਠੋਂ ਗੀ ਪਢਨੇ ਪੈਰੈਨਟ ਵਿਦਾਰਥੀਂ ਗੀ ਅਪਨੇ ਪਾਠਯੋਗ ( ਸੈਲੇਬਸ) ਚ ਲਾਗੇ ਦੇ ਡੋਗਰੀ ਕਥਿ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਦੇ ਜੀਵਨ ਪਰਿਚੇ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ्य ਗੀ ਉੰਦੇ ਯੋਗਦਾਨ ਦੇ ਬਾਰੇ ਚ ਸਰੋਖਡ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸਦੇ ਇਲਾਵਾ ਵਿਦਾਰਥੀਂ ਗੀ ਪਾਠਯੋਗ ਕਮ ਚ ਲਾਗੇ ਦੇ 'ਬੀਰ—ਗੁਲਾਬ' ਖੱਣਡ —ਕਾਵਿ ਬਾਰੈ ਵਿਸ਼੍ਵੂਤ ਜਾਨਕਾਰੀ ਥਹੋਈ ਸਕਗ। ਵਿਦਾਰਥੀਂ ਜਿਤਥੋਂ ਇਕ ਬਕਖੀ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਹੁਦੋਂ ਜੀਵਨ ਤੇ ਉੰਦੀ ਸਾਹਿਤਿਆਂ ਸਿਰਜਨਾ ਸਰਖਾਈ ਸੁਆਲੋਂ ਦੇ ਉਤਰ ਦੇਨੇ ਚ ਯੋਗਧਾਰਾ ਹਾਸਲ ਕਰੀ ਸਕਣ ਉਤਥੀ ਗੈ ਦੁੱਝ ਬਕਖੀ ਉੰਦੇ ਚ 'ਬੀਰ—ਗੁਲਾਬ' ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਨ ਕਰਨੇ ਦੀ ਬੀ ਸਮਰਥਾ ਪੈਦਾ ਹੋਗ।

## 7.2 पाठ परिचे

इस यूनिट च त्रै पाठ न | पैहले पाठ च दीनू भाई पंत हुदे व्यक्तित्व ते कृतित्व सरबंधी लोड़चदी जानकारी दिती गेदी ऐ। दुऐ पाठ च दीनू भाई पंत हुंदा कविता साहित्य गी योगदान बारै विस्तृत जानकारी ऐ ते त्रिये पाठ च 'वीर गुलाब' काव्य दा मूल्यांकन कीता गेदा ऐ।

## 7.3 पाठ प्रक्रिया

इस यूनिट दे सभनें त्रैकां पाठें च:-

- i) दीनू भाई पंत दा जीवन परिचे ते रचना -प्रक्रिया।
- ii) दीनू भाई पंत दे कविता -साहित्य दा मूल्यांकन
- iii) 'वीर गुलाब' काव्य दा मूल्यांकन

## Life and works of Dinu Bhai Pant Paper ( Khand- Kavya)

### 7.3.1 दीनू भाई पंत दा जीवन-परिचे ते डोगरी साहित्य गी उंदा जोगदान

#### उद्देश्य

इस पाठ गी पढ़ियै विधार्थियें गी डोगरी दे सिरमौर कवि श्री दीनू भाई पंत हुन्दे जीवन-परिचे ते डोगरी साहित्य गी उंदे नमुले योगदान बारै विस्तृत जानकारी हासल होग ते उंदे व्यक्तित्व ते कृतित्व दे बारे च विद्यार्थी कुसै बी किस्मा दे सुआलें दे उत्तर देने च समर्थ होडन।

#### पाठ-परिचे

इस पाठ च श्री दीनू भाई पंत हुंदे व्यक्तित्व ते कृतित्व सरबंधी कम्मा च उंदे कविता साहित्य गी छोड़ियै उंदे नाटक ते होरनें कम्मे बारै जानकारी दिती गेदी ऐ कविता साहित्य च उंदे योगदान दी जानकारी अगले पाठ च विस्तार पूर्वक दिती गेदी ऐ।

#### पाठ-प्रक्रिया

श्री दीनू भाई पंत ते डोगरी साहित्य गी उंदा जोगदान।

- (i) श्री दीनू भाई पन्त दा जीवन-परिचे।
- (ii) श्री दीनूभाई पन्त दियां रचना।
- (iii) श्री दीनू भाई पंत दे डोगरी साहित्य दा मूल्यांकन।

### 7.3.2 ਕਵਿ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਤੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ੍ਯ ਗੀ ਚੰਦਾ ਜੋਗਦਾਨ

#### 1. ਜੀਵਨ-ਪਰਿਚੇ

ਆਧੁਨਿਕ ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਗੀ ਨਮਾਂ, ਪ੍ਰਗਤਿਵਾਦੀ ਮੋਡ ਦੇਣੇ ਆਹਲੇ ਕਵਿ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਤੁਗਗਰ ਦੇ ਲੋਕਪ੍ਰਿਯ ਕਵਿ ਮਨੈ ਜਾਂਦੇ ਨ। ਇੰਦਾ ਜਨਮ 11 ਮੈਰੀ 1917 ਈਂਗ੍ਲੀਸ਼ ਗੀ ਉਥਮਪੁਰ ਜਿਲੇ ਦੇ ਪੈਂਥਲ ਗ੍ਰਾਮ ਚ ਹੋਆ। ਅਪਨੇ ਜੀਵਨ ਦੇ ਮੁੱਢਲੇ ਬਾਰੇ ਇੰਨੋਂ ਤੰਗੀ-ਤੁਰ੍ਸ਼ਾ ਤੇ ਕੌਡੇ ਕਸਲੇ ਅਨੁਭਵਾਂ ਦੀ ਛਤਰਛਾਧਾ ਚ ਕਟੇ ਤੀਸਰੀ ਜਮਾਤਾ ਤਗਰ ਦੀ ਪਢਾਈ ਅਪਨੇ ਗ੍ਰਾਮ ਚ ਗੈ ਕੀਤੀ ਫ਼ਹੀ ਅਗਲੀ ਪਢਾਈ ਆਸਟੈ ਰਿਧਾਸੀ ਭੈਨੂ ਕਸ਼ ਉਠੀ ਗੇ। ਇੰਦੀ ਚੌਹਦੇਂ ਬਾਰੋਂ ਦੀ ਬਰੇਸੂ ਚ ਇੰਦੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦਾ ਕਾਲ ਹੋਈ ਗੇਆ ਤੇ ਰਿਧਾਸੀ ਦਾ ਪਢਾਈ ਛੋਡਿਧੈ ਘਰ ਵਾਪਸ ਆਨਾ ਪੇਆ ਤੇ ਘਰੇਲੂ ਜਿਸ਼ੇਦਾਰਿਧੈਂ ਗੀ ਸਾਂਭਾਨਾ ਪੇਆ। ਫ਼ਹੀ ਖਾਸੈ ਚਿਰੋਂ ਬਾਦ ਇੰਨੋਂ ਸਾਂਕੂਤ ਚ ਪ੍ਰਾਜ਼ ਦੀ ਪਰੀਕਸ਼ਾ ਪਾਸ ਕੀਤੀ ਤੇ 1939 ਚ ਹਿੰਦੀ ਮੂ਷ਣ ਤੇ 1941 ਚ ਪ੍ਰਭਾਕਰ ਦਿਧਾਂ ਪਰੀਕਸ਼ਾ ਬੀ ਪਾਸ ਕਰੀ ਲੇਇਆ।

ਏਹ ਸਾਮਧਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਵਿਕਿਤ ਹੈ ਇਸਕਾਰੀ ਇੰਦੇ ਅਨਦਰ ਹਕ-ਹਕੂਕ ਤੇ ਅਜਾਦੀ ਗੀ ਹਾਸਲ ਕਰਨੇ ਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਬਡੀ ਮੁਖਰਤ ਰੇਹੀ। 1942-43 ਚ ਹਿੰਦੀ ਸਾਹਿਤ੍ਯ ਮੰਡਲ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਤੇ 1944 ਚ ਡੋਗਰੀ ਸੰਸਥਾ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਸਰਬੰਧੀ ਗਤਿਵਿਧਿਧੈਂ ਚ ਇੰਨੋਂ ਬਧੀ ਚਢਿਧੈ ਹਿਸ਼ਾ ਲੇਤਾ ਤੇ ਰਾਸ਼ਟ੍ਰੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਕਨੈ-ਕਨੈ ਮਾਤ੍ਰਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਗੈਰਵ ਗੀ ਬੀ ਪਨਛਾਨੇਆ। ਸ਼ੁਰੂ-ਸ਼ੁਰੂ ਚ ਹਿੰਦੀ ਕਵਿਤਾ ਗੀ ਬੀ ਬਡਾ ਧੋਗਦਾਨ ਦਿਤਾ। 'ਧੁਗ ਚਲਾ' 'ਕੌਨ ਤੁਮ' 'ਸ਼ਹੀਦ ਕੀ ਅਰੋਂ' ਬਗੈਰਾ ਇੰਦਿਆਂ ਪ੍ਰਸਿੰਢ ਹਿੰਦੀ ਕਵਿਤਾ ਨ।

ਇੰਨੋਂ ਜਿਸ ਬੈਲੈਂ ਡੋਗਰੀ ਚ ਕਵਿਤਾ ਲਿਖਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਉਸ ਬੈਲੈਂ ਰਿਧਾਸਤ ਦੇ ਸਿਧਾਸੀ ਹਲਕੋਂ ਚ ਬਡੀ ਤਨੋ-ਤਨੀ ਤੇ ਖੌਦਧਲ ਦਾ ਵਾਤਾਵਰਣ ਹਾ। ਭਲੋਕੀ ਜਨਤਾ ਸਾਮਨੀ ਸ਼ਾਸਨ ਦਿਧਿਆਂ ਮੁਜਰਮਾਨਾ ਲਾਪਰਵਾਹਿਧੈਂ ਦਾ ਸ਼ਕਾਰ ਹੋਨੇ ਕਾਰਣ ਅਪਨੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਹਕੂਕੋਂ ਦਾ ਤਸਵੁਰ ਕਰਨੇ ਚ ਬੀ ਕਾਸਰ ਹੀ। ਡਿੰਡੈ ਪਰ ਭੁਕਖੈ ਦੀ ਪਟਟੀ ਬਾਨੀਧੈ, ਤਨੈ ਪਰ ਗਰੀਬੀ ਦੀ ਚਾਦਰ ਪਲੇਟਿਧੈ, ਬੇਖਬਰੀ ਤੇ ਅੰਧਵਿਸ਼ਵਾਸੋਂ ਦੇ ਕੋਠੂ ਚ ਸਿਰ ਛਪੈਲਿਧੈ ਸਾਹੋਂ ਦੀ ਤਨਦੈ ਕਨੈ ਲਟਕੀ ਦੀ ਹੀ ਜੇ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਨੇ ਮੌਕੇ ਦੀ ਨਜ਼ਕਤ ਸਮਝਾਦੇ ਹੋਈ ਅਪਨੇ ਸਰਲ ਅੰਦਾਜ ਚ ਅਵਾਮ ਗੀ ਚੁਪੀ ਤੇ ਬੇਖਬਰੀ ਦੀ ਨੀਂਦਰ ਤਧਾਗਨੇ ਲੇਈ ਚੌਕਸ ਗੈ ਨੇਈ ਕੀਤਾ ਬਲਕੇ ਇੰਨੋਂ ਬੇ-ਨਾਈਧੈਂ, ਬੇਪਰਵਾਹਿਧੈਂ ਦੇ ਖਲਾਫ ਬਗਵਤੀ ਸੁਰ ਬਜ਼ਾਲਨੇ ਲੇਈ ਪ੍ਰੇਰਤ ਕੀਤਾ, ਉਕਸਾਧਾ। ਇੰਦੇ ਜੀਵਨ ਦਾ ਰੋਜਗਾਰੀ ਪਕਖ ਬਡਾ ਸਾਂਦਰਥਪੂਰਣ ਰੇਹਾ। ਸ਼ੁਰੂ-ਸ਼ੁਰੂ ਚ ਟੇਵੇ-ਟੀਪਾਂ ਬਨਾਨੇ, ਟਧੂਸ਼ਾਨਾਂ ਪਢਾਨੇ, ਪ੍ਰਾਇਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਚ ਨੌਕਰੀ, ਸਮਾਦਾਨ ਦੇ ਲੋਹਕੇ-ਮੁਟਟੇ ਕਮਮ, ਰੇਡਿਯੋ ਸਟੇਸ਼ਨ ਜਸਮੂ ਚ ਸਕ੍ਰਿਪਟਰਾਇਟਰ ਬਗੈਰਾ ਦੀ ਨੌਕਰੀ ਕਰਨੀ ਪੇਈ ਤੇ ਫ਼ਹੀ ਪਕਕੇ ਤੌਰ ਪਰ 'ਪਰਤਿਧੈ ਬਸਾਓ' ਮੈਹਕਮੋਂ ਚ ਮੁਲਾਜਮਤ ਮਿਲੀ। ਅਪਨੀ ਦਿਧਾਨਤਦਾਰੀ ਤੇ ਕਰਮਤਤਾ ਦੇ ਗੈ ਫਲਸਰੂਪ ਇਹ ਡਿੰਟੀ ਪ੍ਰਾਵਿਸ਼ਿਯਲ ਑ਫਿਸਰ ਬਨੇ ਪਰ ਇਤਖੂਨ ਦਾ ਸੇਵਾ ਨਿਕੂਤ ਹੋਨੇ ਪਰੈਨਤ ਇੰਦਾ ਸਾਖਾਥ ਢਿਲਲਾ ਜਨ ਰੈਹਨ ਲਗਾ। ਇਕ-ਦੌ ਬਾਰੀ ਦਿਲੈ ਦਾ ਦੌਰਾ ਬੀ ਪੇਆ। ਬ, 23 ਮਾਰਚ 1992 ਈਂਗ੍ਲੀਸ਼ ਗੀ ਪੈਨੇ ਆਹਲਾ ਦਿਲੈ ਦਾ ਦੌਰਾ ਇੰਨੋਂਗੀ ਮੁਹੇਸ਼ਾਂ ਲੇਈ ਸਾਫੇ ਸ਼ਾ ਖੱਡਾਈ ਗੇਆ।

**ਰਚਨਾਂ :-** ਜਿਥੂਨੂ ਤਗਰ ਪਤ ਹੁੰਦੇ ਕ੃ਤਿਤ ਦਾ ਸਰਬਥ ਏ। ਇੰਦਾ ਵਿਕਿਤਤ ਤੇ ਇੰਦਾ ਕ੃ਤਿਤ ਦੋਏ ਇਕ-ਦੂਜੇ ਦੇ ਪੂਰਕ ਲਭਦੇ ਨ। ਜਿੰਨੋਂਗੀ ਇਕ-ਦੁਏ ਕਥਾ ਬਕਖ ਕਰਿਧੈ ਕੋਈ ਬੀ ਤਸਵੀਰ ਪੂਰੀ ਨੇਈ ਤਥਾਰੀ ਸਕਦੀ। ਜੇ ਕਿਸ ਸੋਚੇਆ -ਧੋਰਾ ਤੇਰੇ ਅਮਲ ਚ ਆਂਹਦਾ ਤਸ੍ਸੈ ਗੀ ਕਲਮ ਰਾਹੋਂ ਵਿਕਤ ਕੀਤਾ ਤੇ ਵਾਣੀ ਰਾਹੋਂ ਵੁਹਾਸ਼ਸਰੋਆ ਡੋਗਰੀ ਚ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਹੋਏ ਕਵਿਤਾ ਨਾਟਕ ਤੇ ਅਨੁਵਾਦ ਦੇ ਖੇਤਰਾ ਚ ਅਪਨਾ ਨੁਮਾਂਧਾਂ ਧੋਗਦਾਨ ਦਿਤੇ ਦਾ ਏ। 'ਗੁਤਲੂ

‘ਮੰਗੂ ਦੀ ਛੀਲ ‘ਕੀਰ ਗੁਲਾਬ’ ਤੇ ‘ਦਾਦੀ ਤੇ ਮਾਂ’ ਏਹ ਚਾਰ ਕਾਵਿ ਰਚਨਾਂ ਨ। ਸੱਸਕ੍ਰਤ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੰਦ ਨਾਟਕਕਾਰ ਭਾਸ ਦੇ ਪ੍ਰਤਿਮਾ ਨਾਟਕ ਦਾ ਡੋਗਰੀ ਅਨੁਵਾਦ ਬੀ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਹੋਰੋਂ ਕੀਤੇ ਦਾ ਐ। ਇਸਦੇ ਇਲਾਗਾ ‘ਮਧੁਕਣ’ ਨਾਂਡ ਦੀ ਕਾਵਿ—ਪੋਥੀ ਦਾ ਸਮਾਦਨ ਤੇ ਕਿਸ਼ —ਇਕ ਏਕਾਂਕੀ ਨਾਟਕੋਂ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦਾ ਸ਼੍ਰੇਯ ਬੀ ਪਨਤ ਹੋਰੋਂ ਗੀ ਜਾਂਦਾ ਐ।

### 7.3.3 ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਹੁਨਦੇ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਰ

ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਦੁਗਗਰ ਦੇ ਸਚ੍ਚੇ ਜਨ ਕਵਿ ਹੇ ਜਿਨੋਂ ਜਨਸਾਧਾਰਣ ਦੀ ਗਲਲ ਉੱਦੀ ਗੈ ਭਾਸਾ ਚ ਆਖਿਧੈ ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਗੀ ਜਨ—ਜਨ ਤਗਰ ਪਯਾਨੇ ਦੀ ਸਰਾਹਨੇ ਜੋਗ ਭੂਮਿਕਾ ਨਭਾਈ। ਉਤਥੈ ਗੈ ਨਾਟਕਕਾਰ ਦੇ ਰੂਪਾ ਚ ਬੀ ਉੱਦਾ ਚੇਚਾ ਥਾਹਰ ਐ। ਡੋਗਰੀ ਦਾ ਪੈਹਲਾ ਨਾਟਕ ਜੇਹੜਾ ਛਪਿਧੈ ਸਾਮਨੈ ਆਯਾ ਤੇ ਜੇਹਦੇ ਕਰੀ ਡੋਗਰੀ ਰਾਗਮਚ ਦੀ ਲੀਹ ਪੇਈ ਓਹ ‘ਨਮਾਂ ਗ੍ਰਾ’ ਜਿਸਗੀ ਸਰਵਸ਼੍ਰੀ ਰਾਮਨਾਥ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰੀ, ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਤੇ ਰਾਮ ਕੁਮਾਰ ਅਬਰੋਲ ਹੋਰੋਂ ਸਾਂਝੇ ਤੌਰ ਪਰ ਲਿਖੇਆ। ਏਹ ਨਾਟਕ 1957 ਬਾਰੇ ਚ ਛਪੇਆ ਤੇ ਕੋਈ ਬਾਰੀ ਜਮ੍ਮੂ ਸ਼ੈਹਰ ਤੇ ਇਸਦੇ ਆਲੇ—ਦੁਆਲੇ ਦੇ ਗ੍ਰਾਏ ਚ ਖੇਡੇਆ ਗੇਆ ਤੇ ਸਰਾਹੇਆ ਗੇਆ। ‘ਨਮਾਂ ਗ੍ਰਾ’ ਇਕ ਪ੍ਰਤੀਕਾਤਮਕ ਨਾਂਡ ਐ ਉਸ ਨਰੋਏ ਸਮਾਜ ਦਾ, ਜੇਹੜਾ ਊਚ—ਨੀਚ, ਛੂਹਤ ਛਾਤ, ਸਮਾਜੀ ਨਾਬਰੋਬਰੀ, ਸ਼ੋਸ਼ਨ, ਪ੍ਰਥਾਚਾਰ ਤੇ ਅੜਾਨਤਾ ਦਿਧੈ ਜਾਂਦੀਂ ਥਮਾਂ ਸੁਕਤ ਹੋਏ ਤੇ ਜੇਹੜਾ ਅਪਨੇ ਬਸਨੀਕੋਂ ਗੀ ਸੁਖਾ ਦਾ ਸਾਹ ਲੈਣ ਦੇਇ ਤੇ ਹੋਨੇ ਜੀਨੇ ਤੇ ਅਗਡੇ ਬਧਨੇ ਦੀ ਬਤਾ ਪਰ ਟੁਰਨੇ ਲੇਈ ਉੱਦੇ ਚ ਨਮਾਂ ਉਦਸ ਤੇ ਹੌਸਲਾ ਭਰੈ। ਦਰਅਸਲ ਅਜਾਦੀ ਪਰੈਨਤ ਸਮੂਲਚੋਂ ਭਾਰਤ ਚ ਨਮੀਂ ਚੇਤਨਾ ਤੇ ਜਨ ਜਾਗਰਣ ਦੀ ਲੈਹਰ ਚਲਾ ਕਰਦੀ ਹੀ ਤੇ ਉਸੈ ਨਰੋਏ ਜਾਬੇ ਦਾ ਜੋਸ਼ ਇਨੋਂ ਨਾਟਕਕਾਰੋਂ ਦੇ ਅੰਦਰ ਬੀ ਛੁਆਲੇ ਲੈ ਕਰਦਾ ਹਾ। ਇਸ ਨਾਟਕ ਦੀ ਰਚਨਾ ਪਿਛੋਂ ਬੀ ਇੰਦਾ ਇੰਧੈ ਉਦੇਸ਼ਧ ਹਾ ਜੇ ਦੁਗਗਰ ਦੇ ਗ੍ਰਾਈ ਸਮਾਜ ਚ ਫੈਲੀ ਦਿਧੈ ਕਬੈਹਤੋਂ ਬਾਰੈ ਅਵਾਮ ਗੀ ਜਾਗਰੂਕ ਕੀਤਾ ਜਾ ਤੇ ਉੱਦਾ ਬਰੋਧ ਕਿਧੈ ਇਕ ਸਾਫ ਸ਼ਫਾਫ ਸਮਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਬਾਰੈ ਚੇਤਨਾ ਜਾਗਾਈ ਜਾ। ਪਾਂਝੋਂ ਅਂਕੇ ਪਰ ਅਧਾਰਤ ਇਸ ਨਾਟਕ ਦਾ ਕਥਾਨਕ ਸ਼ੁਰੂ, ਮਜ਼ੌਟੈ ਤੇ ਖੀਰ ਤ੍ਰੀਨੋਂ ਅਵਸਥਾਏਂ ਚ ਪੂਰੀ ਚਾਲਲੀ ਵਿਕਾਸ ਤੇ ਗਠੋਏ ਦਾ ਐ ਕੀ ਜੇ ਸ਼ੁਰੂ ਥਮਾਂ ਖੀਰਾ ਤਗਰ ਨਾਟਕ ਚ ਗਤਿ ਬਨੀ ਰੌਹਦੀ ਐ। ਜਿਸ ਕਾਰਣ ਉਤਸੁਕਤਾ ਬੀ ਬਰੋਬਰ ਬਨੀ ਦੀ ਰੌਹਦੀ ਐ।

1966 ਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਨਾਟਕ ‘ਸਰਪਂਚ’ ਨਾਂਡ ਸਿਰਫ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਹੁਨ੍ਹੀ ਬੇਹਤਰੀਨ ਨਾਟਕੀ ਰਚਨਾ ਐ ਬਲਕੇ ਸਮੂਲਚੇ ਡੋਗਰੀ ਨਾਟਕ ਸਾਹਿਤਿ ਦੀ ਇਕ ਉਤਕੂਝਟ ਤੇ ਅਮਰ ਰਚਨਾ ਐ। ਇਸ ਨਾਟਕ ਦਾ ਕਥਾਨਕ ਦੁਗਗਰ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੰਦ ਲੋਕਨਾਥਕ ‘ਦਾਤਾ ਰਣਪਤ’ ਦੀ ਕਾਰਕ ਉਪਰ ਅਧਾਰਤ ਐ।

ਇਸ ਨਾਟਕ ਦੀ ਰਚਨਾ ਪਿਛੋਂ ਪੰਚਾਧਤੀ ਰਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਤੇ ਉਸਗੀ ਬਲ ਦੇਨੇ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸੇਹੀ ਹੋਂਦੀ ਐ। ਪਰ ਨਾਟਕਕਾਰ ਦੀ ਸੂਸ਼ਬੂੜ ਤੇ ਉਸਦੀ ਕਲਾਕਾਰੀ ਦਾ ਕਮਾਲ ਐ ਜੇ ਉਨੋਂ ਨਾਟਕ ਦਾ ਅਧਾਰ ਉਸ ਘਟਨਾ ਗੀ ਬਨਾਯਾ ਜਿਸਦੀ ਛਾਪ ਦੁਗਗਰ ਦੇ ਜਨ ਜਨ ਦੇ ਅੰਤਸ ਉਪਰ ਅਪਨਾ ਅਨਮਿਟ ਅਸਰ ਛੋਡੀ ਗੇਈ ਦੀ ਹੀ ਤੇ ਉਪਰਾ ਨੇਹੀਂ ਕਿਰਦਾਰ —ਨਗਾਰੀ ਜਿਸਦਾ ਹਰ ਰੂਪ ਤੇ ਹਰ ਅਦਾ ਦਰਸ਼ਕਾਂ ਗੀ ਵਾਨੀ ਗੈ ਨੇਈ ਰਖਦੀ ਸਾਗੂਆਂ ਮਨੋਰਜਨ ਦੇ ਕਨੈ ਕਨੈ ਉਤਸੁਕਤਾ ਦੀ ਭੁਕਖ ਜਗਾਂਦੀ ਜਾਂਦੀ ਐ।

ਪਨਤ ਹੁਂਦਾ ਇਕ ਹੋਰ ਸਪੂਰਾ ਨਾਟਕ ‘ਅਧੋਧਾ’ ਰਾਮਾਧਣ ਦੀ ਕਥਾਵਸਤੁ ਪਰ ਅਧਾਰਤ ਹੋਂਦੇ ਹੋਈ ਬੀ ਆਈ ਗ੍ਰੂਨਿਕ ਜੀਵਨ ਦਿਧੈ ਕਦਰੋਂ ਦਾ ਇਕ ਸਥਾਕਤ ਪ੍ਰਮਾਣ ਐ। ਏਹ ਨਾਟਕ 1984 ਬਾਰੇ ਚ ਛਪੇਆ ਤੇ 1985 ਬਾਰੇ ਚ ਇਸਗੀ ਸਾਹਿਤਿ ਅਕਾਦਮੀ ਪੁਰਸ਼ਕਾਰ ਕਨੈ ਸਮਾਨੇਆ ਗੇਆ। 95 ਸਫੋਂ ਦਾ ਏਹ ਨਾਟਕ ਪਾਂਝੋਂ ਦਕਖੋਂ ਚ ਬਡੋਏ ਦਾ ਐ ਤੇ ਇਕਕੈ ਸੈਟ ਪਰ ਖੇਡੇਆ ਜਾਈ ਸਕਦਾ ਐ। ਸਮੂਲਚੋਂ ਨਾਟਕ ਦਾ ਘਟਨਾ ਸਥਲ ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਦੀ ਜਨਮ—ਭੂਮਿ ਅਧੋਧਾ

ਕਨੈ ਸਰਬਬੰਧਤ ਏ ਇਸ ਕਰੀ ਇਸਦਾ ਨਾਂ 'ਅਯੋਧਾ' ਰਕਖੇਆ ਗੇਆ ਏ। ਕਥਾਨਕ ਦੀ ਸੀਰ ਬਸ਼ਕ ਭਾਮੋਂ ਪੌਰਣਿਕ ਕਾਵਿ ਰਾਮਾਯਣ ਦੇ ਕਥਾਸੂਤ੍ਰ ਥਮਾਂ ਬਗਾਈ ਗੇਦੀ ਏ ਪਰ ਇਸ ਚ ਇਕ ਬਕਖਰਾਪਨ ਤੇ ਨਮਾਂ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਏ। ਪਨਤ ਹੋਰੋਂ ਆਧੁਨਿਕ ਸੋਚ ਤੇ ਵਿਜ਼ਾਨੀ ਪਰਿਵੇਸ਼ ਦੀ ਸਾਰ ਸਮਸਦੇ ਹੋਈ ਰਾਮਾਯਣੀ ਕਾਲ ਦੀ ਪਰਾਨੀ ਤੇ ਬੋਸੀਦਾ ਸਮਾਜੀ ਕਦਰੋਂ ਦੀ ਲੀਕ ਕਥਾ ਹਟਿਥੈ ਅਪਨੀ ਕੁਸ਼ਲ ਸਿਰਜਨਾ— ਸ਼ਕਿਤ ਕਨੈ ਮੈਲਿਕਤਾ ਦਾ ਰੰਗ ਭਰਨੇ ਦਾ ਪ੍ਰਯਾਸ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ।

ਕਕੇਈ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਚ ਪਰਮਘਾ ਕਥਾ ਬਕਖਰੀ ਧਾਰਣਾ ਗੀ ਕਾਧਮ ਕਰਨੇ ਆਹਲਾ ਏਹ ਇਕ ਸਰੋਖੜ ਨਾਟਕ ਏ ਜਿਸਦਾ ਸਾਹਿਤਿਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕਨੈ ਮਹਤਵਪੂਰਣ ਥਾਹਰ ਏ ਜੇਹਡਾ ਪਾਠਕੋਂ ਗੀ ਕੇਈ ਪਰਾਨਿਧੋਂ ਲੀਕੋਂ ਦੇ ਤਾਰਿਕਿ ਜਵਾਜ ਦਸਦਾ ਏ ਤੇ ਅਗਾਡੀ ਸੋਚ ਦੇ ਦਰਵਾਜੇ ਖੋਲਦਾ ਏ।

'ਸੰਸਕ੍ਰੂਤ ਨਾਟਕਕਾਰ ਭਾਸ ਹੁੰਦੇ ਆਸੇਆ ਰਚੇ ਗੇਦੇ 'ਪ੍ਰਤਿਮਾ' ਨਾਟਕ ਦਾ ਡੋਗਰੀ ਅਨੁਵਾਦ ਬੀ ਪਨਤ ਹੋਰੋਂ ਡੋਗਰੀ ਭਾਸਾ ਦੇ ਸੈਂਹਜ ਪ੍ਰਵਾਹ ਚ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ਤੇ ਉਸ ਚ ਬੀ ਕਕੇਈ ਦਾ ਕਿਰਦਾਰ ਬੇਗੁਨਾਹ ਸਾਬਤ ਕੀਤਾ ਗੇਦਾ ਏ। ਖਾਬੈ ਅਯੋਧਾ ਦੀ ਰਚਨਾ ਚ ਪਨਤ ਹੋਰੋਂ ਗੀ ਉਸੈ ਭਾਵਨਾ ਦੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਰੇਹੀ ਹੋਏ।

'ਮਲਾਟੀ' ਨਾਂਡ ਦਾ ਏਕਾਂਕੀ ਜੇਹਡਾ ਅਕੈਡਮੀ ਪਾਸੇਆ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ 'ਡੋਗਰੀ ਏਕਾਂਕੀ' ਨਾਂ ਦੀ ਪੋਥੀ ਚ ਛਹੋਂ ਦਾ ਏ, ਐਤਿਹਾਸਿਕ ਏਕੋਕਿਧੋਂ ਦੀ ਜਮਤਾ ਚ ਰਕਖੇਆ ਜਾਈ ਸਕਦਾ ਏ। ਇਸ ਚ ਮਿਧਾਂ ਡੀਡੀ ਦੀ ਭਾਦਰੀ ਦੇ ਕਿਸੇ ਦਾ ਵਰਣਨ ਏ। ਏਕਾਂਕੀ ਦੀ ਭਾਸਾ ਵਜਨਦਾਰ ਏ ਤੇ ਇਸ ਚ ਵੀਰ ਰਸ ਦੀ ਗੁਹਡੀ ਛਾਪ ਏ। ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਹੋਰੋਂ ਜਿਤ੍ਥੈ ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਗੀ ਜਨ-ਜਨ ਦੇ ਹਿਰਦੇ ਚ ਬਸਾਦੇ ਹੋਈ ਆਧੁਨਿਕ ਕਵਿਤਾ ਦੀ ਧਾਰਾ ਗੀ ਮੁਸਲਸਲ ਰਖਾਨੀ ਦਿੱਤੀ ਉਥੋਂ ਸਰਲ-ਸਭਾਊ ਜਨਤਾ ਆਸਤੈ ਚਿਤ ਛੂਹਨੇ ਨਾਟਕ ਸਿਰਜਿਯੇ ਰੰਗਮੰਚ ਦੀ ਪਰਮਘਾ ਗੀ ਬੀ ਠੋਸ ਧਰਾਤਲ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤਾ।

#### 7.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਫਿਥੈ ਵਿਦਾਰਥਿਧੋਂ ਗੀ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਮਨੇ-ਪਰਮਨੇ ਦੇ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਕਵਿ-ਲੇਖਕ ਦੀਨੂਭਾਈ ਪਨਤ ਹੁੰਦੇ ਸਾਹਿਤਿਕ ਜੋਗਦਾਨ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਦੀਨੂਭਾਈ ਪਨਤ ਹੁੰਦਾ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ ਚ ਚੋਚਾ ਥਾਹਰ ਏ ਤੇ ਉਂਦਾ ਸਾਹਿਤ ਡੋਗਰੀ ਭਾਸਾ ਦੀ ਗੈਂਹ ਗੀ ਅਗਡੇ ਬਧਾਂਦਾ ਰੇਹਾ ਏ। ਅਪਨੇ ਜੀਵਨ ਚ ਕੇਈ ਚਾਲਲੀ ਦਿਧੋਂ ਕਠਿਨਾਇਈ ਤੇ ਮੁਸ਼ਕਲਾਤੋਂ ਕਨੈ ਨਿਭੜਦੇ ਹੋਈ ਉਂਦਾ ਜੀਵਨ ਵਸ਼ਕ ਅਸਤ-ਵਾਸਤ ਰੇਹਾ ਪਰ ਵਹੀ ਬੀ ਤਨੋਂ ਡੋਗਰੀ ਭਾਸਾ ਤੇ ਸਾਹਿਤ ਆਸਤੈ ਅਪਨਾ ਅਨਮੁਲਾ ਜੋਗਦਾਨ ਦਿੱਤਾ। ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਹੁੰਦਿਆ ਸਾਰਿਆਂ ਰਚਨਾ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤ ਦਿਧਾਂ ਸਰੋਖੜ ਰਚਨਾ ਨ।

#### 7.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

- |    |        |    |                   |    |            |
|----|--------|----|-------------------|----|------------|
| 1) | ਨਮੁਲਲੇ | 2) | ਵਿਕਿਤਤਵ ਤੇ ਕੁਤਿਤਵ | 3) | ਪ੍ਰਗਤਿਵਾਦੀ |
| 4) | ਮੁਢਲੇ  | 5) | ਘਰੇਲੂ             | 6) | ਤਨੋ-ਤਨੀ    |
| 7) | ਖੋਲ    | 8) | ਸਕ੍ਰਿਪਟਰਾਈਟਰ      | 9) | ਬੁਹਾਸ਼ਸਰੇਆ |

- 10) जागरुक      11) नरोए      12) अनमिट  
13) ऐतिहासिक

**7.6 अभ्यास आस्तै सोआल**

1) दीनूभाई पंत हुंदा जीवन परिचे लिखां।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....

2) दीनू भाई पंत हुंदियां रचना बारै जानकारी देओ।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....

3) दीनू भाई पंत हुंदे डोगरी साहित्य दा मूल्यांकन करो।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....

- 4) ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਹੁਂਦੀ ਰਚਨਾ ਸਟਪਚ ਦਾ ਸਾਰ ਅਪਨੇ ਸ਼ਬਦੋ ਚ ਲਿਖੋ
- .....
- .....
- .....
- .....
- .....
- .....

### 7.7 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾ

ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ : ਡਾਂ. ਜਿਤੇਨਦਰ ਉਧਮਪੁਰੀ

ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ : ਸ਼ਿਵਨਾਥ

ਸਾਡੇ ਸਾਹਿਤਿਕਾਰ ਭਾਗ-1 : ਵੀਣਾ ਗੁਪਤਾ

.....0.....

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102**

**Unit - II**

**Semester - I**

**Lesson : 8**

---

ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਸਾਹਿਤ्य ਗੀ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ

8.0 ਰੂਪਰੇਖਾ

8.1 ਉਦੇਸ਼ਧਾਰਾ

8.2 ਪਾਠ—ਪਰਿ

8.3 ਪਾਠ—ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਆ

8.3.1 ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਸਾਹਿਤ्य ਗੀ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਦਾ ਯੋਗਦਾਨ

8.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

8.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

8.6 ਅਭ്യਾਸ ਆਸਤੈ ਸੋਆਲ

8.7 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਂ

8.1 ਉਦੇਸ਼ਧਾਰਾ

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿਥੈ ਵਿਦਾਰਥੀਂ ਗੀ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਸਿਰਮੌਰ ਕਵਿ ਸ਼੍ਰੀ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਹੁੰਦੇ ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ—ਸਾਹਿਤਿ ਗੀ ਤੁਂਦੇ ਨਮੂਲੇ ਯੋਗਦਾਨ ਬਾਰੈ ਵਿਸ਼੍ਵਤ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਗ ਤੇ ਇੰਦੇ ਕਵਿਤਾ ਸਾਹਿਤਿ ਬਾਰੈ ਚ ਵਿਦਾਰਥੀ ਕੁਸੈ ਬੀ ਕਿਸਮਾ ਦੇ ਸੁਆਲੋਂ ਦੇ ਉਤਤ ਦੇਨੇ ਚ ਸਮਰਥ ਹੋਣ।

## 8.2 पाठ-परिचे

इस पाठ च श्री दीनू भाई पंत हुंदे कविता-साहित्य गी योगदान सरबन्धी लोड़चदी जानकारी दित्ती गेदी ऐ। उंदे खंड काव्य बीर गुलाब दी जानकारी अगले पाठ च दित्ती गेदी ऐ

## 8.3 पाठ-प्रक्रिया

### 8.3.1 डोगरी कविता साहित्य गी दीनू भाई पंत दा योगदान

#### (i) गुत्तलूं

इस गल्ला च दो राइ नेई जे दीनू भाई पन्त होरें पंड हरदत शास्त्री हुंदे कशा प्रभावत होइयै लिखना शुरु कीता पर फही बी इंदी कविता आधूनिक डोगरी कविता गी प्रगतिशील मोड़ देने च नींह –पत्थर दी भूमिका नभांदी ऐ। दीनू भाई पन्त हुंदी कविता उंदी सूझाबूझ समझों जां उंदा सुआतम समें दी दुखलदी रग थ'मदे होई जन जन दे हिरदे च जाई बस्सी, छूहत-छात ते ऊच-नीच दी भावना, बरादरीवाद, सरकारी बगारां, शाहें-बजियें दियां मनमानियां ते रावणी कारस्तानियां धर्म दे नांड उपर फैले दे झूठे आडम्बर ते बेसीदा खोखलें रस्मो-रवाज जनेहियें सियासी ते समाजी बुराइयें अम्बर सिरा पर चुक्के दा हा। समें दा तकाजा हा जे इनें बुराइयें दे खलाफ बगावती मुहिम चलाने आस्तै लोकें गी सोहगा कीता जा ते उंदे अंदर अपने हक्के-हक्कूकें दी तलब जगाई जा। पन्त हुन्दी उस बेल्ले दी कविता च क्रान्तिकारी सुर बड़ा मुखरत हा।

सत्तें कविताएं दा संग्रैह ‘गुत्तलूं’ जेहङ्ग 1948 बरे च प्रकाशित होआ उस च प्रकाशत, ‘मरने कोला बी मन्दा लोको जीना इस गुलामी दा’ कविता लोकें गी गुलामी, बे –खबरी, शोशन ते अत्याचारें दी इस जुल्मी कैद दियां सौंगलां त्रोड़िये अजाद वातावरण च साह लैने आस्तै प्रेरत्त गै नेई उत्तेजत बी करदी ऐ।

“जिसने कदें बुआल निं खाद्वा,  
धिग–धिग उस जवानी दा  
चौरै–पैहर सिरै पर खड़कै  
कुंडा साहब सलामी दा  
मरने कोला बी मन्दा लोको  
जीना इस गुलामी दा”

इस चाल्ली ‘उट्र मजूरा जाग करसाना तेरा बेला आया ओ’ कविता राहें बी कम्म करने आहले मेहनतकश कसानें ते मजूरें गी अपने हक-ल्हाल दा फल हासल करने आस्तै संघर्ष करने दा

ਸਾਦਦਾ ਗੈ ਨੇਈ ਦਿੱਤਾ, ਬਲਕੇ ਪਰਮੇਸਰ, ਅਲਲਾ ਮਿਧਾਂ ਤੇ ਸੁਰਗ-ਨਰਕ ਦਾ ਫਢ ਬਨਾਇਥੈ ਠੰਗੀ ਦਾ ਜਾਲ ਬਛਾਨੇ  
ਆਹਲੇ ਪਨਤੋਂ ਤੇ ਮੁਲਲੋਂ ਕਥਾ ਬੀ ਚੌਕਸ ਕੀਤਾ।

“ਤੇਰੇ ਖੂਨ ਪਸੀਨੇ ਕਨ੍ਹੇ ਰਹਾਮੀ ਐਥ ਮਨਾਂਦੇ ਓ  
ਅਲਲਾ ਮਿਧਾਂ ਭਲਾ ਕਰੇਗਾ ਤੈਕੀ ਮੁਟਟ ਬਨਾਂਦੇ ਓ  
ਸੁਰਗ ਨਰਕ ਦੇ ਸੁਖਾਨੇ ਦਸ਼ੀ ਤੇਰਾ ਮਨ ਪਰਚਾਯਾ ਓ  
ਉਠਠ ਮਜੂਰਾ ਜਾਗ ਕਰਸਾਨਾ ਤੇਰਾ ਬੇਲਾ ਆਧਾ ਓ”

“ਗੁਤਲ੍ਹੁਂ” ਪੋਥੀ ਦਾ ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਤੇ ਫਾਰਸੀ ਦੌਨੋਂ ਲਿਪਿਯਾਂ ਚ ਜ਼ਹਾਰੋਂ ਦੀ ਤਦਾਦ ਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਹੋਆ ਇਤਥੁੰ  
ਤਗਰ ਜੇ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਚ ਬੀ ਇਸਦਾ ਤਰਜਮਾ ਕੀਤਾ ਗੇਅ। ਇਸ ਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ “ਸ਼ੈਹਰ ਪੈਹਲੋ ਪੈਹਲ ਗੇ ”  
ਨਾਂਡ ਦੀ ਲਸੀ ਕਵਿਤਾ ਗ੍ਰਾਈ ਤੇ ਸ਼ੈਹਰੀ ਜੀਵਨ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨਦੇਹੀ ਕਰਨੇ ਆਹਲੀ ਕਵਿਤਾ ਏ। ਕਵਿ ਦੀ ਸੁਖਰ  
ਤੇ ਤ੍ਰਿਕਖੀ ਅਮਿਤਿਆਕਿਤ ਦਿਕਿਖਿਧੈ ਲਗਦਾ ਏ ਜੇ ਅਥਕੋਂ ‘ਤੇਜਾਂ’ ਦੀ ਅਨੁਭੂਤਿ ਦਾ ਭਾਗੀਦਾਰ ਓਹ ਆਪੂਂ ਏ। ਕਵਿਤਾ  
ਦੇ ਸੁਣਦਲੇ ਬੋਲ ਗੈ ਇਨ੍ਹੇ ਸਾਦੋਂ ਤੇ ਨਿਗਰ ਪਕਡ ਆਹਲੇ ਨ, ਜੇ ਪੈਨਪਟਟ ਪਾਠਕ ਦਾ ਧਿਆਨ ਅਪਨੀ ਬਕਖੀ  
ਖਿੜਕੀ ਲੈਂਦੇ ਨ

“ਤੁਕੀ ਗਲਲ ਕੇਹ ਸਨਾਨੀ  
ਅਊ ਕਿਥ ਸੁਂਢਾ ਦਾ ਗੈ ਰਹਾਮੀ  
ਘਰ ਕਮਮ ਹਾ ਬਤਹੇਰਾ  
ਸਾਰੇ ਸਿਰ ਖਾਨ ਮੇਰਾ  
ਕੁਦੈ ਗੋਡੀ ਕੁਦੈ ਘਾਡ  
ਕੁਦੈ ਕਨਕ ਮਕਕਾਂ ਰਾਹ  
ਕੁਦੈ ਬਾਹ ਕੁਦੈ ਡਾਹ  
ਜਿਂਦ ਫਸੀ ਗੇਈ ਫਾਹ”

ਏਹ ਕਵਤਾ ਲਖੋਨੇ ਦੇ ਕਿਛ ਸਮੇਂ ਚ ਗੈ ਡੁਗਰ ਦੀ ਹਰ ਨੁਕਕਰਾ ਜਾਈ ਪੁਜ਼ੀ , ਜਿਸਨੈ ਲੋਕੋਂ ਦੀ ਜੀਮੋਂ  
ਤੇ ਮਨੋਂ ਪਰ ਕਬਜ਼ਾ ਕਰੀ ਲੇਆ ਤੇ ਲੋਕੋਂ ਗੀ ਅਪਨੇ ਅਨੰਦਰ ਝਾਂਕੀ ਮਾਰਨੇ ਲੇਈ ਮਜ਼ਬੂਰ ਕੀਤਾ। ਅਪਨੇ ਪਰ ਆਪੂਂ  
ਹਸ਼ਨੇ ਦੀ ਪ੍ਰਵੂਤਿ ਗੈ ਕੁਸੈ ਸ਼ਵਸਥ ਸਮਾਜ ਦੀ ਅਲਾਮਤ ਹੁਦੀ ਏ। “ਸ਼ੈਹਰੇ ਪੈਹਲੋ—ਪੈਹਲ ਗੇ, ਨੈ ਏਹ ਕਮਮ  
ਕੀਤਾ ਹਾ। ਏਹ ਕਵਿਤਾ ਪਢੋ—ਲਿਖੋ ਤੇ ਅਨਪਢ ਸਭਨੋਂ ਦੀ ਜੀਹਗਾ ਚਢੀ ਦੀ ਹੀ। ਇਸ ਕਵਿਤਾ ਦੀ ਸਾਦਗੀ ਗੈ  
ਇਸਦਾ ਸਾਰੋਂ ਸ਼ਾ ਬਢ਼ਾ ਗੁਣ ਏ। ਇਕ ਗ੍ਰਾਈ ਦੇ ਸ਼ੈਹਰੀ ਚਕਾਚੌਂਧ ਚ ਭਰਮੋਈ ਜਾਨੋਂ ਦਾ ਵਰਣਨ ਸਰਲ—ਸਾਦੀ, ਸੁਹਾਵਰੋਂ  
—ਖੁਆਨੋਂ ਆਹਲੀ ਭਾਸ਼ਾ ਚ ਤੇ ਉਪਰਾ ਪੁਲ੍ਹੇ ਸੁਹਾਂ ਗਲਲ ਆਖਨੇ ਦੇ ਹਾਸੋਂ —ਵਧਾਂ ਪੂਰ੍ਣ ਅਨੰਦਾਜ ਚ ਹੋਏ ਦਾ ਏ:-

“ਤੇਜਾਂ ਚਟ੍ਟੈ ਪੁਟਟੀ ਕ੍ਰਟੀ ਬਡੇਆ ਕਪਡੇ ਦੀ ਹਟਟੀ  
ਜਿਤਥੈ ਅਨੰਦਰ ਬਾਹਰ ਨੇਹ ਸੀਮ ਮਿਟਿਟਿਆ ਦੀ ਰਕਖੀ  
ਭਲੇਆਂ ਸਚੇ ਸੁਚੇ ਲਭਨ ਨੁਹਾਡੇ ਨਕਕ—ਸੁਂਹ ਅਕਖੀਂ

ਬਿਟ-ਬਿਟ ਡੇਹਲੇ ਓਹ ਮਲਕਾਡ ਕਨੈ ਸਾਰਤਾਂ ਕਰਾਡ  
 ਤੇਜਾਂ ਕੋਲ ਜਾਈ ਖੜ੍ਹੋਤਾ ਪੁਚ਼ੈ ਕਪਡੇ ਦਾ ਭਾਡ  
 ਅਨਦਰਾ ਆਯਾ ਇਕ ਮਨੀਸ, ਆਖੈ ਮਿਤਿਆ ਦੀ ਮੀਸ  
 ਓਹ ਕਿਸ਼ ਹਸਦੀ-ਹਸਦੀ ਲਬੈ, ਮਿਕੀ ਹੋਏ ਨਿੰ ਜਕੀਨ  
 ਤੇਜਾਂ ਹਤਥੋਂ ਛੂਹਤੀ ਆਪੂਂ ਅਹੋਂ ਸਚਿ ਗਲਾਂਦਾ ਏਹ  
 ਸ਼ੈਹਰ ਪੈਹਲੋ -ਪੈਹਲ ਗੇ।

‘ਚਾਚੇ ਦੂਨੀ ਚਨਦੈ ਦਾ ਬਾਹ’ ਬੇ-ਮੇਲ ਬਾਹ ਦੀ ਸਮਾਜੀ ਕੁਰੀਤ ਦਾ ਬਰੋਧ ਕਰਨੇ ਆਹਲੀ ਕਵਿਤਾ  
 ਐ ਤੇ ਨੇਹ ਬੁਠਖਰੋਂ ਪਰ ਵਿਗ ਐ ਜਿ’ਦੇ ਸੁਹ ਚ ਦਨਦ ਨੇਈ ਸਿਰੈ ਪਰ ਬਾਲ ਨੇਈ ਅਕਖੀ ਲਭਦਾ ਨੇਈ, ਸ਼ਰੀਰ  
 ਢੁਲਲੇ ਦਾ ਹਡਿਡਿਧੋਂ ਦਾ ਪਿੰਜਰ ਤੇ ਬਾਹ ਦਾ ਚਾਡ।

“ਕੁਡਿਧਿਧੋਂ ਦਿਕਖੇਆ ਲੌਹਡਾ ਦੂਨੀ ਚਂਦ  
 ਦਿਕਿਖਧੈ ਸਥਨਾਂਂ ਗੀ ਪੇਈ ਗੇਈ ਠਣਡ  
 ਆਪੂਂ ਬਿਚੋਂ ਗਲਲਾਂ ਕਰਦਿਆਂ ਸਥ  
 ਲੌਹਡਾ ਕੁਝੋਂ ਏਹ ਤਾਂ ਲੌਹਡੇ ਦਾ ਬਥ  
 ਰੂਪਾਂ ਨੇ ਰਾਜਾਂ ਗੀ ਦਿਤੀ ਐ ਠੇਹ  
 ਧੀ ਬਾਹਨੇ ਗੀ ਆਯਾ ਈ ਏਹ  
 ਫਿਟ੍ਟੇ ਸੂਹ ਇਸ ਮੋਏ ਬੁਢਖਰੇ ਚੌਹਰੇ ਦਾ  
 ਸੂਹ ਦਿਕਖੋ ਜਿਧਾਂ ਬਟੁਆ ਦਰਹਾਡੇ ਦਾ”

ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਨੇ ਨੌਤੋਡ ਮੈਨਨਤ ਕਰਨੇ ਆਹਲੇ ਜੁਆਨੋਂ ਤੇ ਕਰਸਾਨੋਂ ਗੀ ਰਜਬਾਡਾ ਸ਼ਾਹੀ  
 ਦੇ ਅਤਿਆਚਾਰੋਂ, ਖਲਾਫ ਜਾਗਰਤ ਗੈ ਨੇਈ ਕੀਤਾ ਬਲਕੇ ਅਪਨਾ ਹਕ ਖੂਸਨੇ ਆਸਤੈ ਹਲਲਾ ਬੋਲਨ ਦੀ ਹਦਦਾ ਤਗਰ  
 ਪ੍ਰੇਰਤ ਕੀਤਾ। ਦੋਹਰੀ-ਤ੍ਰੇਹਰੀ ਗੁਲਾਮੀ ਕਥਾ ਛੁਟਕਾਰਾ ਕਰਾਨੇ ਗਿਤੈ ਚਨੈਹਨੀ ਦੇ ਰਾਜੇ ਦੇ ਖਲਾਫ “ਹਿਜਰਤੀ ਜਥੇ”  
 ਦੀ ਨੁਮਾਂਧਦਗੀ ਛੱਡੀ ਸ਼ਸ਼ੂਲਿਤ ਕਨੈ ਗੈ ਨੇਈ ਕੀਤੀ ਸ਼ੁਙ੍ਗਾਂ ਉਸ ਦਰੰਨਾਕ ਸਥਿਤੀ ਗੀ ਅਪਨੇ ਗੀਤੋਂ ਰਾਹੋਂ ਏਸੀ  
 ਵਾਣੀ ਦਿਤੀ ਜੇ ਸਾਰਾ ਵਾਤਾਵਰਣ ਬੀ ਰੋਈ ਉਟ੍ਰੇਆ :—

ਤੂਂਏਂ ਜੀ ਜਾਲਮਾ ਅਸ ਦੂਰ ਚਲੇ  
 ਸੋਹਨਾ ਦੇਸ ਤਜੀ ਘਰ-ਬਾਹਰ ਤਜੀ  
 ਪਿਚੋਂ ਨਿਕਕਾ -ਨਿਕਕਾ ਪਰਿਵਾਰ ਤਜੀ  
 ਤੁਦ ਜੁਲਮ ਕੀਤੇ ਮਜਬੂਰ ਚਲੇ  
 ਤੂਂਏ ਜੀ ਜਾਲਮਾ ਅਸ ਦੂਰ ਚਲੇ

ਇਸੈ ਚਾਲਲੀ “ਲੋਕੇ ਮੀਹਨੈ ਮਾਰਦੇ ਭੋਗਰੋਂ ਦਾ ਰਾਜ ਐ, ਭੋਗਰੋਂ ਦਾ ਹਾਲ ਸੰਦਾ ਜੁਡਦਾ ਨਿ ਸਾਗ ਐ,  
 ਗੀਤ ਬੀ ਜਨਤਾ-ਜਨਾਰਦਨ ਗੀ ਅਪਨੀ ਬਦਹਾਲੀ ਦਾ ਤੇ ਹਾਕਮੋਂ ਸਰਪਰਸ਼ੇ ਗੀ ਅਪਨੇ ਅਤਿਆਚਾਰੋਂ ਦਾ ਅਹਸਾਸ ਦੁਆਨੇ  
 ਆਹਲੀ ਸਿਦੀ ਬਗਾਬਤ ਹੀ।

(ii) "ਮਾਂ ਦੀ ਛਬੀਲ" ਨਾਂ ਦੀ 124 ਏਂ ਬਾਂਦੇ ਦੀ ਲਮ੍ਮੀ ਕਵਤਾ 1945 ਚ ਛਪੀ। ਇਹ ਕਵਿਤਾ ਬੀ ਪਨਾ ਹੁਂਦੇ ਇੱਕ ਲਾਬੀ ਬਚਾਰੇਂ ਦਾ ਗੈ ਬੁਆਲ ਹੀ, ਜਿਸ ਚ ਸ਼ਾਹੋਂ ਤੇ ਸਾਮਿਧਿਆਂ ਦੇ ਰੂਪਾ ਚ ਸਰਮਾਯਾਦਾਰੋਂ ਤੇ ਦਲਿਤ ਗਰੀਬਿਆਂ ਬਚਕਾਰ ਜੀਵਨ -ਮੁਲਲਿਆਂ ਦੀ ਢੂਹਗੀ ਖਾਈ ਗੀ ਗੁਹਾਡੇਆ ਗੇਦਾ ਐ।

ਕਵਿ ਦੇ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਭਾਰੋਚੇ ਭਾਵੋਂ ਦੀ ਸ਼ਿਦਦਤ ਇਨ੍ਹਾਂ ਬਾਂਦੇਂ ਚ ਕਿਨ੍ਹੀ ਮੁਖਰਤ ਐ:-

ਧਾਰਿਧਿਆਂ ਪਾਂਡਤੋ ਮੁਲਲੇਓ ਆਓ।  
ਪਾਥਿਆਂ ਖੋਹਲੋ ਤੇ ਧਰਮ ਸਨਾਓ॥  
ਇਧੈ ਨੇਹ ਜੁਲਮ ਸੈਂਹਦੇ ਕਰੁਰ।  
ਦਸਸ਼ੋ ਗਰੀਬਿਆਂ ਦਾ ਕੋਈ ਕਸੂਰ॥  
ਇਕ ਨੇਈ ਇਧੈ ਨੇਹ ਲਕਖਾਂ ਅਨਜਾਨ।  
ਮੁਕਥੇ ਮਰਦੇ ਦਰ-ਦਰ ਠੋਕਰਾਂ ਖਾਨ॥  
ਗੁੰਡੇ ਲੁਚਵੇ ਚਕਕੇ ਚੌਧਰਾਂ ਪਾਨ।  
ਦੁਖਿਆਂ ਦਾ ਮਰੀ ਗੇਆ ਭਗਵਾਨ॥

ਇਸ ਕਵਿਤਾ ਚ ਸੋਹਨੂ ਸਰਦਾਲਿਯੇ (ਸ਼ਾਹ) ਤੇ ਨਥੂ ਮਨਕੋਟਿਆਂ (ਸਾਮੀ) ਦੀ ਪੀਢੀ ਕਸ਼ਾ ਲੇਝਾਈ ਤਾਂਦੇ ਦੌਨੋਂ ਦੇ ਪੋਤਰੋਂ ਦੀ ਪੀਢੀ ਤਗਰ ਗਰੀਬੀ ਤੇ ਮੀਰੀ ਦਾ ਟਾਕਰਾ ਚਲਦਾ ਰੈਹਦਾ ਐ। ਮਾਂ ਦੇ ਦਾਦੇ ਆਸੇਆ ਲੈਤੇ ਦਾ ਸੌ ਰਖੇਂਦ ਦਾ ਦੁਹਾਰ ਨੇਈ ਸੁਕਦਾ ਤਾਂ ਮਾਂ ਦੇ ਬਾਪੂ ਗੀ ਬਗਾਰਾਂ ਕਾਰਨਿਆਂ ਤੇ ਮਾਰਾਂ ਦ੍ਰਾਂਡਾ ਖਾਨਿਆਂ ਪੌਂਦਿਆਂ ਨ ਇਤਥੂਂ ਤਗਰ ਜੇ ਆਪੂ ਜੇਹਲਾ ਚ ਪ੍ਰਾਣ ਤਾਂ ਪੌਂਦੇ ਨ ਤੇ ਅਪਨੇ ਕਾਲਜੇ ਦੇ ਟੁਕੜੇ ਮਾਂ ਗੀ ਹਤਥਾ ਦਾ ਸੁਹਾਨਾ ਪੌਦਾ ਐ। ਮਾਂ ਦੇ ਅਨੰਦ ਦਾਦੇ ਦੇ ਜਮਾਨੇ ਕਸ਼ਾ ਅਪਨੇ ਬੇਲਲੇ ਤਗਰ ਹੋਏ ਦੇ ਜੁਲਮੈ -ਅਤਿਆਚਾਰੋਂ ਦੇ ਬਿਦ੍ਰੋਹ ਦਾ ਭਾਂਬੜ ਸੁਹਾਨਾ ਪੌਦਾ ਐ ਤੇ ਆਹ ਸ਼ਹੁਕਾਰੋਂ ਦੇ ਘਰੈ ਗੀ ਅਗ ਲਾਇਧੈ ਆਪੂ ਛਪਨ ਹੋਈ ਜਾਂਦਾ ਐ। ਇਹ ਕਵਿਤਾ ਬਡੀ ਉਤਸ਼ਾਹਿਤ ਭਾਵਨਾ ਆਹਲੀ ਐ। ਵਿਦ੍ਰੋਹੀ ਸੁਆਤਮ, ਬਦਲੇ ਦਾ ਲਾਵਾ ਬਲਲੋ-ਬਲਲੋ ਅੰਦਰ ਪਾਲਦਾ ਰੱਹਦਾ ਐ, ਜਿਸਦਾ ਪਤਾ ਧਕਦਮ ਇੱਤਹਾਡ ਪਰ ਪੁਜਨੋਂ ਪਰ ਗੈ ਲਗਦਾ ਐ। ਦਰਅਸਲ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਹੋਰੋਂ ਅਪਨੇ ਜੀਵਨ ਚ ਇਧੈ ਜਨੇਹ ਰਾਵਣੀ ਸ਼ਹੁਕਾਰੋਂ ਦੇ ਹਥਿਆਂ ਕੇਈ ਭਲੋਕੇ ਗਰੀਬਿਆਂ ਦੀ ਰਤ ਨਚੋਡਦੀ ਦਿਕਖੀ ਦੀ ਹੀ ਜਿਸਗੀ ਉਸਦਾ ਕਵਿ ਹਿਰਦੇ ਬਰਦਾਸ਼ਤ ਨੇਈ ਕਰੀ ਸਕੇਆ ਤੇ ਇਕਦਮ ਅਗ-ਬਬੂਲੇ ਹੋਇਧੈ ਵਿਦ੍ਰੋਹੀ ਅਮਲ ਗੀ ਉਸ ਹੱਦੈ ਤਗਰ ਪਜਾਹਾ, ਜਿਸਦਾ ਆਮ ਪਾਠਕ ਲਾਨਾ ਬੀ ਨੇਈ ਲਾਈ ਸਕਦਾ। ਕਵਿਤਾ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਬਡੀ ਰੋਚਕ, ਪ੍ਰਵਾਹਪੂਰਣ ਤੇ ਸਾਦਾ ਉਪਮਾਏਂ ਕਨੈ ਕਥਾ -ਸੂਤਰ ਗੀ ਗਤਿ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਨੇ ਆਹਲੀ ਐ:-

ਦੁਖੋਂ ਭਰੀ ਸੂਂਕ ਨਿਕਲੀ ਓਹਦੀ।  
ਸ਼ਾਹੋਂ ਤੇ ਸਾਮਿਧਿਆਂ ਮਿਤਰੀ ਕੋਹਦੀ॥  
ਬਿਲੀ ਜਦ ਚੂਹੋਂ ਗੀ ਸਾਥੀ ਬਚਾਡ॥  
ਸਮਝਨਾ ਹੁਨ ਨੇਈ ਓਹਦਾ ਬਚਾਡ॥

### (iii) ਵੀਰ ਗੁਲਾਬ

ਇਸ ਖੰਡ ਕਾਵਿ ਦਾ ਜਿਕਰ ਵਿਸ਼ਤਾਰਪੂਰਵਕ ਅਗਲੇ ਪਾਠ ਚ ਕੀਤਾ ਜਾਗ।

### (iv) ਦਾਦੀ ਤੋਂ ਮਾ

ਪਨਤ ਹੁਂਦੀ ਚੌਥੀ ਰਚਨਾ 'ਦਾਦੀ ਤੇ ਮਾ' ਨਾਂਡ ਦਾ ਕਵਿਤਾ ਸੱਗ੍ਰੈਹ 1956 ਚ ਛਪੇਆ। ਇਸ ਸੱਗ੍ਰੈਹ ਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਕਵਿਤਾਏਂ ਚ ਪਨਤ ਹੋਰੇਂ ਜਨ—ਸਾਧਾਰਣ ਦਿਯੇ ਸਮਸ਼ਾਏਂ ਗੀ ਜਨ—ਸਾਧਾਰਣ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਚ ਚਿਤ੍ਰਤ ਕਾਰਿਯੇ ਸਮਾਜ ਚ ਪ੍ਰਗਤਿਵਾਦੀ ਪਰਿਵਰਤਨ ਆਹਨਨੇ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਬੁਜ਼ੀ ਦੀ ਏ। 'ਇਧਰ ਹੋ' ਜਾਂ ਤੁੜ੍ਹਰ ਹੋ, ਕਵਿਤਾ ਚ ਤਨੋਂ ਉਪਰਾ ਸਫੇਦਪੋਸ਼ ਪਰ ਅਨਦਰਾ ਫਿਕਰੋਂ ਦੇ ਮਾਰੇ ਦੇ ਖ਼ਸ਼ਤਹਾਲ ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਦਸ਼ਾ ਪਰ ਬਡੇ ਮਾਰਮਕ ਢੰਗ ਨੇ ਵਾਂਗ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ। ਸਮਾਜ ਦਾ ਦਰਸ਼ਾਨਾ ਤਬਕਾ ਮਹੇਸ਼ਾਂ ਗੈ ਲੋਕ ਲਾਜ ਤੇ ਲੋਕਾਚਾਰ ਰੂਪੀ ਚਕਕੀ ਦੇ ਪੁੱਡੇ ਮੜਾਟੈ ਦਲੋਂਦਾ —ਫ਼ਿੱਦਾ ਮਨ੍ਦੇ ਹਾਲੋਂ ਦਿਨ ਕਾਟੀ ਕਰਦਾ ਏ, ਪਰ ਉਪਰਾ ਰੱਦਾ —ਬੁਹਾਸਰਦਾ ਨੇਈ। ਸਮਾਜ ਦੇ ਇਸ ਤਬਕੇ ਚ ਦਫ਼ਤਰੋਂ ਦੇ ਬਾਬੂ ਬਣਿਅਤੇ ਦੇ ਨੌਕਰ, ਕਚੈਰਿਅਤੇ ਦੇ ਮੁਨਥੀ ਲੌਹਕੇ ਦੁਕਾਨਦਾਰ, ਮਾਸਟਰ, ਮਨੀਮ, ਕਹੀਮ, ਕਰਲਕ ਆਦਿ ਸਭਨੋਂ ਗੀ ਕਵਿ ਅਪੀਲ ਕਰਦਾ ਏ ਜੇ ਓਹ ਇਸ ਬੇਹਲਲਡਖੋਰ ਨਜ਼ਾਮੈ ਗੀ ਬਦਲੀ ਦੇਨ ਕੀ ਜੇ ਇਸ ਚਾਲੀ ਮੇਹਨਤਕਸ਼ ਲੋਕ ਮਹੇਸ਼ਾਂ ਦੁਕਖਿਆਂ ਦੇ ਰੇਜੇ ਗੈ ਬੁਨਦੇ ਰੈਹਡਗ ਤੇ ਸੁਖ ਤੁਹਾਨਾਂ ਭਾਗੋਂ ਸ਼ਾ ਤੁਰਦਾ—ਨਸਦਾ ਰੈਹਗ। "ਕਮਮ ਕਰਾਡ ਤੇ ਰੁਟਾਂਦੀ ਦੇ", ਕਵਿਤਾ ਬੀ ਮੇਹਨਤਕਸ਼ਾਂ ਤੇ ਮਜੂਰੋਂ ਆਸੇਆ ਹੁਕਮਰਾਨ ਤਬਕੇ ਅਗੋਂ ਕੀਤੀ ਗੇਦੀ ਮਂਗ ਏ। ਕਵਿ ਦੇ ਆਖਨੇ ਦਾ ਢੰਗ ਬਡਾ ਤਰਕ ਪੂਰ੍ਣ ਤੇ ਸਨਾਸਥ ਏ ਤੇ ਲੈਹਜਾ ਬੀ ਬਡਾ ਸਭਾਵਕ :

"ਛਡਾ ਜੀਨੇ ਦਾ ਹਕ ਮਂਗਨੇ ਆਂ ਝਗੜਾ ਨੇਈ ਬਾਫਰ ਖੁਲ੍ਲੀ ਦਾ  
ਸਮਧਾਨ ਕਰੀ ਦੇ ਬਿਨਦ ਸਾਰਾ, ਕੁਲ੍ਲੀ, ਜੁਲ੍ਲੀ ਤੇ ਚੁਲ੍ਲੀ ਦਾ  
ਲੇਖਾ ਟਬਕੈ ਦਾ ਲਾਈ ਲੈ ਤੂਂ ਭਾਏਂ ਰੁਕਖੀ ਸੁਕਕਮ ਸੁਕਕੀ ਦੇ  
ਤੂਂ ਕਮਮ ਕਰਾਡ ਤੇ ਰੁਟਾਂਦੀ ਦੇ"

"ਕੈਹਦੀ ਬਸਨਤ ਤੇ ਕੋਹਦੀ ਬਸਨਤ" ਕਵਿਤਾ ਚ ਬੀ ਕਵਿ ਨੇ ਬਿਨਦ ਸਾਰੀ ਉਪਲਭਿ ਪਰ ਸਨ੍ਤੁਸ਼ਟ ਹੋਇਥੈ ਬੇਹੀ ਰੈਹਨੇ ਆਹਲੋਂ ਗੀ ਸੋਹਗਾ ਕੀਤਾ ਏ:-

"ਕੈਹਦੀ ਬਸਨਤ ਤੇ ਕੋਹਦੀ ਬਸਨਤ  
ਦੁਕਖਿਆਂ ਦਾ ਅਨਤ ਨਾਂ ਮੁਕਖਿਆਂ ਦਾ ਅਨਤ  
ਹੋਗ ਸਰਮਾਧਾਦਾਰੋਂ ਦੀ ਹੋਗ  
ਜਾਂ ਇਨੋਂ ਹਟਿਆ ਬਾਲੋਂ ਦੀ ਹੋਗ  
ਸਾਹਬੋਂ ਦੀ ਹੋਗ ਜਾਂ ਸੀਮੇਂ ਦੀ ਹੋਗ  
ਉਨਿਦਯੋਂ ਸ਼ੈਲ ਸਕੀਮੇਂ ਦੀ ਹੋਗ  
ਅਜੋਂ ਨਿਂ ਆਈ ਦੀ ਸਾਫ਼ੀ ਬਸਨਤ  
ਕੈਹਦੀ ਬਸਨਤ ਤੇ ਕੋਹਦੀ ਬਸਨਤ"

‘अङ्ग बेहड़ा’ कविता च कवि इस्सै नतीजे पर पुजदा ऐ जे जनता दी बदहाली दा मूल कारण समाज दी पूंजीवादी आर्थक व्यवस्था ऐ, जिस च पूंजीवादी लोक मैहनती गरीबें दे लह—परसे पर ऐश करा करदे न। इस व्यवस्था गी बदलने दा सादा देना गै कवि दा मुक्ख उद्देश ऐ, पर इस अङ्ग बैहड़े गी काबू करने आस्तै लोकें च आपसी एके दी सख्त जरुरत ऐ, कीजे एह बैहड़ा बड़ा अङ्ग ऐ, कुसै इक्कले शा काबू औने आहला नेई।

‘बड़ी जिन्द कडठनी ते बड़ा मुंह मारना  
इन्नै सुखें नेइयों रस्सा जुगड़े दा स्हारना  
इक्कला निं हथ्य पायां साथियें गी सददी लै  
मिली—जुली धेरा पाना डंडे सोटे कड़ढी लै

इस संग्रहै दियां कम्म करना ‘सिक्ख देसा’, ‘उटठ ओ’ ते ‘मंजलै गी पुज्जना तां बिना रुके चली चल’ कवितां डोगरी कविता च प्रगतिवाद दी धारा दी नुमायंदगी करने आहलियां न। ‘दादी ते मां’ कविता मातृभाषा ते राश्ट्रभाषा गी अपो—अपना थाहर ते सम्मान प्रदान करने आहली कविता ऐ, जिस च हिन्दी गी दादी ते डोगरी गी माझं दा दर्जा देइयै आपसी सरबधें दी डोरी च परोए दा ऐ:-

‘हिन्दी ते डोगरी दा झगड़ा गै कैहदा  
दादी ते माझं दा मकाबला गै कैहदा  
हिन्दी साढ़ी दादी ऐ ते डोगरी सै मां  
दादी थाहर दादी ऐ ते माझ थाहर मां

‘गुजरी’ ते ‘खोहल मनै दी घुंडी नाजो’ एह दो कविता क्रान्तिकारी रौं कशा बिन्द बक्खरियां ते रोमाटक कविता लभदियां न, ब ‘गुजरी’ इक दुद्ध बेचने आहली भोली—भाली ते बे—जोड़ शलैपे मूरत होइयै सिर्फ धरै दी गै सजावट नेई ते नां सुन्नै चादी दी मुहताज ऐ। बल्के जिन्द मारियै कम्म करने आहली रामायाणी काहरें गी लुआंधियै रावणे दी छाती पर गज्जने आहली आत्म— निर्भरता ते निर्दरता दी प्रतीक ऐ। दीनू भाई पन्त दी प्रगतिवादी सोच दा इस शा बधीक होर केह प्रमाण होई सकदा ऐ, ओह समाज जित्थै औरतें गी धरै दी गुलामी ते चार दवारी दे बाहर गैं धरने दी जुर्त नेई ही पाँदी उत्थें कवि ने उसगी :-

“करी कमाइयां खदी लांदी  
एह नेइयों सुन्ने दी बांदी  
एह सीता नेइयें काहरें बझदी  
रावण दी छाती पर गजदी”

ਆਖਿਧੈ ਉਸਦੇ ਏਸੇ ਰੁਤਬੇ ਦਾ ਤਸਵੁਰ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ, ਜੇਹਡਾ ਅਜ਼ੈ ਦੇ ਸਮਾਜ ਗੀ ਬੀ ਪੂਰੀ ਚਾਲੀ ਗਵਾਰਾ ਨੇਈ।

ਇਸ ਚਾਲੀ 'ਦਾਦੀ ਤੇ ਮਾਂ' ਸਾਂਗੈਹ ਦਿਧੋਂ ਕਵਿਤਾਏਂ ਤਗਰ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਚ ਜਿਥੈ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਸਮਾਜ ਦੇ ਖਲਾਫ ਵਿਦ੍ਰੋਹ ਜੀਵਨ ਦੇ ਦਮਾਜ਼ਡਿਪਨੇ ਉਪਰ ਲਲਕਾਰ, ਸਮਾਜੀ ਤੇ ਆਰਥਕ ਫਕੌਂ-ਫਕੌਂ ਬੁਲਦ ਬਗਾਵਤੀ ਸੁਰ ਪ੍ਰਧਾਨ ਹਾਂ ਤਥੈ ਸਮੇਂ ਦੀ ਸੁਹਾਰ ਬਦਲੋਨੇ ਪਰ ਬਾਦ ਦੀ ਕਵਿਤਾ ਚ ਤੁਂਦੀ ਸੋਚ ਤੇ ਭਾਵੇਂ ਚ ਨੁਮਾਯਾ ਤਵਦੀਲੀ ਆਈ। ਤੁਨੈਂ ਕਵਿ ਕਲਾਕਾਰੇਂ ਤੇ ਸਮੂਲਚੀ ਸਨੁਕਖ ਜਾਤਿ ਦੇ ਹਥਾਂ ਦੇ ਕਰਤਬ ਦਾ ਅਸਰ ਦਿਕਖੇਆ ਜਿਸਦਾ ਬਖਾਨ ਤੁਨੈਂ ਅਪਨਿਧੋਂ ਕਵਿਤਾਏਂ ਚ ਬਖੂਬੀ ਕੀਤਾ ਜੀਵਨ ਤੇ ਸੱਸਾਰ ਬਾਰੈ ਜੋ ਤਤਥ ਤਜਰਬਾ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ ਉਸਦਾ ਵਰਣਨ ਬੀ ਤੁਂਦੀ ਕਵਿਤਾ ਚ ਸੁਖਰਤ ਹੋਏ ਬਿਨਾ ਨੇਈ ਰੇਹਾ। ਇਸਲੋਈ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਬਾਰੈ ਏਹ ਆਖਨਾ ਅਤਿਸ਼ਯੋਕਿਤ ਨੇਈ ਹੋਗ ਜੇ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਢੁਗਰ ਦੇ ਸਚੇ ਜਨ-ਕਵਿ ਹੇ ਜਿਨੈਂ ਜਨਸਾਧਾਰਣ ਦੀ ਗਲਲ ਤੁਂਦੀ ਗੈ ਭਾਸਾ ਚ ਆਖਿਧੈ ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਗੀ ਜਨ-ਜਨ ਤਗਰ ਪਜਾਨੇ ਦੀ ਸਰਾਹਨੇ ਜੋਗ ਭੂਮਿਕਾ ਨਭਾਈ।

#### 8.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਦਿਧੇ ਵਿਦਾਰਥਿਯੋਂ ਗੀ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਹੁੰਦਾ ਕਵਿਤਾ ਸਾਹਿਤਿ ਗੀ ਜੋਗਦਾਨ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਵਿਦਾਰਥਿਯਦੋਂ ਗੀ ਦੀਨੂਭਾਈ ਪਤ ਹੁੰਦੇ ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਗੀ ਜੋਗਦਾਨ ਬਾਰੈ ਤਫਸੀਲੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਪਤ ਹੁਦਿਧੋਂ ਕਵਿਤਾ ਪੋਥਿਧੋਂ ਗੁਤਲੂੰ ਤੇ ਚਾਚੇ ਦੰਨੀ ਚਦੈ ਦਾ ਵਾਹ ਮਾਂ ਦੀ ਛਬੀਲ ਵਗੈਰਾ-ਬਗੈਰਾ ਕਵਿਤਾਏ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸਦੇ ਲਾਵਾ ਵੀਰ ਗੁਲਾਬ ਖੰਡ ਕਾਵਿ ਤੇ ਦਾਦੀ ਤੇਮਾਂ ਕਵਿਤਾ ਸਾਂਗੈਹ ਬਾਰੈ ਸਰੋਖੜ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਦੀਨੂਭਾਈ ਪਤ ਹੋਏ ਡੋਗਰੀ ਕਵਿਤਾ ਗੀ ਨਨਮਾ ਮੋਡ ਦਿਤਾ। ਉਨੇ ਡੋਗਰੀ ਦੀ ਹਾਸਥ-ਵਧਾਂ ਕਵਿਤਾ ਲਿਖਿਧੈ ਡੋਗਰੀ ਚ ਜੇਹਡਾ ਰੰਗ ਬਨੇਆ। ਓਹ ਸ਼ਾਯਦ ਗੈ ਕੁਝੇ ਨੇ ਬਨੇਆ ਹੋਏ।

#### 8.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

- |     |           |     |        |     |          |
|-----|-----------|-----|--------|-----|----------|
| 1)  | ਬਰਾਦਰੀਵਾਦ | 2)  | ਅਮ਼ਬਰ  | 3)  | ਤਲਾਬ     |
| 4)  | ਸਾਹੁਗਾ    | 5)  | ਸੌਂਗਲਾ | 6)  | ਨਸਾਨਦੇਹੀ |
| 7)  | ਚਕਾਚੌਂਧ   | 8)  | ਪੈਨਪਟਰ | 9)  | ਭਰਮਾਈ    |
| 10) | ਫ੍ਰਾਂਡਾਂ  | 12) | ਲੈਹਜਾ  | 13) | ਜਨ-ਜਨ    |

#### 8.6 ਅੰਭਿਆਸ ਆਸਟੈਂ ਸੋਆਲ

ਨੋਟ:- ਹੇਠ ਦਿੱਤੇ ਗੇਂਦੇ ਸੁਆਲੇ ਦੇ ਉਤਤਰ ਲਿਖੋ

1. दीनू भाई पन्त होर इक प्रगतिवादी विचारधारा दे कवि हे। इस कथन दी पुश्टि उंदियै कविताएं दे हबाले कन्नै करो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. डोगरी कविता साहित्य गी दीनू भाई पंत हुदे योगदान बारै खुलियै चर्चा करो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. दीनू भाई पन्त होर ढुगर से सच्चे जन –कवि हे, तुस इस गल्ला कन्नै कुत्थूं तगर सैहमत ओ। कविताएं दे हबाले कन्नै परता देओ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

### 8.7 सहायक पुस्तकां

1. डोगरी साहित्य दा इतिहास लैखक जितेन्द्र उधमपुरी
2. डोगरी साहित्य दा इतिहास : शिवनाथ
3. साढे साहित्यकार भाग-1: वीणा गुप्ता

.....0.....

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102**

**Unit - II**

**Semester - I**

**Lesson : 9**

---

### **'ਕੀਰ ਗੁਲਾਬ' ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਰਨ**

**9.0 ਰੂਪਰੇਖਾ**

**9.1 ਉਦੇਸ਼**

**9.2 ਪਾਠ ਪਰਿਚੇ**

**9.3 ਪਾਠ-ਪ੍ਰਕਿਧਾ**

9.3.1 ਕੀਰ-ਗੁਲਾਬ ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਰਨ

9.3.2 ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਾ ਚਰਿਤ੍ਰ ਕੀਰ-ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਸੰਬੰਧ ਚ।

9.3.3 ਛੇਠ ਦਿਤੇ ਦੇ ਸੁਆਲੋਂ ਦਾ ਪਰਤਾ ਦੇਓ

**9.1 ਉਦੇਸ਼**

ਇਸ ਪਾਠ ( ਲੈਸਨ) ਚ ਕੋਰਸ ਚ ਲਗਦੀ ਦੀ ਕਤਾਬ 'ਕੀਰ-ਗੁਲਾਬ' ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਬਾਰੈ ਵਿਸ਼ਾਰ ਪੂਰਕ ਚੰਚਲ ਕੀਤੀ ਜਾਹਾਂ। ਕੀਰ-ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਸ਼ਹਿਰ ਤੱਥ ਪਾਦੇ ਹੋਈ ਇਸ ਕਾਵਿ ਦਿਖੇ ਖੁਬਿਧੇ ਤੇ ਮਹਾਰਾਜ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਹੁੰਦੀ ਬਹਾਦਰੀ ਦੇ ਕਾਰਨਾਮੇ ਬਾਰੈ ਲੋਭਚਾਦੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਦਿਤੀ ਜਾਹਾਂ। ਤਾਂ ਜੇ ਵਿਦਾਰੀ ਇਸ ਖਣਡ -ਕਾਵਿ ਸਰਬਨੰਦੀ ਕੁਸੈ ਬੀ ਚਾਲੀ ਦੇ ਸੁਆਲੋਂ ਦਾ ਪਰਤਾ ਦੇਨੇ ਚ ਸੰਸਥ ਹੋਨ।

**9.2 ਪਾਠ ਪਰਿਚੇ**

ਇਸ ਪਾਠ ਚ 'ਕੀਰ ਗੁਲਾਬ ਖਣਡ' ਕਾਵਿ ਦਾ ਹਰ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕਨੈ ਮੂਲਧਾਰਨ ਕੀਤਾ ਜਾਹਾਂ।

**9.3 ਪਾਠ -ਪ੍ਰਕਿਧਾ**

1. 'ਕੀਰ-ਗੁਲਾਬ' ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਰਨ

2 'ਵੀਰ—ਗੁਲਾਬ' ਕਾਵਿ ਦਾ ਭਾਵ ਤੇ ਕਲਾ ਦੀ ਦਿਸ਼ਟੀ ਕਨੈ ਮੂਲਧਾਂਕਨ

3. ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦੇ ਕਾਰਨਾਮੇਂ ਵੀਰ ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਸਂਦਰਭ ਚ

### 9.3.1 'ਵੀਰ—ਗੁਲਾਬ' ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੂਲਧਾਂਕਨ

#### i) ਵੀਰ—ਗੁਲਾਬ

ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਨਤ ਹੁਨਦਾ ਏਹ ਵੀਰ ਰਸ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਵਿ ਸਨ 1946 ਚ ਛਪੇਆ। ਡੋਗਰੋਂ ਦੀ ਇਨ, ਆਨ ਬਾਦਰੀ ਪਰ ਆਧਾਰਤ 44 ਸਫੋਂ ਦਾ ਏਹ ਡੋਗਰੀ ਦਾ ਪੈਹਲਾ ਖਣਡ—ਕਾਵਿ ਏ। ਏਹਦੇ ਚ ਜਮ੍ਮੂ ਸ਼ੈਹਰਾ ਦੇ ਗੁਮਟ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਖਾਲ੍ਹੋਂ ਸਿਕਖੋਂ ਤੇ ਡੋਗਰੋਂ ਮਸ਼ਾਈ ਹੋਈ ਦੀ ਇਕ ਦਿਨੈ ਦੀ ਲੜਾਈ, ਯੁਦਧ ਕੌਸ਼ਲ ਤੇ ਜਿਤੈ ਦਾ ਸ਼ੈਲ ਵਰਣਨ ਏ। ਏਹ ਘਟਨਾਂ ਸਨ 1809 ਦੀ ਏ ਤੇ ਉਸ ਬੇਲੈ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦੀ ਉਮਰ 15 ਬਾਰੇ ਹੀ। ਕਾਵਿ ਦੇ ਪੈਹਲੇ ਹਿੱਸੇ ਚ ਸਿਕਖੋਂ ਦੇ ਹਮਲੇ ਦਾ ਅਲਾਨ ਤੇ ਨਵੇਰੀ ਤੁਫਾਨੀ ਰਾਤ ਚ ਮਿਧਾਂ ਮੋਟਾ ਹੁਦੇ ਹੁਕਮ ਦਾ ਵਰਣਨ ਏ। ਨਵੇਰੀ ਰਾਤੀ ਦੇ ਅੰਧੀ—ਯਾਕਕਡੁ ਚ ਬੈਰਿਧੋਂ ਦਾ ਹਮਲਾ ਸਰਕਾਰੀ ਡੌਂਡੀ ਫਿਰਨੇ ਤੇ ਲੋਕਾਂ ਗੀ ਹੌਸਲਾ ਰਕਖਨੇ ਤੇ ਦੇਸਾ ਤਾਈ ਭਰੀ ਮਿਟਨੇ ਦੀ ਗਲਲ ਹੋਈ ਦੀ ਏ।

'ਰਾਤ ਹੀ ਨਵੇਰੀ, ਤੇ ਬਦਲ ਹੇ ਛਾਏ,  
ਜਮ੍ਮੂਆ ਪਰ ਜ਼ਹਾਂ ਬੈਰੀ ਚਢੀ ਆਏ।  
ਨੇਹਿਧਾਂ ਭਰੈਨਿਧਾਂ ਰਾਤੀਂ ਪੁਕਾਰੀ,  
ਸੁਨੋ ਭਈ ਲੋਕੋ ਏਹ ਡੌਂਡੀ ਸਰਕਾਰੀ।  
ਜੋਰੋ—ਜੋਰੋਂ ਇਕ ਮਾਹਨੂ ਕਰਲਾਯਾ,  
ਮਿਧਾਂ ਮੋਟਾ ਜੀ ਦਾ ਹੁਕਮ ਸੁਨਾਯਾ।  
ਜਮ੍ਮੂਆ ਦੇ ਸਾਰੇ ਨਗਰ ਨਵਾਸਿਧੋਂ,  
ਦੇਸ਼ ਭਕਤੋਂ ਦੁਖੇ—ਸੁਖੇ ਦੇ ਸਾਥਿਧੋਂ।  
ਸ਼ੇਰੋਂ ਦੇ ਪੁੱਤਰੋਂ ਹਿਮਤ ਨੇਈ ਹਾਰੇਓ,  
ਸਾਬ ਕੋਈ ਅਪਨਾ ਆਪ ਸਮਾਲੇਓ।  
ਸਰਦੋਂ ਦੇਓ ਬਚੋਓ, ਸਤ ਧਬਰਾਓ,  
ਅਪਨੇ ਦੇਸੇ ਦੀ ਲਾਜ ਬਚਾਓ।'

ਦੂਏ ਹਿੱਸੇ ਚ ਡੋਗਰੀ ਜੁਆਨੋਂ ਦਾ ਦੇਸਾ ਦੀ ਰਖਾਇਆ ਤਾਈ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਨਾ ਤੇ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਾ ਘੋੜੇ ਪਰ ਚਢੀ ਆਨੇ ਦਾ ਵ੍ਯਾਖ ਏ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਪਰ ਬਨੀ ਆਈ ਦੀ ਮਸੀਵਤ ਦਾ ਪਤਾ ਚਲਦੇ ਗੈ ਕਿਆ ਬੁਡ੍ਹੇ ਕਿਆ ਜਵਾਨ ਸਾਰੇ ਰਲਿਧੇ ਦੇਸਾ ਦੀ ਇੱਜਿਤ ਮਾਨ ਦੀ ਖਾਤਰ ਲਡਨੇ ਲੇਈ ਤੇਆਰ ਹੋਈ ਜਾਨੇ ਦਾ ਵਰਣਨ ਸਰਾਹਨੇਯੋਗ ਏ।

'ਲਾਡਿਧਾਂ ਖਸਮੋਂ ਗੀ ਪਾਂਦਿਧਾਂ ਹਾਰ,  
ਮੈਨਾਂ ਭਰਾਏਂ ਗੀ ਕਰਨ ਤਧਾਰ।

अपनी –अपनी ढाल–तलवार,  
 फड़कदे मूँढे ते निकलदे बाहर।  
 नमें –नभें गभरु ते बोके जवान,  
 दौड़दे जंदे न बिच्च चगान।  
 उमर दिक्खो कुल पंदरां साल,  
 चेहरे उपर राजपूती जलाल।  
 लाड़े–लाड़े सध्यै आखदे साहब,  
 बनी आया अज्ज ‘सिंह गुलाब’।  
 होनहारें नेइयों सिक्खना पौंदा,  
 कंडे दा मूँह त्रिक्खना हौंदा।”

त्रिये भाग च गुमटा दे ख’ल्ले तविया पार जंगलै च सिक्ख फौजें दे कैम्पा दा चित्रण ऐ ते उंदे भैड़े कमें दे कन्नै–कन्नै उंदा व्यक्तित्व बी उंदं भैड़े कमें आंगर काला ऐ दा वर्णन मिलदा ऐ।

“डेरा लुआए दा त’बी दे पारें,  
 धाडुएं जाल्ने बैरी सरदारें।  
 कालियां दाढ़ियां चम्म बी काले,  
 कालियां बरदियां कम्म बी काले।  
 कालियां घोड़ियां काले सुआर,  
 कालियें फौजे दे काले सरदार।”

चौथे हिस्से च मियां मोटे दे स्नेह डोगरा जुआनें दा ‘जय दुर्गा’ दे नारे लाई बाहर निकलने ते गुलाब सिंह दे दूर्व बारी सामनैओने दा जिकर ऐ। पुरखें दी अपनी धरती दी रक्षा आस्तै डोगरें दा पक्का इरादा ते ललकार ऐ जिस च डुगर दे नां पर कलंक लोआने आहले डरपोके गी रणभूमि च नेई आने दा हुक्म ऐ।

“जिसी होए घरे –बाहरै दी कोह,  
 जिसी होए संसारै दा मोह।  
 जिन्दू दी ताहग प्राणे दी लोड़,  
 मनै दी हबस मटाने दी थोड़।  
 जिसी होए अजें जीने दा चाड़,  
 इस बेल्लै इत्थों दा मुँडी जाड़।  
 डोगरे देसै गी लाज नेई ला,  
 दब्बू डरैक कोई कन्नै नेई जाड़।”

ਪਜਮੋ ਖਣਡੈ, ਚ ਗੁਪ਼ ਨਹੇ ਚ ਰਾਤੀ ਲੈ ਢੋਗਰੋ ਪਾਸ਼ੇਆ ਸਿਕਖੋ ਪਰ ਘੇਰਾ ਪਾਨੇ ਦਾ ਤੇ ਸਿਕਖੋ ਚ ਇਸ ਅਚਾਨਕ ਹਮਲੇ ਕਾਰਣ ਅਫਰਾ—ਤਫਰੀ ਦਾ ਵਰਣਨ ਏ।

“ਜਮ੍ਮੂ ਬਾਲੋ ਨਾਹਰਾ ਜੌਰੈ ਦਾ ਲਾਯਾ,  
ਮਾਰੋ—ਮਾਰੋ ਸਾਰਾ ਜਾਡੇ ਕਰਲਾਯਾ।  
ਪਤਾ ਨੇਝਿਓਂ ਕਿਨੀ ਫੌਜ ਚਢੀ ਆਈ,  
ਬੈਰੀ ਸੈਨਾ ਸਾਰੀ ਗੇਈ ਧਬਰਾਈ।  
ਚੌਨੋਂ ਪਾਸੋਂ ਪੇਆ ਮੌਤੀ ਦਾ ਫੰਦਾ,  
ਟਕਕਰਾਂ ਮਾਰਦਾ ਬੰਦੇ ਗੀ ਬੰਦਾ।  
ਕੋਈ ਸਨੀਂਦਰਾ ਨਸ਼ਾ ਦਾ ਜਂਦਾ,  
ਕਚਾ ਛਡਾ ਕੋਈ ਦ੍ਰਾਡੇਆ ਨਂਗਾ।”

ਛੇਮੋਂ ਚ ਸਿਕਖੋਂ ਦੀ ਨਾਠ, ਉਂਦੇ ਕਮਾਡਰ ਹੁਕਮ ਸਿੱਹੈ ਦੇ ਸਿਕਖੋਂ ਦੈ ਨਾਂ ਹੁਕਮ ਦੇਨੇ ਤੇ ਬਢ਼-ਕਪ ਤੇ ਚੀਕੋਂ—ਲਲਕਾਰੋਂ ਚ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਿਏਂ ਧੂੰਡੋਂ ਤੇ ਮਿਥਾਂ ਮੋਟਾ ਦੀ ਕਮਾਨਾ ਦਾ ਵਰਣਨ ਏ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਗੀ ਵੀਰ ਅਭਿਮਨ੍ਯੂ ਦੀ ਸੜਾ ਦੇਇਥੈ ਉਂਦੀ ਧੁਦ ਕੌਸ਼ਲਤਾ ਦਾ ਬਡਾ ਸਜੀਵ ਵਰਣਨ ਏ ਤੇ ਕਨੈ ਢੋਗਰੋਂ ਦੀ ਹਿਸਤ ਤੇ ਦਲੇਰੀ ਦਾ ਬੀ ਖੂਬਸੂਰਤ ਵਰਣਨ ਏ।

“ਢੋਗਰੇ ਸ਼ੇਰ ਮਦਾਨੈ ਦੇ ਚਾਢੂ  
ਸਵੈ—ਸਵੈ ਪਰ ਇਕਲਾ ਭਾਰੁ।  
ਹੁਕਮਸਿੱਹ ਸਰਦਾਰ ਕਰਲਾਯਾ,  
ਨਸਦੇ ਬੈਰੀ ਦਾ ਧੀਰ ਬੰਧਾਯਾ।  
ਢੋਗਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਵੀਰ ਅਭਿਮਨ੍ਯੂ  
ਦੁਸ਼ਮਨੋਂ ਦੇ ਸੀਸ ਖੇਢਦਾ ਖਿੰਨੁ।  
ਢੋਗਰੇ ਦੇਸਾ ਦੀ ਰੀਤ ਪੁਰਾਨੀ,  
ਸਿਰ ਦੇਈ ਜਾਨਾ, ਪਰ ਹਾਰ ਨੇਈ ਖਾਨੀ।”

ਸਤਮੋਂ ਚ ਗੁਲਾਬਸਿੱਹ ਦੀ ਕਮਾਲ ਚਤਰਾਈ ਕਰੀ ਸਿਕਖੋਂ ਚ ਨਾਠ ਪੈਨੇ ਤੇ ਉਂਦੇ ਤੋਪਖਾਨੇ ਦੀ ਗੋਲਾਬਾਰੀ ਦਾ, ਤੇ ਗੁਲਾਬਸਿੱਹ ਦ੍ਰਾਰਾ ਇਸ ਅਵਸਥਾ ਚ ਕਮਾਨ ਸਭਾਲਨੇ ਦਾ ਜਿਕਰ ਏ ਮਿਥਾਂ ਮੋਟਾ ਦਾ ਧਬਰਾਈ ਜਾਨਾ ਤੇ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਾ ਚਤਰਾਈ ਕਨੈ ਕਮਾਨ ਸਭਾਲਨਾ ਤੇ ਡੀਡੇ ਦੀ ਮਦਦ ਕਨੈ ਸਪਾਇਥੋਂ ਚ ਪਰਤਿਯੈ ਜਾਨ ਫੂਕਨੇ ਦਾ ਵਰਣਨ ਹੋਏ ਦਾ ਏ।

“ਛਾਈ ਗੇਆ ਭੌਇ ਤੇ ਉਕਖੜੇ ਪੈਰ।  
ਨਸ਼ਸੀ ਪੇਆ ਬੈਰੀ, ਆਈ ਗੇਆ ਕੈਹਰ।

ਉਡੀ ਗੇਈ ਹੋਸ਼ ਓਹ ਗੜਬੜ ਪੇਆ।  
ਬੈਰੀ ਦਿਧੇਂ ਛਾਨਿਆਂ ਭਗਦੜ ਪੇਆ।”

“ਮਿਆਂ ਮੋਟਾ ਆਪੂ ਗੇ ਧਾਬਰਾਈ।  
ਚੁਪ੍ਪ ਭੌਚਕਕ ਹੋਈ ਗੇ ਸਪਾਹੀ।  
ਕਡਕਦਾ ਬੋਲਿਆ ਢੋਗਰ ਓਹ ਸ਼ੇਰ।  
ਤੁਟ੍ਟੀ ਪਗੋ ਯੋਦੇਓ! ਲਾਓਂ ਮਤ ਵੇਰ।  
ਮਰੀ ਜਾਗੇ ਲਾਜ ਦੇਸਾ ਦੀ ਰਕਖੀ।  
ਜੁਲਮ ਨਿੰ ਦਿਕਖਗੇ ਅਪਨੀ ਅਕਖੀ।  
ਆਪੂ ਗੁਲਾਬ ਨੇ ਥ'ਮੀ ਕਮਾਨ।  
ਵੀਰੋਂ ਬਿਚਾ ਪੇਈ ਗੇਈ ਬਕਖਰੀ ਜਾਨ।  
ਡੋਗਰੀ ਫੌਜਾ ਦਾ ਤੁੰਡ ਕਪਤਾਨ।  
ਅਗੋਂ—ਅਗੋਂ ਦੌਡੇਆ ਡੀਡੋ ਜਗਾਨ।”

ਤੇ ਅਠਮੇਂ ਖਣਡ ਇਚ, ਦਾਂ ਸਾਏਂ ਢੋਗਰੋਂ ਦੀ ਮੌਤੀ ਦਾ ਤੇ ਤੱਦੇ ਸਜ਼ੀ—ਖ਼ਬੀ ਬਕਖੀ ਖਿੰਡਨੇ ਦੇ ਜਿਕਰ ਦੇ  
ਕਨੈ—ਕਨੈ ਇਸ ਅਵਸਥਾ ਚ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਾ ਧੀਰਜ ਤੇ ਚਤੁਰਾਈ ਕਨੈ ਪੇਸ਼ ਐਨਾ ਤੇ ਫ਼ਹੀ ਅਪਨੀ ਕੁਟੀਨਤੀ ਕਨੈ  
ਦੁਸ਼ਮਨ ਪਰ ਹਮਲੇ ਦੀ ਤਰਕੀਬ ਬਨਾਨੀ ਤੇ ਡੀਡੋ ਦੀ ਮਦਦਾ ਕਨੈ ਤੱਦਾ ਸਾਮਨਾ ਕਰਨਾ ਲਭਦਾ ਏ।

“ਸਿਦਿਧਿਧੇਂ ਛਾਤਿਧੇਂ ਥਮਦੇ ਵਾਰ।  
ਬੋਲਦੇ ਦੇਸਾ ਦੀ ਜੈ—ਜੈ ਕਾਰ।  
ਏਸੀ ਕੋਈ ਮੌਤੀ ਦੀ ਪੇਈ ਪਲਟਟ।  
ਦੱਖ਼ ਸੌ ਢੋਗਰਾ ਮਰੀ ਗੇਆ ਝਾਟ।  
ਦੈਸੇ ਦਾ ਕਮਮ ਤੇ ਕੀਮਤੀ ਜਾਨ।  
ਇਧਾਂ ਕੈਹਸੀ ਕਢਚੈ ਮੁਖਤ ਪਰਾਣ।  
ਮਰਨਾ ਲਿਖੋਆ ਸਾਫੇ ਨਸੀਬ।  
ਸੋਚੀ ਅਸੋਂ ਲੈਤੀ ਏ, ਇਕਕ ਤਰਕੀਬ।  
ਦਸ—ਬੀਹ ਆਦਮੀ ਖਬੇ ਬਕਖੀ ਜਾਓ।  
ਢੋਲ ਬਜਾਓ ਤੇ ਦਬੀ ਕਰਲਾਓ।  
ਡੀਡੋ ਜੀ ਸਦੀ ਲੈਓ ਅਪਨਾ ਦਲ।  
ਅਜ਼ ਅਸੋਂ ਦਸ਼ਸਨਾ ਅਪਨਾ ਬਲ।  
ਸੁਨੇਆ ਹੁਕਮ ਤੇ ਉਠੀ ਗੇ ਸਾਰੇ।  
ਅਪਨੇ ਕਮਮੇ ਓਹ ਜੁਟੀ ਪੇ ਸਾਰੇ।”

ਨੈਮੋਂ ਖਣਡ ਇਚ ਤਾਂਦਾ ਤਵੀ ਗੀ ਡਕਿਏ, ਦੁਸਮਨ ਦੀ ਤੋਫੇਂ ਗੀ ਬੇਕਾਰ ਕਰਨੇ ਤੇ ਫੀ, ਸਿਕਖੋਂ ਪਰ ਹਮਲਾ ਕਰਿਏ ਉਨੋਂਗੀ ਬਡ੍ਡੀ ਟਕਾਨੇ ਤੇ ਹਰਾਨੇ, ਕਨੈ ਬਚੇ—ਖੁਚੋਂ ਗੀ ਕੈਦੀ ਬਨਾਨੇ ਦਾ ਬਖਾਨ ਐ। ਤਵੀ ਨਦੀ ਦਾ ਕਾਲਕਾ ਰੂਪ ਧਾਰਿਏ ਦੁਸਮਨੋਂ ਗੀ ਪਸ਼ ਕਰਨੇ ਚ ਯੋਗਦਾਨ ਦੇਨਾ ਬੜਾ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਐ।

'ਪਲੈ ਬਿਚਵ ਮੁਕਕੀ ਗੇਆ ਬਨ ਓ ਪਕਕਾ।  
 ਤਵੀ ਬਿਚਵ ਲਾਗੀ ਗੇਆ ਬਕਖਰਾ ਡਕਕਾ।  
 ਫਟ੍ਟੇਆ ਬਦਲ ਤੇ ਤ੍ਰੁਟ੍ਟੇਆ ਬਨ।  
 ਹਸ਼ਸੇਆ ਡੋਗਰੇ ਦੇਸਾ ਦਾ ਚਨ।  
 ਡੋਗਰੇ ਦੇਸਾ ਦੀ ਰਕਖ ਪਰਤਕਖ।  
 ਕਾਲਕਾ ਕੂਕਦੀ ਦੌਡੀ ਏ ਪਕਕ।  
 ਰੁਫ਼ਿਧਿਆਂ ਕੁਪਿਧਿਆਂ ਢੁਬਿਧਿਆਂ ਤੋਫਾਂ।  
 ਰੁਫ਼ਿਧਿਆਂ ਜਂਦਿਆਂ ਜੰਦਿਆਂ ਲੋਥਾਂ।  
 ਨਿਕਲੇ ਜੋ ਕੋਈ ਬਚੇ ਬਚਾਏ।  
 ਅਟ੍ਟ ਸੌ ਸੁਰਮੋਂ ਕੈਦੀ ਬਨਾਏ।  
 ਮੁਕਕੀ ਗੇਆ ਜਾਂਗ ਤੇ ਫਟੀ ਗੇਈ ਪੋਹ।  
 ਚੱਢੀ ਗੇਆ ਦਿਨ ਤੇ ਘਟੀ ਗੇਈ ਤੌਹ  
 ਜਨ ਜਨ ਖੁਸ਼ ਦਿਨ, ਵਿਜਧ ਦਾ ਚੰਗਾ।  
 ਫਰ—ਫਰ ਝੁਲ੍ਲੇਆ ਕੇਸਰੀ ਝੜਾ।"

ਡੋਗਰੇ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਇਚ ਕੋਈ ਮਸਾਲਾ ਨ ਜੇ ਅਪਨੀ ਈਨ ਅਨਖ ਰਕਖਨੇ ਤੇ ਅਜਾਦੀ ਲੇਈ ਪ੍ਰਾਣ ਦੇਈ ਓਡਨੇ, ਤਾਂਦੀ ਪੁਰਾਨੀ ਰੀਤ ਐ। ਡੋਗਰੇ ਦੀ ਇਸੈ ਬੀਰਤਾ ਦਾ ਵਖਾਨ ਤੇ ਡੋਗਰੇ ਦੇ ਯੁਦਧ—ਕੌਸ਼ਲ ਦਾ ਜੇਹੜਾ ਖੁਬਸੂਰਤ ਵਰਣਨ ਪਾਂਤ ਹੋਰੋਂ 'ਬੀਰ —ਗੁਲਾਬ' ਚ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ਆਹ ਸਰਾਹਨੇਯੋਗ ਏ ਤੇ ਕਾਵਿ ਕਲਾ ਦਾ ਇਕ ਉਤਕ੃ਸ਼ਟ ਨਮੂਨਾ ਐ।

## ii) ਭਾਵ ਤੇ ਕਲਾ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕਨੈ ਬੀਰ—ਗੁਲਾਬ ਕਾਵਿ ਦਾ ਮੁਲਧਾਂਕਨ

'ਬੀਰ—ਗੁਲਾਬ' ਖੰਡ ਕਾਵਿ ਦੇ ਰੂਪਾ ਚ ਇਕ ਉਤਕ੃ਸ਼ਟ ਕਾਵਿ—ਰਚਨਾ ਏ ਜਿਸਗੀ ਲੋਕਾਂ ਚ ਏਕਤਾ ਅਜਾਦੀ ਦੀ ਤਾਂਹਾਂਗ ਤੇ ਛਾਦਰੀ ਦਿਧਿਆਂ ਤ੍ਰੁਟਿਧਿਆਂ ਤਨਦਾਂ ਜੋਡਨੇ ਦੇ ਉਦ੍ਦੇਸ਼ ਕਨੈ ਲਿਖੇਆ ਗੇਆ। ਇਸ ਕਾਵਿ ਦੀ ਰਚਨਾ ਦੇ ਬੇਲ੍ਲੇ ਪਾਂਤ ਹੁਦੇ ਅੰਦਰ ਸਥਾਨੀ ਭਾਵ ਇਨ੍ਹੋਂ ਸੈਹਜ ਹੋਈ ਚੁਕੇ ਦੇ ਹੋ ਜੇ ਰਸਤੇ ਚਲਦੇ ਜਾਂ ਸਥਾਰਣ ਕਮ ਕਰਦੇ ਬੀ ਹਤਥ—ਪੈਰ ਤਲਵਾਰੀ ਲਡਾਈ ਆਹਲਾ ਲੇਖਾ ਆਪ ਮੁਹਾਰੇ ਚਲਦੇ ਰੌਹਣੇ।

ਖੰਡ—ਕਾਵਿ ਦੇ ਨਿਧਿਮੇਂ ਮਤਾਬਕ 'ਬੀਰ ਗੁਲਾਬ' ਇਕ ਉਤਕ੃ਸ਼ਟ ਰਚਨਾ ਏ, ਜਿਸ ਚ ਸਿਕਖੋਂ ਤੇ ਡੋਗਰੇ ਮਜ਼ਾਟੈ ਲਡਾਈ ਦੀ ਇਕ ਘਟਨਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਦ ਵਰਣਨ ਹੋਏ ਦਾ ਏ। ਇਹ 1809 ਈਂਡ ਦੀ ਘਟਨਾ ਏ ਜਿਸਲੈ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦੀ ਬਰੇਸ 15 ਬਾਰੇ ਹੀ। ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੱਹ ਨੇ ਡੋਗਰਾ ਰਾਜ ਦੀ ਕਮਜ਼ੋਰ ਸਰਪਰਸ਼ੀ ਦਾ ਮੌਕਾ ਤਾਡਿਧੈ

ਸਰਦਾਰ ਹੁਕਮ ਸਿੰਹ ਦੀ ਕਮਾਨ ਹੇਠ ਫੌਜਾਂ ਭੇਜਿਥੈ ਤਾਂਵੀ ਦੇ ਪਾਰਾ ਜਸ਼੍ਨੂ ਪਰ ਹਮਲਾ ਕਰੀ ਦਿੱਤਾ । ਉਸ ਔਖੀ ਘੜੀ ਚ ਦੇਸਾ ਦੀ ਆਨ ਬਚਾਨੇ ਖਾਤਰ ਗੁਲਾਬ ਸਿੰਹ ਵੀਰ ਅਭਿਮਨ੍ਯੁ ਦਾ ਰੂਪ ਘਾਰਿਧੇ ਮਦਾਨੇ ਜਾਂਗ ਚ ਉਤਰੀ ਆਧਾ ਤੇ ਅਪਨੀ ਬਾਦਰੀ, ਦਲੇਰੀ ਤੇ ਜਾਹੋ—ਜਲਾਲ ਕਨੈ ਬੈਰਿਧੇ ਗੀ ਸੂਹੂ ਤੋਡੁ ਜਬਾਬ ਦਿਤਾ ਕਵਿ ਨੇ ਇਸ ਰਚਨਾ ਰਾਹੋਂ ਡੋਗਰੇ ਦੀ ਸੁਲੜੀ ਦੀ ਧੁੜ੍ਹ ਨੀਤਿ ਤੇ ਧੁੜ੍ਹਕਲਾ ਕੌਸ਼ਲ ਸਰਵਨਥੀ ਗੈਰਖ—ਗਾਥਾ ਗੀ ਭਾਵੇਂ ਦੇ ਤੀਵਰ—ਪ੍ਰਵਾਹ ਤੇ ਭਾਵੇਂ ਮਤਾਬਕ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਤੇ ਪ੍ਰਵਾਹ ਚ ਗੁਹਾਡੇ ਦਾ ਏ:-

“ਡੋਗਰੇਂ ਦੇ ਧੋਡੇ ਦੌਡੇ ਜਾਂਦੇ ।  
ਬੈਰਿਧੇਂ ਦੇ ਠਠ ਤ੍ਰੋਡੇ ਜਾਂਦੇ ।  
ਧਨ ਉਸ ਮਾਝ ਦੀ ਕੋਖ ਸੁਹਾਈ ।  
ਜਿਸ ਏ ਜਸ਼ੀ ਏ ਜੋਤ ਸੁਹਾਈ ।  
ਡੋਗਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਬੀਰ ਅਭਿਮਨ੍ਯੁ,  
ਦੁਸ਼ਮਨੇਂ ਦੇ ਸੀਸ ਖੋਡਦਾ ਖਿ'ਨੁ  
ਜਿਸ ਪਾਸੈ ਧੂਡੁ ਮਾਰਦਾ ਜਾਂਦਾ,  
ਬੈਰਿਧੇਂ ਦੇ ਸੂਢੁ ਤੁਆਰਦਾ ਜਾਂਦਾ ।  
ਬੀਰ—ਗੁਲਾਬ ਦੀ ਬਕਖਾਰੀ ਟੋਲੀ,  
ਪ੍ਰਲਿ ਦੇ ਦੂਤ ਖੋਡਦੇ ਹੋਲੀ ।

ਇਕੈ ਘਟਨਾ ਪਰ ਅਧਾਰਤ ਹੋਨੇ ਦੇ ਕਨੈ —ਕਨੈ ਇਸ ਖੰਡ —ਕਾਵਿ ਚ ਇਕੈ ਰਸ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਤਾ ਏ ਤੇ ਓਹ ਏ ਵੀਰ ਰਸ। ਘਮਾਸਾਨ ਲਡਾਈ ਦਾ ਸਾਮਧਾਮ ਚਿਤਰ ਖਡੇਰਨੇ ਆਹਲੀ ਗੁਡਗਜ਼ੋਂ ਤੇ ਟਨਕਾਰੋਂ ਆਹਲੀ ਕਠੋਰ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਇਸ ਰਚਨਾ ਦਾ ਮੁਕਖ ਗੁਣ ਏ। ਛਨਦ ਤੇ ਅਲਕਾਰ ਬੀ ਭਾਵ—ਪਕਖ ਦਾ ਸਾਕਾਤਕਾਰ ਕਰਾਨੇ ਚ ਬੜੇ ਸੈਹਧੋਗੀ ਨ:-

“ਕਡਕੇਆ ਬਦਲ ਤੇ ਤੁਟਿਦਿਆ ਧਾਰਾਂ,  
ਤੁਟਟੀ ਪੇਇਧਾਂ ਪੰਜ ਸੌ ਤਲਵਾਰਾਂ ।  
ਭਲਾਂ ਤੇ ਵਰਛਿਧਾਂ ਉਠਦਿਧਾਂ ਲਭਨ ।  
ਸੈਕਡੇ ਬਿਜਲਿਧਾਂ ਤੁਟਦਿਧਾਂ ਲਭਨ ।  
ਖਾਨਨ—ਖਾਨਨ ਰਵਨਕਾਰ ਸਨੌਚੈ,  
ਮਾਰੋ—ਮਾਰੋ ਲਲਕਾਰ ਸਨੌਚੈ ।  
ਗਡਿੰਜਾ ਗਡਿੰਧਾ ਗਡੁ ਗਜਦਾ ਮਾਰੁ,  
ਧੁੜ੍ਹ ਦੇ ਵੀਰ ਤੁਫਾਨੇਂ ਦੇ ਤਾਰੁ ।  
ਡੋਗਰੇ ਸ਼ੋਰ ਮਦਾਨੇਂ ਦੇ ਚਾਢ੍ਹੁ  
ਸਵੈ'ਸਵੈ ਪਰ ਇਕਕਲਾ ਭਾਰੁ ।”

ਏਹ ਤੇ ਸਮਾਵਕ ਗੱਲ ਐ ਜੇ ਸਦਾਨੇ ਜਾਂਗ ਚ ਜਿਥੈ ਛਾਦਰੀ ਤੇ ਪਰਾਕਰਮ ਚ ਵੀਰ ਰਸ ਦੀ ਅਨੁਮੂਤਿ ਹੋਂਦੀ ਏ ਉਥੋਂ ਬੈਰਿਧੇ ਦੀ ਮਾਰਕਾਟ ਤੇ ਤਬਾਹੀ ਦੇ ਰੂਪਾ ਚ ਮਧਾਨਕ ਤੇ ਵੀਭਤਸ ਰਸੋਂ ਦੇ ਦ੍ਰਿਸ਼ ਬੀ ਕਨੈ ਗੈ ਲਭਦੇ ਨ। ਇਸ ਖੰਡ ਕਾਵਿ ਚ ਇਨੋਂ ਦੌਨੋਂ ਰਸੋਂ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਬੀ ਬਡੇ ਜਾਨਕਾਰ ਨ।

ਗਿਦਦੱਡੇ ਦਾ ਕੂਕਨਾ, ਫਵੀ ਦਾ ਫਿੰਡਨਾ, ਪ੍ਰਲਿ ਦੀ ਨਾਗਨੀ ਤੇ ਰਣ ਡਾਕਿਨੀ ਬਨਿਧੈ ਤਵੀ ਦਾ ਤ੍ਰੁਟੀ ਤ੍ਰੁਟੀ ਪੈਨਾ, ਪੂਤਨਾ ਰਾਕਾ ਦਾ ਉਮਲਨਾ, ਕਾਲਕਾ ਤੇ ਚੌਡਾ ਦਾ ਬਾਲ ਖਲਾਰਿਧੈ ਲਸ—ਲਸ ਕਰਦੀ ਜੀਮ ਕਡਢਨਾ, ਦਨਦ ਕਿਟਕਨਾ ਬਗੈਰਾ ਵਰਣ ਵਾਤਾਵਰਣ ਗੀ ਖੋਫਨਾਕ ਰੂਪ ਦੇਨੇ ਚ ਚਰਮਸੀਮਾ ਉਘਰ ਪੁਜਦੇ ਨ। ਇਧਾਂ ਗੈ ਵੀਭਤਸ ਰਸ ਦਾ ਇਕ ਨਸੂਨਾ ਇਸ ਚਾਲੀ ਏ।

ਹਠ ਨਿੰ ਤਜਦੇ ਸੂਰਮੇਂ ਮਾਨ੍ਨੀ,  
ਖੂਨੋ ਖੂਨ ਹੋਆ ਤਵੀ ਦਾ ਪਾਨੀ।  
ਹਥ, ਪੈਰ ਜਾਡਾ ਪਟਟ ਤੇ ਪਿਟਦ,  
ਮਾਸੈ ਦੇ ਲੋਥਡੇ ਰੁਢਦੇ ਬਿਚਚ।  
ਮੁੰਡਿਆਂ ਬੀ ਕਟੋਨ ਲਗੀ ਪੇਇਆਂ,  
ਲਾਸ਼ੋਂ ਪਰ ਲਾਸ਼ਾ ਪਰਤੋਨ ਲਗੀ ਪੇਇਆਂ।  
ਖੌਲਦੇ ਖੂਨੈ ਦੇ ਹੁਟਟੇ ਫੁਹਾਰੇ,  
ਸਜ਼ਰੀ ਭਾਧ ਤੇ ਤਟਟੇ ਗਫਾਰੇ।

ਅੰਲਕਾਰੋਂ ਦੀ ਬਰਤੂਨ ਬੀ ਕਾਵਿ ਗੀ ਚਾਰ—ਚਨ ਨਾਂਦੀ ਏ ਜਿ'ਧਾਂ ਉਤ੍ਰੇਕਾ ਅੰਲਕਾਰੋਂ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ ਇਸ ਚਾਲੀ ਨ।

ਕਾਲੇ —ਕਾਲੇ ਬਦਲ ਇਧਾਂ ਬੜੋਂਦੇ ਨ,  
ਅਮਬਰੈ ਪਰ ਜਿ'ਧਾਂ ਪਛਾਡ ਪਰਤੋਦੇ ਨ।  
ਠੱਡਾ ਪਾਨੀ, ਜਿ'ਧਾਂ ਚੀਰਦੀ ਆਰੀ।  
ਬੈਰੀ ਸਧਾਹੀ ਨੇਈ ਜਾਨਦੇ ਤਾਰੀ।  
ਮੌਤੀ ਦਾ ਦੂਤ ਹੁਕਾਰਦਾ ਜਿ'ਧਾਂ।  
ਬਾਸੁਕੀ ਨਾਗ ਫੁਂਕਾਰਦਾ ਜਿ'ਧਾਂ।

### ਅਨੁਪ੍ਰਾਸ ਅੰਲਕਾਰ

ਬੌਢੀ ਏ ਚੰਡਕਾ ਮਲ ਸੁਕਰਾਲ।  
ਛਲ—ਛਲ ਛੁਟੇਆ ਛਲ ਬਿਕਰਾਲ।  
ਸਨ—ਸਨ ਸਨਕਦੇ ਬਰਸਦੇ ਤੀਰ  
ਪਿਛੜੇ ਪੈਰ ਨੇਈ ਪਰਤਦੇ ਵੀਰ।  
ਖਾਨ—ਖਾਨ ਖਾਨਕਾਰ ਸਨੋਚੈ।

ਮਾਰੋ ਮਾਰੋ ਲਲਕਾਰ ਸਨੋਚੈ।  
ਗਡਿੰਜਾ —ਗਡਿੰਜਾ ਗੜ ਗਜਦਾ ਮਾਰੁ,  
ਧੁੜੇ ਦੇ ਵੀਰ ਤੁਫਾਨੇਂ ਦੇ ਤਾਰੁ

## ਖੁਆਨ

ਹੋਨਹਾਰੋਂ ਨੇਇਥੋਂ ਸਿਕਖਨਾ ਪੌਂਦਾ,  
ਕਂਡੋਂ ਦਾ ਮੂਹ ਤ੍ਰਿਕਖਨਾ ਹੋਂਦਾ।

ਇਸ ਚਾਲੀ ਅਸ ਆਕਖੀ ਸਕਨੇਅਂ ਜੇ ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਂਤ ਹੋਰੋਂ ਜਿਥੋਂ ਭਾਵ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕਨ੍ਹੈ ਖੂਵਸੂਰਤ ਭਾਸਾ ਦਾ ਇਸ਼ਟੇਮਾਲ ਕਰਿਯੈ ਤੇ ਕੇਈ ਚਾਲੀ ਦੇ ਉਦਾਹਰਣ ਦੇਇਥੈ ਵੀਰ ਗੁਲਾਬ ਦੀ ਉਤਕੁਝਟਾ ਗੀ ਬਧਾਯਾ ਏ ਉਥੋਂ ਗੈ ਖੂਵਸੂਰਤ ਅਲਕਾਰੋਂ ਰਸੇ ਤੇ ਸੁਆਨੋਂ ਦੀ ਬਰਤੂਨ ਕਰਿਯੈ ਇਸਗੀ ਕਲਾ ਦੀ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕਨ੍ਹੈ ਬੀ ਸਗੋਸਾਰ ਕੀਤਾ ਏ ਤੇ ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਦੇ ਰੂਪਾ ਚ ਇਕ ਉਤਕੁਝਟ ਕਾਵਿ—ਕਲਾ ਦਾ ਨਮੂਨਾ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ਜਿਸਗੀ ਪਫਿਧੈ ਹਰ ਕੋਈ ਉਂਦੀ ਕਾਨੀ ਦੀ ਸਕਤ ਗੀ ਮਨਨੇ ਤਾਈ ਮਜ਼ਬੂਰ ਹੋਈ ਜਂਦਾ ਏ।

### 9.3.2 ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਾ ਚਰਿਤ੍ਰ—ਚਿਤ੍ਰਣ ਵੀਰ—ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਸਾਂਦਰਭ ਚ।

1809 ਈ0 ਚ ਸਿਕਖੋਂ ਢੋਗਰੋਂ ਮੜਾਈ ਲੜਾਈ ਦੀ ਜਿਸ ਧਟਨਾ ਦਾ ਵਰਣਨ ਇਸ ਕਾਵਿ ਚ ਹੋਏ ਦਾ ਏ ਉਸਲੈ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦੀ ਬਰੇਸ 15 ਬਰੇ ਹੀ। ਲਾਹੌਰ ਦੇ ਮਹਾਰਾਜਾ ਰਣਜੀਤ ਸਿੱਹ ਨੇ ਢੋਗਰਾ ਰਾਜ ਦੀ ਕਮਜ਼ੋਰ ਸਰਪਰਸ਼ੀ ਦਾ ਮੌਕਾ ਤਾਡਿਧੈ ਸਰਦਾਰ ਹੁਕਮ ਸਿੱਹ ਦੀ ਕਮਾਨ ਹੇਠ ਫੌਜਾਂ ਮੇਜਿਧੈ ਤਵੀ ਦੇ ਪਾਰਾ ਜਮ੍ਹਾ ਪਰ ਹਮਲਾ ਕਰੀ ਦਿਤਾ। ਉਸ ਔਖੀ ਘੜੀ ਚ ਦੇਸਾ ਦੀ ਆਨ ਬਚਾਨੇ ਖਾਤਰ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਵੀਰ ਅਮਿਮਨ੍ਹੁ ਦਾ ਰੂਪ ਧਾਰਿਧੈ ਮਦਾਨੇ ਜਾਂਗ ਚ ਉਤਰੀ ਆਧਾ ਤੇ ਅਪਨੀ ਛਾਦਰੀ, ਦਲੇਰੀ ਤੇ ਜਾਹੋ—ਜਲਾਲ ਕਨ੍ਹੈ ਬੈਣਿਧੈ ਗੀ ਮੂਹ ਤੋਡ ਜਵਾਬ ਦਿਤਾ। ਪਂਤ ਹੋਰੋਂ ਇਸ ਕਾਵਿ ਚ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਹੁੰਦੀ ਸੁਲੜੀ ਦੀ ਧੁੜ੍ਹ ਨੀਤਿ ਤੇ ਧੁੜ੍ਹਕਲਾ ਕੌਸ਼ਲ ਸਰਬਨਈ ਗੈਰਵ ਗਾਥਾ ਗੀ ਬੱਡੇ ਸਫਲ ਫੰਗ ਕਨ੍ਹੈ ਚਿਤ੍ਰੋਂ ਦਾ ਏ। ਪਂਤ ਹੋਰੋਂ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਗੀ ਬੜੀ ਨਾਟਕੀਧਤਾ ਕਨ੍ਹੈ ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ। ਪੈਹਲੋਂ ਤੁਂਦੀ ਛੜੀ ਇਕ ਝਲਕ ਦਸ਼ੀ ਗੇਦੀ ਏ ਤੇ ਫਹੀ ਉਸਦੀ ਰੋਬਦਾਬੈ ਆਲੀ ਸ਼ਖ਼ਬੀਧਤ ਤੇ ਟਾਠਦਾਰ ਲਾਵੇ ਦਾ ਤੇ ਲੜਾਈ ਦੇ ਮਦਾਨੈ ਚ ਨੁਹਾਡੀ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਕਾਰਕਰਦਗੀ ਦਾ ਬੱਡੇ ਬਸਤਾਰਾ ਕਨ੍ਹੈ ਵਰਣਨ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ।

ਕਾਵਿ ਚ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦੀ ਦੁੱਈ ਝਲਕ ਦੁਏ ਖਣਡ ਚ ਮਿਲਦੀ ਏ ਜਿਸ ਚ ਤੁਂਦੇ ਰਾਜਪੂਤੀ ਜੋਸ਼ ਦਾ ਤੇ ਤੁਂਦੀ ਲੌਹਕੀ ਉਮ੍ਰ ਦਾ ਵਰਣਨ ਮਿਲਦਾ ਏ।

“ਉਮਰ ਦਿਕਖਿਆਂ ਕੁਲ ਪੰਦਰਾ ਸਾਲ,  
ਚੇਹੜੇ ਉਪਪਰ ਰਾਜਪੂਤੀ ਜਲਾਲ।  
ਲਾਡੋਂ—ਲਾਡੋਂ ਸਲਾਮੈ ਆਖਦੇ ਸਾਹਬ,  
ਬਨੀ ਆਧਾ ਅਜ਼ਜ਼ ਸਿੱਹ ਗੁਲਾਬ।

ਹੋਨਹਾਰੇਂ ਨੇਝਧਿਆਂ ਸਿਕਖਨਾ ਪੈਂਦਾ,  
ਕਹੋਂ ਦਾ ਸੂਹੁ ਤ੍ਰਿਕਖਨਾ ਹੋਂਦਾ ॥”

ਚੋਥੈ ਖੰਡ ਚ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਹੁਂਦੀ ਰੋਬਦਾਬੈ ਆਹਲੀ ਸ਼ਾਖਸੀਧਤ ਤੇ ਠਾਠਦਾਰ ਲਾਵੇ ਦਾ ਜਿਕਰ ਏ ਜਿਸ ਚ  
ਉਂਦਾ ਰੂਪ ਛਲੈਪਾ ਇਸ ਚਾਲੀ ਉਗਡੇ ਦਾ ਏ ਜੇ ਉਸਦੀ ਝਾਲ ਝਲਲਨਾ ਬੀ ਮੁਖਿਕਲ ਏ।

“ਚੈਡੀ ਛਾਤੀ ਪਿੰਡਾ ਬਟ੍ਟੇ ਦਾ ਦੋਹਰਾ,  
ਉਚਚਾ ਮਾਥਾ ਰਾਂਗ ਜਿਨ੍ਦੂ ਦਾ ਗੇਰਾ।  
ਚੁਸ਼ਟ ਘਟਨਾ ਤੇ ਚਾਨਨਾ ਜੋੜਾ,  
ਕਾਲਿਆਂ ਪਟਿਟਧਿਆਂ ਰੇਸ਼ਮੀ ਢੋਰਾ।  
ਲਕਕ ਕਮਰਬਨਦ ਬਦਵੇ ਦਾ ਪਕਕਾ,  
ਤਿਲ੍ਲੇਦਾਰ ਕਸ਼ੇ ਦਾ ਅੰਗਰਕਖਾ।  
ਲਾਲ ਪਗਗਾ ਕਲਗੀ ਝਲਕਾਇ,  
ਲਾਲ ਚੇਹਰਾ ਨਜ਼ਰ ਝਲਲੀ ਨੇਈ ਜਾ।  
ਗਾਤਰਾ ਸੁਚਵਾ ਤਲਵਾਰ ਸੁਨੈਹਰੀ,  
ਹਤਥੋਂ ਬਰਛੀ ਪਿਟਠੀ ਢਾਲ ਸੁਆਰੀ।  
ਥੋਹੜਾ ਬਿਦਕੇ ਲਕਕ ਲਿਥਕੇ ਕਟਾਰੀ,  
ਦੂਰ ਹਤਥੋਂ ਖਿਚੀ ਰਾਸ ਸਮਹਾਲੀ।  
ਮੌਤੀ ਅਗੋਂ ਨਿਕਲੀ ਸਿਰ ਤਾਨੀ,  
ਦਿਕਖੋ ਲੋਕੋ ਰਾਜਪੂਤ ਜਵਾਨੀ ॥”

ਛੇਮੇ ਖੰਡ ਚ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਾ ਯੁਦਫ ਦੇ ਮਦਾਨ ਚ ਵੀਰਤਾ ਕਨੈ ਲਡਨਾ ਤੇ ਦੁਸ਼ਮਨ ਦੇ ਸਿਰੋਂ ਕਨੈ ਖੇਡਨੇ  
ਦਾ ਵਰਣ ਇਨ੍ਹਾ ਖੁਵਸੂਰਤ ਏ ਜੇ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਏ ਜੇ ਓਹ ਯੁਦਫ ਕੌਸ਼ਲ ਚ ਕਿਨ੍ਹੇ ਨਿਪੁਨ ਹੈ ਤੇ ਕਵਿ ਨੇ ਉਨੌਂਗੀ  
ਡੋਗਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਅਭਿਮਨ੍ਯੂ ਆਕਿਖਧੈ ਤੁਂਦੀ ਛਾਦਰੀ ਬਾਰੈ ਜੋ ਵਰਣ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ਓਹ ਦਿਕਖਦੇ ਗੈ ਬਨਦਾ ਏ।

“ਡੋਗਰੇ ਦੇਸੈ ਦਾ ਵੀਰ ਅਭਿਮਨ੍ਤੂ  
ਦੁਸ਼ਮਨੋਂ ਦੇ ਸੀਸ ਖੇਡਦਾ ਖਿਨ੍ਹੂ।  
ਜਿਸ ਪਾਸੈ ਧੂਡ ਮਾਰਦਾ ਜਂਦਾ,  
ਬੈਰਿਧੈ ਦੇ ਸੂਫ ਤੁਆਰਦਾ ਜਂਦਾ।  
ਬੀਰ ਗੁਲਾਬ ਦੀ ਬਕਖਰੀ ਟੋਲੀ,  
ਪ੍ਰਲਿਧ ਦੇ ਦੂਤ ਖੇਡਦੇ ਹੋਲੀ।  
ਸਧੋਂ ਦੇ ਨਮੋਂ ਜਵਾਨ ਨ ਸਾਰੇ,  
ਸਮਸ਼ਦੇ ਬੀਰ ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਸ਼ਾਰੇ ॥”

ਸਤਮੋ ਖੰਡ ਚ ਗੁਲਾਬ ਸਿਹ ਦੀ ਕਮਾਲ ਚਤਰਾਈ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਹੋਵੇਂ ਨ ਸਿਖਿੋ ਆਸੇਆ ਤੋਪਖਾਨੇ ਦੀ ਗੋਲਾਬਾਰੀ ਕਰੀ ਜਿਸਲੈ ਆਮ ਜਨਤਾ ਤੇ ਸਪਾਹਿਯੋਂ ਦੇ ਕਨੈ ਕਨੈ ਸਿਧਾ ਮੋਟਾਂ ਹੋਰ ਬੀ ਧਾਬਰੀ ਜਾਂਦੇ ਨ ਤਾਂ ਗੁਲਾਬ ਸਿਹ ਹੋਰ ਬਡੀ ਕੁਟਨਿਤੀ ਕਨੈ ਕਮਾਨ ਅਪਨੇ ਹੇਠਾ ਲੇਖਿ ਸਪਾਹਿਯੋਂ ਚ ਸੁਡਿਧੈ ਉਤਸਾਹ ਭਰਦੇ ਨ ਤੇ ਅਪਨੀ ਨਮੀ—ਨਮੀ ਤਰਕੀਬੋਂ ਕਨੈ ਦੁਸ਼ਮਨ ਗੀ ਭਲਕੈਰਦੇ ਨ। ਇਸ ਚਾਲੀ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਏ ਜੇ ਓਹ ਸਿਰਫ ਜੋਸ਼ ਕਨੈ ਗੈ ਨੈਈ ਹੋਸ਼ ਕਨੈ ਬੀ ਕਮ ਲੈਂਦੇ ਹੋ।

‘ਮਿਥਾਂ ਮੋਟਾ ਆਪੂ ਗੇ ਘਬਰਾਈ ।  
ਚੁਪ੍ਪ ਭੈਚਕਕ ਹੋਈ ਗੇ ਸਪਾਹੀ ।  
ਕਡਕਦਾ ਬੋਲਲੇਆ ਢੋਗਰਾ ਓਹ ਸ਼ੇਰ ।  
ਤ੍ਰੁਟਟੀ ਪਵਾਂ ਧੋਵੇਓਂ । ਲਾਓਂ ਮਤ ਦੇਰ ।  
ਘੋੜ —ਸਵਾਰੋ ਤੁਸ ਘੋੜੇਂ ਗੀ ਛੋਡੋ ।  
ਬੈਰੀ ਦਿਧਾਂ ਰਕਖੇਆ—ਪਂਗਤਾਂ ਤ੍ਰੋਡੋ ।  
ਆਪੂ ਗੁਲਾਬ ਨੇ ਥ’ਮੀ ਕਮਾਨ ।  
ਵੀਰੋਂ ਬਿਚਚ ਪੇਈ ਗੇਈ ਬਕਖਰੀ ਜਾਨ।’’

ਅਠਮੋ ਖੰਡ ਚ ਬੀ ਤੱਦੀ ਕੁਸ਼ਲ ਯੁਦਧ ਰਣਨਿਤੀ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਹੁਵੇਂ ਨ ਜੇ ਓਹ ਕਿਧਾਂ ਕੇਈ ਚਾਲੀ ਦਿਧਾਂ ਤਰਕੀਬਾ ਲਡਾਇਥੈ ਅਪਨੇ ਸਪਾਹਿਯੋਂ ਗੀ ਦੁਕਖ ਦਿੰਦੇ ਹੋ ਤੇ ਤੱਦੇ ਸਪਾਹੀ ਕਿਧਾਂ ਤੱਦਿਧਾਂ ਨਿਤੀਧਾਂ ਮਨਿਧਾਂ ਸਫਲ ਹੋਵੇਂ ਹੋ।

“ਤੁਨਦ ਕਰੀ ਰਕਖਨਾ ਸਥ ਤਲਵਾਰਾਂ ।  
ਸੀਟਿਧਾਂ ਬਜਦੇ ਮਾਰੇਓ ਛਾਲਾਂ ।  
ਦਸ—ਬੀਹ ਆਦਮੀ ਖਬੋਂ ਬਕਖੀ ਜਾਓ ।  
ਢੋਲ ਬਜਾਓ ਤੇ ਦਬੀ ਕਰਲਾਓ ।  
ਸੁਨੇਆ ਹੁਕਮ ਤੇ ਉਠੀ ਗੇ ਸਾਰੇ ।  
ਅਪਨੇ ਕਮੋਂ ਓਹ ਜੁਟੀ ਪੇ ਸਾਰੇ।”

ਨੌਮੋ ਖੰਡ ਚ ਬੀ ਗੁਲਾਬ ਸਿੰਹ ਹੁਂਦੀ ਗਜਬ ਦੀ ਫੁਰ੍ਤੀ ਤੇ ਤੌਲੇ ਥਮਾਂ ਤੌਲੇ ਰਣਨਿਤੀ ਗੀ ਬਦਲਨੇ ਦੀ ਕਾਬਲਿਤ ਲਭਦੀ ਏ ਜਿਸ ਚ ਓਹ ਤਬੀ ਦੇ ਪਾਨੀ ਗੀ ਫਕਿਖੈ ਤੇ ਫਹੀ ਉਸ ਬਾਨ ਗੀ ਤ੍ਰੋਡਿਧੈ ਕਿਧਾਂ ਦੁਸ਼ਮਨ ਦਾ ਮਾਲੀ ਤੇ ਜਾਨੀ ਨੁਕਸਾਨ ਕਰਦੇ ਨ ਤੇ ਅਪਨੀ ਵਿਯ ਪਤਾਕਾ ਫਰਹਾਵੇਂ ਨ।

“ਡੋਗਰੇ ਸ਼ੇਰਾ ਦੀ ਦਿਕਖੀ ਛਤਾਬ ।  
ਜਿਤਥੋਂ ਦਿਕਖੋ ਉਥੋਂ ਵੀਰ ਗੁਲਾਬ ।  
ਠੰਡਾ ਪਾਨੀ, ਜਿਧਾਂ ਚੀਰਦੀ ਆਰੀ ।  
ਬੈਰੀ ਸਪਾਹੀ ਨੈਈ ਜਾਨਦੇ ਤਾਰੀ।

ਨਿਕਲੇ ਜੋ ਕੋਈ ਬਚੇ—ਬਚਾਏ।  
 ਅਟਠ ਸੌ ਸੂਰਮੇਂ ਕੈਦੀ ਬਨਾਏ।  
 ਲਛਮਨ ਜਤੀ ਆਈ ਜਸ਼ੇਆ ਪਕਕ।  
 ਘਰ—ਘਰ ਛਾਯਾ ਗੁਲਾਬ ਦਾ ਜਸ਼ਾ॥

ਇਸ ਕਾਵਿ ਚ ਪਤ ਹੋਰੋਂ ਜਿਸ ਚਾਲੀ ਕਨੈ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਹੁਂਦੀ ਛਾਦਰੀ ਸੁਰਖਿਰਤਾ ਤੇ ਚਤਰਾਈ ਦੇ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਾਏ ਦੇ ਨ ਓਹ ਸਰਾਹਨੇ ਜੋਗ ਏ। ਸ਼ਾਯਦ ਗੈ ਕੁਝੈ ਹੋਰ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਹੁਂਦੇ ਚਹਿਰੇ ਗੀ ਇਸ ਚਾਲੀ ਕਨੈ ਤਭਾਰੇਆ ਗੇਆ ਏ।

#### 9.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਫ਼ਿਥੈ ਵਿਦਾਰਥਿਦਿੰਦੇ ਗੀ ਦੀਨ੍ਹੁਮਾਈ ਪਤ ਹੁਂਦੀ ਰਚਨਾ 'ਕੀਰ ਗੁਲਾਬ' ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਰਚਨਾ ਬਾਰੈ ਸਰੋਖੜ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗਾਂ ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਵਿਦਾਰਥਿਦਿੰਦੇ ਗੀ ਕੀਰ ਗੁਲਾਬ ਰਚਨਾ ਦਾ ਏਹ ਪਤਾ ਲਗੀ ਸਕਗੇ ਜੇ ਏਹ ਕਦੂੰ ਛਫੇਆ ਤੇ ਏਹ ਕਿਸ ਵਿਸ਼ੇ ਢੋਗਰੀ ਦਾ ਪੈਹਲ ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਏ। ਇਸ ਚ ਸਿਕਖੋਂ ਤੇ ਢੋਗਰੇ ਮਜ਼ਾਰੈ ਹੋਈ ਦੀ ਇਕ ਦਿਨੋਂ ਦੀ ਲਡਾਈ ਦਾ ਵਰਣਨ ਏ। ਇਸਦੇ ਲਾਵਾ ਢੋਗਰਾ ਜੋਆਨੇਂ ਦਾ ਦੇਸਾ ਦੀ ਰਖਾ ਲਾਈ ਬਾਹਰ ਨਿਕਲਨਾ ਤੇ ਗੁਲਾਬ ਸਿੱਹ ਦਾ ਸਾਮਨੇ ਆਨੇ ਦਾ ਦੁਸ਼ਧ ਏ। ਇਸ ਚਾਲੀ ਇਸ ਕਾਵਿ ਰਚਨਾ ਗੀ ਨੌਂ ਭਾਗੋਂ ਚ ਬੰਡਾ ਗੇਦਾ ਏ।

#### 9.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

- |     |         |     |           |     |        |
|-----|---------|-----|-----------|-----|--------|
| 1)  | ਮਜ਼ਾਟੈ  | 2)  | ਅਂਧੀਜ਼ਕਕਡ | 3)  | ਗਮਰੁ   |
| 4)  | ਕੈਸ਼    | 5)  | ਪੁਰਖੋਂ    | 6)  | ਕਡਕਦਾ  |
| 7)  | ਕੂਟਨੀਤਿ | 8)  | ਤੁਟੈਆ     | 9)  | ਉਤਕੂਝਟ |
| 10) | ਘਮਾਸਾਨ  | 11) | ਛਾਦਰੀ     | 12) | ਗਿਦਦੜ  |
| 13) | ਕੀਰਮਤਸ  |     |           |     |        |

#### 9.6 ਹੇਠ ਦਿਤੇ ਦੇ ਸੁਆਲੋਂ ਦਾ ਪਰਤਾ ਦੇਓ।

1. ਕੀਰ ਗੁਲਾਬ ਦਾ ਸਾਹਿਤਿਕ ਮੁਲਧਾਂਕਨ ਕਰੋ।

2. ਬੀਰ ਗੁਲਾਬ ਦੇ ਪੈਹਲੇ, ਦੁਏ ਤੇ ਤ੍ਰਿਯੇ ਖਣਡ ਚ ਵਰਣਤ ਘਟਨਾ ਦਾ ਜਿਕਰ ਕਰੋ।

3. ਖਣਡੇ ਦੇ ਆਧਾਰ ਪਰ ਬੀਰ ਗੁਲਾਬ ਕਾਵਿ ਦੀ ਸਮੀਕ्षਾ ਕਰੋ।

## 9.7 सहायक पुस्तकां

1. ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿਆ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ – ਜਿਤੇਨਦ੍ਰ ਉਧਮਪੂਰੀ
  2. ਸਾਡੇ ਸਾਹਿਤਿਕਾਰ ਭਾਗ –1 ਵੀਣਾ ਗੁਪਤਾ
  - 3 ਦੀਨੂ ਭਾਈ ਪਤ ਦਾ ਕਵਿਤਾ ਸਾਹਿਤਿ–ਵੀਣਾ ਗੁਪਤਾ

.....0.....

## **M.A. DOGRI**

---

<b>Course No. 102</b>	<b>Unit - II</b>
<b>Semester - I</b>	<b>Lesson : 10</b>

---

### **Epic Definition, Features, Origins & Development**

- 10.0 रूपरेखा
- 10.1 उद्देश्य
- 10.2 पाठ-परिचे
- 10.3 पाठ-प्रक्रिया
- 10.4 सारांश
- 10.5 कठिन शब्द
- 10.6 अभ्यास आस्तै सोआल
- 10.7 सहायक पुस्तकां
- 10.1 उद्देश्य

इस यूनिट दे पाठें गी पढ़ने परैन्त विद्यार्थियें गी महाकाव्य केह ऐ उसदे लक्षणें, तत्वें ते डोगरी महाकाव्य दे उद्भव ते विकास दी विस्तारपूर्वक जानकारी थ्होई सकग। जिस कन्नै विद्यार्थी महाकाव्य दी परिभाशा, लक्षणें तत्वें ते विकास बारै कुसै बी चाल्ली दे सुआलें दा उतर देने च समर्थ होडण।

#### **10.2 पाठ परिचे**

इस यूनिट च त्रै पाठ न। पैहले पाठ च महाकाव्य दी विस्तारपूर्वक परिभाशा, भेद ते विशेषताएं दी जानकारी ऐ दुऐ पाठ च महाकाव्यें दे लक्षणे ते तत्वें दी विस्तृत जानकारी ऐ ते त्रियै पाठ च डोगरी महाकाव्य दे उद्भव ते विकास वारै विस्तारपूर्वक जानकारी दिती गेदी ऐ।

### 10.3 ਪਾਠ ਪ੍ਰਕਿਧਾ

ਇਸ ਯੂਨਿਟ ਦੇ ਸਮਨੋਂ ਤ੍ਰੱਖ਼ ਪਾਰੋਂ ਚ:—

- ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਂ ਤੇ ਭੇਦ
- ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਲਕਣ ਤੇ ਤਤਵ
- ਢੋਗਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਉਦ੍ਭਵ ਤੇ ਵਿਕਾਸ

### ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਂ ਤੇ ਭੇਦ

#### ਰੂਪਰੇਖਾ

##### → ਉਦੇਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਛਿਧੈ ਵਿਦਾਅਥਿਅਂ ਗੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾ, ਭੇਦਾਂ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਏਂ ਵਾਰੈ ਪਤਾ ਚਲਗ ਤੇ ਵਿਦਾਅਥੀ ਇਸ ਸਰਬਾਂਧੀ ਕੁਸੈ ਬੀ ਸੁਆਲੈ ਦਾ ਉਤਰ ਦੇਨੇ ਚ ਸਮਰਥ ਹੋਣ।

##### → ਪਾਠ- ਪਰਿਚੇ

ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਅਰਥ ਤੇ ਬਕਖ-ਬਕਖ ਵਿਦਾਨਾਂ ਆਸੋਂਆ ਦਿਤੀ ਗੇਦਿਧਾਂ ਮਹਾਕਾਵਿ ਸਰਬਾਂਧੀ ਪਰਿਆਵਾ ਉਸਦੇ ਭੇਦਾਂ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਏਂ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਦਿਤੀ ਗੇਦੀ ਐ।

##### → ਪਾਠ ਪ੍ਰਕਿਧਾ

##### → ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾ, ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਂ ਤੇ ਭੇਦ

i ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾ

ii ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਂ

iii ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਭੇਦ

##### → ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾ

ਮਹਾਕਾਵਿ ਗੀ ਸਮਝਨੇ ਤਾਈ ਅਸੇਗੀ ਪੈਹਲੇ ਕਾਵਿ ਗੀ ਸਮਝਨਾ ਪੈਗ।

- ਸ਼ੈਲ ਸਨਵਾਕੇ ਸ਼ਬਦੇ ਦਾ ਇਕ ਐਸਾ ਤਾਲ ਮੇਲ ਜੇਹੜਾ ਮਨੈ ਗੀ ਛੂਹੀ-ਛੂਹੀ ਜਾ, ਅਪਨਾ ਇਕ ਟਕੋਹਦਾ ਥਾਹਰ ਬਨਾਈ ਲੈ ਤੇ ਫ਼ਹੀ ਮਨ ਕਰੈ ਜੇ ਅਸ ਤਾਂਨੈ ਬੋਲਲੇ ਗੀ ਮੁਡੀ ਸੁਡਿਧੈ ਸੁਨਚੈ ਜਾਂ ਪਢਚੈ ਤੇ ਤ੃ਪਤੀ ਫ਼ਹੀ ਬੀ ਨੋਈ ਹੋਏ ਤਾਂਨੋਂ ਭਾਵੋਂ ਗੀ ਅਸ ਕਾਵਿ ਗਲਾਈ ਸਕਨੇ ਆਂ।

ਰੁਪ ਤੇ ਰਚਨਾ ਦੇ ਬਚਾਰ ਕਨ੍ਹੋਂ ਸ਼ੱਖੀ ਦੇ ਆਧਾਰੀ ਕਾਵਿ ਦੇ ਦੋ ਭੇਦ ਕੀਤੇ ਨ ਸ਼ਬਦ ਕਾਵਿ ਤੇ ਦੂਸ਼ਯ ਕਾਵਿ ਜਿਸ ਕਾਵਿ ਦਾ ਆਨਨਦ ਸੁਨਿਯੈ ਜਾਂ ਪਢਿਯੈ ਥੋਏ ਉਸੀ ਸ਼ਬਦ ਕਾਵਿ ਤੇ ਜਿਸ ਸਾਹਿਤਿਆ ਰਚਨਾ ਦਾ ਆਨਨਦ ਦਿਕਿਖਿਯੈ ਲੇਤਾ ਜਾ ਉਸਗੀ ਦੂਸ਼ਯ ਕਾਵਿ ਆਖੇਯਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।

ਮੁਕਖ ਤੌਰਾ ਪਰ ਸ਼ਬਦ ਕਾਵਿ ਦੇ ਤੈ ਭੇਦ ਕੀਤੇ ਗੇਦੇ ਨ:-

1. ਗਦਿ
2. ਪਦਿ ਤੇ
3. ਚਮ੍ਮੂ (ਮਿਸ਼ਤ)

ਗਦਿ ਚ ਉਪਨਿਆਸ , ਕਹਾਨੀ, ਨਾਟਕ ਲੇਖ ਆਦਿ ਸਥਾਈ ਆਈ ਜਾਂਦੇ ਨ ਤੇ ਇਸੈ ਚਾਲੀ ਪਦਿ ਚ ਆਹ ਸਥਾਈ ਛਨਦੋਬਦਦ ਤੇ ਸ਼ਵਾਂਦ ਰਚਨਾ ਆਈ ਜਦਿਧਾਂ ਨ ਜਿਦਾਂ ਕੋਈ ਸੁਰ, ਲੈ, ਤਾਲ ਹੋਏ ਤੇ ਆਹ ਭਾਵਪੂਰ੍ਣ ਬੀ ਹੋਨ। 'ਚਮ੍ਮੂ' ਦੇ ਅੰਤਰਗਤ ਆਹ ਰਚਨਾ ਆਂਦਿਧਾ ਨ ਜਿਨ੍ਹੇ ਚ ਗਦਿ ਤੇ ਪਦਿ ਦਵੈਂ ਹੋਨ।

ਪਦਿ ਦੇ ਮੁਕਖ ਤੈ ਭੇਦ ਨ:-

1. ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਾਵਿ
2. ਮੁਕਤਕ ਕਾਵਿ ਤੇ
3. ਏਕਾਰਥ ਕਾਵਿ

ਪ੍ਰਬੰਧ ਦਾ ਅਰਥ ਐ ਵਿਸ਼ਤਾਰ ਆਹਲੀ ਰਚਨਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਾਵਿ ਚ ਇਕ ਲਮ੍ਮੀ ਕਥਾ ਦਾ ਵਿਸ਼ਤਾਰ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਾਵਿ ਚ ਛਾਂਦ ਇਕ ਟੁਏ ਕਨੈ ਕਥਾਨਕ ਦੀ ਕਡਿਧੇਂ ਚ ਬਜ਼ੇ ਰੌਹਦੇ ਨ ਉਂਦਾ ਕ੍ਰਮ ਅਗਗੋਂ ਪਿਛੋਂ ਨੇਈ ਕੀਤਾ ਜਾਈ ਸਕਦਾ।

ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਾਵਿ ਦੇ ਬੀ ਦ'ਊ ਭੇਦ ਨ

1. ਮਹਾਕਾਵਿ ਤੇ
2. ਖਾਂਡਕਾਵਿ

'ਮਹਾਕਾਵਿ' ਸ਼ਬਦ ਦ'ਊ ਸ਼ਬਦੋਂ ਦੇ ਮੇਲ ਕਨੈ ਬਨੋਂ ਦਾ ਹੈ ਮਹਤ ਤੇ ਕਾਵਿ | ਮਹਤ ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਅਰਥ ਹੋਆ ਮਹਾਨ। ਇਸਕਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਅਰਥ ਹੋਆ ਮਹਾਨ ਕਾਵਿ | ਇਕ ਐਸਾ ਕਾਵਿ ਜੇਹੜਾ ਅਪਨੇ ਆਕਾਰ ਚ ਗੈ ਨੇਈ ਬਲਕੇ ਵਿਸ਼ੇ-ਵਸਤੁ ਦੇ ਸ਼ਹਾਬੋਂ ਬੀ ਬਡ੍ਡਾ ਹੋਏ। 'ਮਹਾਨ ਕਾਵਿ' ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸਮਨੋਂ ਥਮਾਂ ਪੈਹਲੋਂ ਸ਼ੱਖੀ ਦੀ ਵਾਲਮੀਕਿ ਰਾਮਾਯਣ ਆਸਤੈ ਹੋਆ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਐਸੀ ਵਿਧਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਚ ਜੀਵਨ ਦਾ ਸਵਾਗ ਚਿਤਰਣ ਹੋਏ ਦਾ ਹੋਂਦਾ ਹੈ। ਇਸਦੀ ਕਥਾਵਸਤੁ ਕੁਸੈ ਖਾਸ ਤੇ ਬਡੇ ਬਡੇ ਉਦੇਸ਼ ਗੀ ਲੇਝਿਯੈ ਚਲਦੀ ਹੈ। ਕੇਇਧੇਂ ਚਾਲਿਲਿਆਂ ਦੇ ਸਾਂਘਰੇ ਚਾ ਲਾਂਧਿਯੈ, ਖੀਰ ਚ ਕਿਥ ਸ਼ਾਸ਼ਵਤ -ਮੁਲਿਆਂ ਦੀ ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਠਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਆਸਤੈ ਅੰਗੇਜੀ ਚ 'ਏਪਿਕ' ਸ਼ਬਦ ਦੀ ਬਰਤੂਨ ਕੀਤੀ ਗੇਦੀ ਹੈ। ਏਹ ਸ਼ਬਦ ਅੰਗੇਜੀ ਦੇ 'ਏਪੋਸ' ਥਮਾਂ ਬਨੇ ਦਾ ਮਨੇਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ 'ਏਪੋਸ' ਦਾ ਅਰਥ ਐ 'ਸ਼ਬਦ' ਸਮੇਂ ਦੇ ਕਨੈ ਅਰਥਾਦੇਸ਼ ਹੋਈ ਜਾਨੇ ਪਰ ਏਹ 'ਗੀਤ' ਦੇ ਅਰਥ ਚ ਬਰਤੋਨ ਲਗੀ ਪੇਆ। ਬਾਦ ਚ ਇਸੀ 'ਵੀਰ ਕਾਵਿ' ਆਸਤੈ ਰੁਢ ਮਨੀ ਲੈਤਾ ਗੇਆ।

आधुनिक یوگੈ ਚ 'ਮਹਾਕਾਵਿ' ਜਿਸ ਅਰਥ ਚ ਬਰਤੋਆ ਕਰਦਾ ਏ, ਓਹ ਨਾਂ ਸਿਰਫ ਵੀਰ ਗਾਥਾ ਏ ਤੇ ਨਾਂ ਗੈ ਕਲਾਤਮਕ ਕਾਵਿ। ਬਲਕੇ ਉਸ ਚ ਮਨੁਕਖੀ ਜੀਵਨ ਤੇ ਸੰਸਕ੍ਰਤਿ ਦਾ ਐਸਾ ਮੇਲ ਏ ਜੇ ਮਤੇ ਸਾਰੇ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਤੇ ਇਤਥੂੰ ਤਗਰ ਆਕਖੀ ਦਿਤੇ ਦਾ ਏ " ਜੋ ਧਹਾਂ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਵਹ ਕਹੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। " ਅਰਥਾਤ ਮਹਾਕਾਵਿ ਸਫਲਤਾ ਦਾ ਗੈ ਨੇਈ ਸਾਮੂਹਿਕਤਾ ਦਾ ਮਹਾਗੀਤ ਏ।

ਬਕਖ –ਬਕਖ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਆਸੇਆਂ ਦਿੱਤੀ ਗੇਦਿਯਾਂ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਿਯਾਂ ਪਰਿਭਾਸ਼ਾਂ ਇਸ ਚਾਲੀ ਨ।

### ਭਾਰਤੀ ਮਤ ਅਨੁਸਾਰ

ਸੰਸਕ੍ਰਤ ਦੇ ਕੇਈ ਆਚਾਰ੍ਯ ਅਪਨੇ ਲਕਣ—ਗ੍ਰੰਥਾਂ ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਸਰੂਪ ਦਾ ਵਿਚਰਨ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ। ਸਭਨੋਂ ਸ਼ਾ ਪੈਹਲੋਂ ਭਾਮਹ ਦੇ 'ਕਾਵਿਲਾਂਕਾਰ' ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਵਿਵੇਚਨ ਹੋਏ ਦਾ ਮਿਲਦਾ ਏ। ਤੁਂਦਾ ਮਨਨਾ ਏ ਜੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਸੱਗ੍ਰੰਥ ਚ ਬਜ਼ੀ ਦੀ ਕੁਸੈ ਮਹਾਪੁਰਸ਼ ਜਾਂ ਸ਼੍ਰੇਣਿ ਵਿਕਿਤ ਦੇ ਜੀਵਨ ਤੱਥ ਅਧਾਰਤ ਗ੍ਰਾਈ ਸ਼ਬਦੋਂ ਥਮਾਂ ਰੈਹਤ ਅਲਕਾਰਕ ਸ਼ਬਦ—ਪ੍ਰਯੋਗ ਆਹਲੀ, ਕੁਸੈ ਧੁੰਢ ਵਿਜਿਤ ਵਰਣ ਆਹਲੀ ਰਚਨਾ ਏ। ਆਚਾਰ੍ਯ ਦਣਡੀ ਹੋਰੋਂ ਬੀ 'ਕਾਵਿਦਰਸ਼' ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਵਿਸ਼੍ਵਤ ਵਿਵੇਚਨ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ। ਤੁਂਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਮਹਾਕਾਵਿ ਐਸੀ ਰਚਨਾ ਏ ਜੇਹਡੀ ਸੱਗ੍ਰੰਥ ਚ ਬਜ਼ੀ , ਮਾਂਗਲਾਚਰਣ ਕਨ੍ਹੈ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਨੇ ਆਹਲੀ, ਚਤੁਰਗ ਧਰਮ ਅਰਥ, ਕਾਮ, ਮੌਕਾ ਕੁਸੈ ਇਕ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤਿ ਦੇ ਲਕਧ ਆਹਲੀ ਤੇ ਜੇਹਦੀ ਕਥਾਵਸ਼੍ਟੁ ਸੁਸਾਂਗਠਤ ਹੋਏ।

ਆਚਾਰ੍ਯ ਵਿਸ਼ਵਨਾਥ ਹੋਰ ਅਪਨੇ ਪ੍ਰਸਿੰਦ ਗ੍ਰੰਥ " ਸਾਹਿਤਿ-ਦਰਪਣ" ਚ ਦਣਡੀ ਹੁਨਦੀ ਪਰਿਭਾਸ਼ਾ ਗੀ ਗੈ ਵਿਸ਼ਾਕ ਦਿੰਦੇ ਨ। ਓਹ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਬਾਹਰਲੋਂ ਤਤਵਾਂ ਤੱਥ ਉਪਰ ਗੈ ਜੋਰ ਪਾਵੇ ਨ। ਤੁਂਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਇਸਦਾ ਨਾਥਕ ਤੁਚਚ ਕੁਲੈ ਦਾ ਜਾਂ ਦੇਵਤਾ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਤੇ ਇਸਦੇ ਅਟਠ ਸ਼ਾਮਤੇ ਸੱਗ ਹੋਨੇ ਚਾਹਿਦੇ ਨ।

### ਪਸ਼ਚਮੀ ਮਤ

ਪਸ਼ਚਮ ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਸਰੂਪ ਬਾਰੈ ਸਭਨੋਂ ਸ਼ਾ ਪੈਹਲੋਂ ਅਰਸ਼੍ਟੂ ਨੇ ਅਪਨੇ ਗ੍ਰੰਥਾਂ 'ਪੋਇਟਿਕਸ ਚ ਅਪਨੇ ਵਿਚਾਰ ਪ੍ਰਸ਼ਤੁਤ ਕੀਤੇ। ਤੁਂਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਮਹਾਕਾਵਿ ਇਕ ਧੋ਷ਨਾਤਮਕ ਕਾਵਿ ਏ ਜਿਸਦਾ ਕਥਾਨਕ ਬਡ਼ਾ ਤੇ ਨਾਟਕੀ ਸ਼ਿਲਘ—ਵਿਧਾਨ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਇਸ ਚ ਨਾਂ—ਮੁਸਕਨ ਘਟਨਾਏਂ ਗੀ ਬੀ ਮੁਸਕਨ ਬਨਾਇਥੈ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਜਾਈ ਸਕਦਾ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਮਹਾਨ ਚਰਿਤ ਦਾ ਚਿਤ੍ਰੇਂ ਹੋਏ ਦਾ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਜੀਵਨ ਦੇ ਸਮੂਲਚੇ ਕਾਰ—ਵਿਧਾਰ ਦਾ, ਮੌਕੇ ਤੇ ਪ੍ਰਸ਼ੰਗ ਦੇ ਮਤਾਬਕ ਵਰਣ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਸਰਲ ਤੇ ਭਾਵੋਂ ਦੇ ਅਨੁਕੂਲ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਦੀ ਪਰ ਜਿਤੈ ਬੀ ਗਤਿ ਮੰਦ ਹੋਨ ਲਗੀ ਪਵੈ, ਤੁਤੈ ਅਲਕਾਰਕ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਬੀ ਕਰੀ ਲੈਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਸ਼ੁਰੂ ਕੋਲਾ ਖੀਰ ਤਗਰ ਇਕ ਗੈ ਛਨਦ (ਘਟਪਦੀ ਛਨਦ) ਤੇ ਇਕੱਕੇ ਰਸ 'ਵੀਰ—ਰਸ' ਬਰਤੋਏ ਦਾ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਦਾ।

ਡਲਾਲ ਪੀ. ਕੇਰ ਨਾਂ ਦੇ ਪਸ਼ਚਮੀ ਵਿਦਵਾਨ ਅਨੁਸਾਰ 'ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਜੀਵਨ ਦੇ ਸਭਨੋਂ ਰੂਪੋਂ ਦਾ ਚਿਤ੍ਰਣ ਹੋਂਦਾ ਏ ਤੇ ਉਸਦੇ ਚਿਤ੍ਰੇਂ ਵੀ ਯੋਜਨਾ ਅਪਨੇ—ਆਪ ਚ ਪੂਰਨ ਤੇ ਸ਼ਪਣ ਹੋਵੀ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਸਫਲਤਾ ਇਸ ਤੱਥ ਨਿਰਮਾ

ਕਰਦੀ ਏ ਜੇ ਉਸਦਾ ਕਥਿ ਜੀਵਨ ਦੇ ਵਿਸ਼ੁਤ ਚਿਤ੍ਰ ਗੀ ਕਿਨ੍ਹੀ ਕੁਸ਼ਲਤਾ ਕਨੈ ਚਿਤ੍ਰਤ ਕਰਦਾ ਏ, ਇਕ ਹੋਰ ਪਥਚਮੀ ਅਲੋਚਕ ਏਵਰ ਕ੍ਰੋਮੀ ਹੁਨਦਾ ਮਨਨਾ ਏ ਜੇ ਸਿਰਫ ਆਕਾਰ ਬਡਾ ਹੋਈ ਜਾਨੇ ਕਨੈ ਗੇ ਕੋਈ ਕਾਵਿ ਰਚਨਾ ਮਹਾਕਾਵਿ ਨੇਈ ਬਨੀ ਜਂਦੀ । ਉਸ ਚ ਕਿਥ ਹੋਰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਂ ਬੀ ਹੋਨਿਆਂ ਗੈ ਚਾਹਿਦਿਆਂ ਨ। ਉਸਦੀ ਸ਼ੈਲੀ ਐਸੀ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਦੀ ਏ ਜਿਸ ਚ ਕਥਿ ਦੀ ਕਲਪਨਾ, ਉਸਦਾ ਜੀਵਨ-ਦਰਸ਼ਨ, ਉਸਦੀ ਵਿਚਾਰਖਾਸਾ ਤੇ ਇਨ੍ਹੋਂ ਸਭਮੌਂ ਦੀ ਅਮਿਅਕਿਤ ਸਹਜਤਾ ਕਨੈ ਹੋਈ ਦੀ ਹੋਏ। ਉਸਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਬੀ ਮਹਾਨ ਹੋਏ, ਜੇਹਡਾ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਗਤਿ ਗੀ ਬਨਾਈ ਰਕਖੇ।

ਸੀ.ਏਮ. ਬਾਬਰਾ ਨਾਂ ਦੇ ਇਕ ਅੰਗੇਜੀ ਵਿਜਾਨ ਨੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਭਾਸ਼ਾ ਪ੍ਰਸ਼ੁਤ ਕਰਦੇ ਹੋਈ ਗਲਾਏ ਦਾ ਐ:-

“ਮਹਾਕਾਵਿ ਬੱਡੇ ਆਕਾਰ ਆਹਲਾ ਕਥਾਤਮਕ ਕਾਵਿ-ਰੂਪ ਏ, ਜਿਸ ਚ ਮਹਤਵਪੂਰਣ ਘਟਨਾਏਂ ਦਾ ਵਰਣਨ ਹੋਂਦਾ ਏ, ਜਿਸ ਚ ਕਿਥ ਚਰਿਤ੍ਰੋਂ ਦੇ ਕ੍ਰਿਯਾਸੀਲ ਤੇ ਦਲੇਰੀ ਭਰੋਚੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਕਥਾ ਹੋਂਦੀ ਏ। ਉਸੀ ਪਢਨੇ ਪਰੈਨਤ, ਅਸੋਂ ਗੀ ਇਕ ਖਾਸ ਚਾਲੀ ਦਾ ਨਾਂਦ ਮਿਲਦਾ ਏ ਤੇ ਸਾਡੇ ਅਨੰਦਰ ਮਾਹਨੂ ਦੀ ਮਹਤਾ, ਗੌਰਵ ਤੇ ਉਪਲਥਿਤੋਂ ਦੇ ਪ੍ਰਤਿ ਦ੃ਢ ਆਸਥਾ ਪੈਦਾ ਹੋਂਦੀ ਏ।

ਵਾਲਟੇਯਰ ਨੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਭਾਸ਼ਾ ਚ ਉਸ ਦਿਧੋਂ ਅਨਦਰੁਨੀ ‘ਖੂਵਿਧੋਂ ਉਪਰ ਜੋਰ ਪਾਏ ਦਾ ਏ। ਉਂਦੀ ਮਨਨਾ ਏ ਜੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਏਂ ਗੀ ਸਂਕੀਰਣ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰੀ ਲਕ਷ਣਾਂ ਚ ਨੇਈ ਬਨੇਆ ਜਾਈ ਸਕਦਾ । ਲੋਕਾਂ ਦੀ ਸ਼ੀਕ੍ਰਤਿ ਗੈ ਕੁਸੈ ਰਚਨਾ ਗੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਬਨਾਈ ਸਕਦੀ ਏ।

ਮੈਕਲੀਨ ਡਿਕਸਨ ਹੋਰ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਸਰੂਪ ਦਾ ਵਿਵੇਚਨ ਕਰਦੇ ਹੋਈ ਲਿਖਦੇ ਨ “ਮਹਾਕਾਵਿ ਕੁਸੈ ਬੀ ਯੁਗ-ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦੀ ਲੋਡ ਤੇ ਦੇਨ ਹੋਂਦੀ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਇਕ ਨਿਸ਼ਚਤ ਸਰੂਪ ਹੋਂਦਾ ਏ। ਉਸੀ ਸਂਕੀਰਣ ਲਕ਷ਣਾਂ ਚ ਬਾਨਨਾ ਠੀਕ ਨੇਈ ਏ।” ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਨਾਕ ਦੇ ਮਹਤਵ ਗੀ ਸੀਕ੍ਰਤਾਵਾਦੇ ਹੋਈ ਓਹ ਲਿਖਦੇ ਨ ਜੇ “ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਨਾਕ ਜਾਤਿ- ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦਾ ਨੁਮਾਂਧਾ ਹੋਂਦਾ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਉਸਦੀ ਜਿਤ ਜ਼ਰੂਰ ਦਸ਼ੀ ਗੇਦੀ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਦੀ ਕੀ ਜੇ ਉਸਦੀ ਜਿਤ ਸਮੂਲੀ ਜਾਤਿ -ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਦੀ ਜਿਤ ਮਨੀ ਜਂਦੀ ਏ।”

#### ਖਣਡ ਕਾਵਿ

ਸਾਹਿਤ्यਦਰਸ਼ਣਕਾਰ ਆਚਾਰਧ ਵਿਸ਼ਵਨਾਥ ਮਤਾਬਕ ਕਾਵਿ (ਮਹਾਕਾਵਿ) ਦੇ ਇਕੱਕੇ ਏਂਸ਼ ਦਾ ਪਾਲਨ ਕਰਨੇ ਆਹਲੀ ਵਰਣਨਾਤਮਕ ਰਚਨਾ ਖਣਡਕਾਵਿ ਏ। ਇਸ ਦੀ ਅਪਨੇ ਥਾਹਰ ਬਕਖਰੀ ਮਹਤਾ ਏ। ਇਸਦੀ ਕਥਾਵਸਤੁ ਦਾ ਬੀ ਆਦਿ ਮਧਿ ਤੇ ਅੜਤ ਹੋਂਦਾ ਏ। ਮਹਾਕਾਵਿ ਆਹਲਾ ਲੇਖਾ ਏਹਦੇ ਚ ਸਮੱਪੂਰਣਤਾ ਜਾਂ ਵਾਧਕਤਾ ਨੇਈ ਹੋਂਦੀ। ਏਹ ਜੀਵਨ ਦੇ ਕੁਸੈ ਇਕ ਪੈਹਲੂ ਗੀ ਲੇਇਧੈ ਚਲਦਾ ਏ। ਏਹਦੇ ਚ ਇਕੱਕੇ ਰਸ ਹੋਂਦਾ ਤੇ ਇਕੱਕੇ ਘਟਨਾ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਤਾ ਹੋਂਦੀ ਏ। ਪਰ ਏਹ ਕਹਾਨੀ ਏਕਾਂਕੀ ਆਹਲਾ ਲੇਖਾ ਅਪਨੇ-ਆਪੈ ਚ ਪੂਰਣ ਹੋਂਦਾ ਏ। ਘਟਨਾਏਂ ਦਾ ਸਿਲਸਲਾ , ਕਥਾਨਕ ਦੀ ਗਤਿ ਤੇ ਪਾਤ੍ਰੋਂ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਖਣਡ ਕਾਵਿ ਚ ਬੀ ਬਰਾਵਰ ਹੋਂਦਾ ਏ। ਏਹਦਾ ਵਿਸ਼ੇ ਬੀ ਹੋਈ ਸਕਦਾ ਏ ਪਰ ਪਾਤ੍ਰੋਂ ਦੀ ਗਿਨਤੀ ਮਤੀ ਨੇਈ ਹੋਈ ਸਕਦੀ। ਸਾਂਕ੍ਰਤ ਵਿਦਵਾਨ ਆਚਾਰਧ ਵਿਸ਼ਵਨਾਥ ਹੋਰੋਂ ਖਣਡ-ਕਾਵਿ ਗੀ ‘ਇਕ ਦੇਸ਼ਾਨੁਸਾਰੀ’ ਆਕਖੋਂ ਦਾ ਏ। ਖਣਡਕਾਵਿ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕਾਵਿ ਦੇ ਸਾਹਿਤਿਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਥਾਹਰ ਏ।

ii) **विशेषतां** :- इ'नें भारती आचार्य दी परिभाशाएं उपर विचार करने परैन्त निश्कर्ष दे तौरा पर आक्खेआ जाई सकदा ऐ जे महाकाव्य दियां किश विशेषतां ऐसियां न जिं'दे उपर सब्मै इक मत न। ओह विशेषतां इस चाली न:

1. महाकाव्य दा नायक देवता जां उच्च कुलै च पैदा होए दा गुणवान व्यक्ति होना चाहिदा।
2. इसदा कथानक भाएं ऐतिहासक, पौराणिक, काल्पनिक जां मिश्रत होए पर ओह लोकें च पैहलें गै प्रचलत होना चाहिदा।
3. इसदा लक्ष्य चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ काम आदि) चा कुसै इक दी प्राप्ति आहला होना चाहिदा ऐ।
4. इसदी शुरुआत मंगलाचरण कन्नै होई दी होनी चाहिदी।
5. एह सर्ग च बज्जे दा होना चाहिदा ते घट्ट-शा घट्ट अट्ठ सर्ग जरूर होने चाहिदे।
6. इक सर्ग च इक गै छन्द बरतोए दा होना चाहिदा।
7. सर्ग दे आकार च संतुलन होना चाहिदा अर्थात् सब्मै सर्ग आकार। कलेवर च इक जैसे होन। कोई मता बड्डा जां मता लौहका सर्ग नेई होना चाहिदा।
8. इस च शंगार, वीर जां शातं रसै च कोई इक रस प्रधान रूपै च बरतोए दा होना चाहिदा ते बाकी रस उपकारक रसें दे रूपै च बरतोए दे होने चाहिदे।

### iii) **महाकाव्य दे भेद**

भारत दियें सभनें भाशाएं च मिलने आहले लगभग सब्मै महाकाव्य 'रामायण' जा 'महाभारत' दी कथाएं उपर अधारत गै मिलदे न। 'रामायण' ते 'महाभारत' च बी उ'ऐ कथां आई दियां न। जेहडियां इस धरती उपर मौखिक रूपै च इ'नें ग्रैथें दी रचना थमां बी पैहलें गै प्रचलत हियां। 'रामायण' 'महाभारत' दे रचनाकारे उ'नें सभनें गी इक ग्रैथ दे रूपै च संकलत कीता। इ'यै कारण हा जे इ'नें महाकाव्यें दा मुंदला रूप वाचन-शैली उपर अधारत हा। रामायण च ते गल्ला दा स्पष्ट रूपै च उल्लेख बी कीता गेदा ऐ जे लव ते कुश ने राम कथा दा जनमानस ते राजसभा च बाचन बी कीता हा।

मौखिक परम्परा कन्नै सरबन्धत होने करी गै इ'नें महाकाव्यें दा आकार लगातार बधदा गेआ ऐ। इक कवि दी लिखत रचना च गै नेई उसदे प्रकाशत रूपै च बी बदलाऽ औंदा रेहा ऐ। इस्सै करी इनें, दौने ('रामायण' ते 'महाभारत') महाकाव्यें गी 'विकासशील महाकाव्य आक्खेआ गेआ ऐ।

ਇਸ ਚਾਲੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਸੁਟਟੇ ਤੌਰਾ ਉਪਰ ਦੋ ਭੇਦ ਹੋਈ ਸਕਦੇ ਨ:-'

#### 1. ਕਲਾਤਮਕ ਮਹਾਕਾਵਿ

#### 2. ਵਿਕਾਸ਼ੀਲ ਮਹਾਕਾਵਿ

**1. ਕਲਾਤਮਕ ਮਹਾਕਾਵਿ :-** ਐਸੇ ਮਹਾਕਾਵਿ, ਜਿਂਦੀ ਰਚਨਾ ਸਾਰਜਨਕ ਵਾਚਨ ਆਸਤੈ ਨੇਈ ਹੋਇਥੈ, ਬਲਕੇ ਕਲਾਕੂਤਿ ਦੇ ਰੂਪੈ ਚ ਹੋਈ ਦੀ ਹੋਏ। ਭਾਰਤ ਚ ਐਸੇ ਮਹਾਕਾਵਿਂ ਦੇ ਉਦਗਮ ਤੇ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਦੇ ਰਤ੍ਰੋਤ ਭਾਏਂ ਵਿਕਾਸ਼ੀਲ ਮਹਾਕਾਵਿ ( ਰਾਮਾਯਣ ਤੇ ਮਹਾਭਾਰਤ ) ਗੈ ਰੇਹ ਨ। ਪਰ ਇੰਦੇ ਸੂਲ ਰੂਪੈ ਚ ਸਤਾ ਬਦਲਾਅ ਨੇਈ ਆਯਾ ਐ।

**2. ਵਿਕਾਸ਼ੀਲ ਮਹਾਕਾਵਿ:-** ਐਸੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਜਿਂਦੀ ਰਚਨਾ ਸਾਰਜਨਕ ਵਾਚਨ ਆਸਤੈ ਹੋਈ ਤੇ ਜਿਂਦੇਂ ਸੂਲ ਰੂਪੈ ਚ ਲਗਤਾਰ ਬਦਲਾਅ ਹੋਂਦਾ ਰੇਹਾ। ਐਸਾ ਮਹਾਕਾਵਿ ਗਿਨਤਰੀ ਚ ਭਾਏਂ ਬੱਧੇਧਟ ਨ ਪਰ ਜਨਮਾਨਸ ਚ ਇਹ ਸਤੇ ਪ੍ਰਚਲਤ ਤੇ ਲੋਕਪ੍ਰਿਯ ਰੇਹ ਨ।

ਇਨ੍ਹੋਂ ਭੇਦੋਂ ਦੇ ਅਲਾਵਾ ਡੱਠੀ ਨਗੇਨਦ੍ਰ ਹੋਰੇ ਅਪਨੇ ਗੈਂਥ 'ਭਾਰਤੀਯ ਮਹਾਕਾਵਿ' ਚ ਇਕ ਹੋਰ ਭੇਦ ਦੀ ਚੰਗੀ ਕੀਤੀ ਦੀ ਏ ਜਿਸੀ ਤਸੇ ਰਸਾਖਾਵਾਨ ਕਾਵਿ ਗਲਾਏ ਦਾ ਏ।

### 10.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿਥੈ ਵਿਦਾਰਥਿਂਗੀ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾਹਾ, ਭੇਦ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਬਕਖ—ਬਕਖ ਵਿਵਾਨੇ ਦਾਰਾ ਦਿੱਤੀ ਗੇਦੀ ਪਰਿਆਵਾਹਾਏਂ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸਦੇ ਲਾਨਾ ਮਹਾਕਾਵਿ ਤੇ ਕਾਵਿ ਬਾਰੈ ਬੀ ਸਰੋਖਡ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਗ। ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿਥੈ ਵਿਦਾਰਥਿਂਗੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਵਾਹਾ ਦੇ ਲਾਵਾਂ ਭੇਦੇ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਏਂ ਬਾਰੈ ਸਰੋਖਡ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਿਧੇਂ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਏਂ ਬਾਰੈ ਦਸਦੇ ਹੋਈ ਇਹ ਦਸ਼ਨੇ ਦਾ ਜਤਨ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ ਜੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਨਾਯਕ ਕੋਨ ਹੋਈ ਸਕਦਾ, ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਰੁਚਾਨਕ ਕਨੇਹਾ ਏ ਐਤਿਹਾਸਿਕ, ਪਰੈਣਿਕ ਜਾਂ ਕਾਲਧਨਿਕ ਵਗੈਰਾ। ਇਸਦਾ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਸੰਗਲਾਚਰਨ ਕਨੈ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਏ।

### 10.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

- |           |             |
|-----------|-------------|
| 1) ਟਕੋਹਦਾ | 2) ਥਾਹਰ     |
| 3) ਤ੃ਪਤੀ  | 4) ਸ਼ਵਿ ਕਾਵਿ |
| 5) ਰੁਢ    | 6) ਵੀਰ ਗਾਥਾ |

7) कुल

8) पौराणिक

9) ऐतिहासिक

10) मंगलाचरण

## 10.6 अभ्यास आस्तै सोआल

ਹੇਠ ਦਿੱਤੇ ਦੇ ਸੁਆਲੋਂ ਦਾ ਪਰਤਾ ਦੇਓ।

1. ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਭੇਦੋਂ ਦੀ ਚੰਚਾ ਕਰੋ।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

2. ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਿਧਾਂ ਖਾਸ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਂ ਕੇਹੁ ਹੋਈ ਸਕਦਿਧਾਂ ਨ। ਇਸ ਸੁਆਲੇ ਦਾ ਪਰਤਾ ਦੇਓ।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

3 ਬਕਖ –ਬਕਖ ਵਿਵਾਨੋਂ ਆਸੋਂਆ ਦਿੱਤੀ ਦਿਧਾਂ ਮਹਾਕਾਵਿ ਸਰਬੰਧੀ ਪਰਿਆਵਾ ਦੇਓ।

.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

---

---

---

#### 10.7 सहायक पुस्तकां

1. डोगरी साहित्य दा इतिहास – जितेन्द्र उधमपुरी
2. डोगरी शोध 2003 – डोगरी डिपार्टमैण्ट, जम्मू
3. डोगरी शोध 2000 – डोगरी डिपार्टमैण्ट, जम्मू

.....0.....

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102**

**Unit - IV**

**Semester - I**

**Lesson : 11**

---

### **ਮहਾਕਾਵਿ ਦੇ ਤਤਵ**

11.0 ਰੂਪਰੇਖਾ

11.1 ਉਦੇਸ਼

11.2 ਪਾਠ-ਪਰਿਚੇ

11.3 ਪਾਠਕ ਪ੍ਰਕਿਧਿਆ

11.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

11.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

11.6 ਅਭ്യਾਸ ਆਸਟੈ ਸੋਆਲ

11.7 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਂ

11.1 ਉਦੇਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿਥੈ ਵਿਧਾਰਥੀਂ ਗੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਤਤਵਾਂ ਬਾਰੇ ਪਤਾ ਚਲਗ ਤੇ ਵਿਧਾਰਥੀਂ ਇਸ ਕਨੈ ਸਰਬਬਂਧਤ ਕੁਸੈ ਬੀ ਚਾਲਲੀ ਦੇ ਸੁਆਲੈ ਦਾ ਉਤਾਰ ਦੇਨੇ ਚ ਸਮਰਥ ਹੋਡਨ।

11.2 ਪਾਠ-ਪਰਿਚੇ

ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਤਤਵਾਂ ਬਾਰੈ ਵਿਸ਼ਤਾਰਪੂਰਵਕ ਜਾਨਕਾਰੀ ਦਿੱਤੀ ਗੇਦੀ ਏ ਜਿਸ ਕਨੈ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਸ਼ੇਈ ਸਰੂਪ ਕਨੈ ਵਿਦਾਰਥੀਂ ਪਰਿਚਿਤ ਹੋਡਨ।

### 11.3 ਪਾਠ ਪ੍ਰਕਿਧਾ

ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਤਤਵ

ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਤਤਵ

1. ਪ੍ਰਬੰਧਕਾਵਿ ਦੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਵਿਧਾ ਪਰ ਸਭਨੋਂ ਸ਼ਾ ਪੈਹਲੇ ਭਾਸ਼ਾ ਨੇ ਬਵੇਚਨ ਕੀਤਾ ਹਾ। ਤਾਂਦੇ ਮਤਾਬਕ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਕਥਥ ਇੱਨ੍ਹੀ ਲਾਸ਼ੀ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਦੀ ਏ ਜੇ ਉਸਦੀ ਬੰਡ ਸੱਗ (ਧਿਆਧੇ) ਚ ਕੀਤੀ ਜਾਈ ਸਕੇ।
2. ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਕਥਾਵਸ਼ਟੁ ਇਤਿਹਾਸ ਪੁਰਾਣ ਪ੍ਰਸਿੰਘ ਮਹਾਨ ਕਾਵਿ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਦੀ ਏ।
3. ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਸੁਕਖ ਪਾਤਰ ਕੁਲੀਨ ਘਰਾਨੋਂ ਦਾ ਮਨੌ-ਤਰਸਨੌ ਦਾ ਮਾਹਨੂ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਏ।
4. ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਆਸ ਫੈਹਮ ਨੇਈ ਹੋਨੀ ਚਾਹਿਦੀ। ਅਰਥਤ ਸ਼ਬਦ ਤੇ ਅਰਥ ਦਰੱਖਤ ਆਸ ਲੁਕਾਈ ਦੇ ਸਤਰ ਥਮਾਂ ਉਚੇਰੇ ਸਤਰ ਦੇ ਹੋਨੇ ਲੋਡ਼ਦੇ।
5. ਨਾਯਕ ਦੀ ਉਨੱਤਿ ਦਾ, ਦੂਤ ਮੇਜਨੇ ਦਾ, ਸਲਾਹ ਸੂਤਰ ਕੀਤੇ ਜਾਨੇ ਦਾ ਇਸ ਚ ਖਾਸਾ ਵਰਣਨ ਹੋਨਾ ਚਾਹਿਦਾ ਏ।

ਸਾਹਿਤ्यਦਰ्पਣਕਾਰ ਆਚਾਰਧ ਵਿਸ਼ਵਨਾਥ ਹੋਰੇਂ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਹੋਰ ਮਤੀ ਖੋਹਲਿਲਯੈ ਵਾਖਿਆ ਕੀਤੀ ਤੇ ਗਲਾਇਆ ਜੇ ਮਹਾਕਾਵਿ ਸੱਗ ਚ ਬਜ਼ੀ ਦੀ ਰਚਨਾ ਹੋਂਦੀ ਏ (ਸੱਗਬੰਧੀ ਮਹਾਕਾਵਿਸਮ—ਸਾਹਿਤ्यਦਰ्पਣ ਪਰਿਚੇਦ) ਜਿਸ ਚ ਅਟਠ ਥਮਾਂ ਘਟਟ ਸੱਗ ਨੇਈ ਹੋਨ ਤੇ ਖੀਰ ਚ ਔਨੇ ਆਹਲੇ ਸੱਗ ਦੀ ਕਥੈ ਦੀ ਸੂਚਨਾ ਬੀ ਥਹੋਈ ਸਕੇ।

6. ਕਥਾਵਸ਼ਟੁ ਇਤਿਹਾਸ ਪਰ ਅਧਾਰਤ ਹੋਏ।
7. ਨਾਯਕ ਗੁਣੀ, ਕੁਲੀਨ, ਬਾਦਰ—ਸੂਰਮਾ ਹੋਏ।
8. ਸ਼ਾਂਗਾਰ ਵੀਰ ਤੇ ਸ਼ਾਨਤ ਇਨ੍ਹੋਂ ਤ੍ਰਾਂਝ ਚਾ ਕੋਈ ਨਾਂ ਇਕ ਰਸ ਪ੍ਰਧਾਨ ਰੂਪ ਚ ਬਰਤੋਆ ਦਾ ਹੋਏ।
9. ਉਦਦੇਸ਼ਧ ਧਰਮ, ਅਰਥ, ਕਾਸ ਮੋਕਾਹ ਇਨ੍ਹੋਂ ਚਾਂਝ ਚਾ ਕੋਈ ਇਕ ਹੋਏ।
10. ਵਸਤੁ ਵਰਣਨ, ਦੁਸ਼ਟੋਂ ਦੀ ਨਿਨਦੇਆ, ਭੰਡੀ, ਭਲੇਮਾਨਸ਼ੋਂ ਦੀ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਾ ਬਡੇਆਈ ਦੇ ਕਨੈ—ਕਨੈ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਸੰਝ, ਭਾਗ ਦਿਨ—ਰਾਤ, ਵਨ, ਸਮੁੱਦਰ ਆਦਿ ਦਾ ਵਰਣਨ ਬੀ ਹੋਨਾ ਲੋਡ਼ਚਦਾ ਏ।

ਪਛਮੀ ਸਤ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਤਤਵ ਇਸ ਚਾਲ੍ਹੀ ਨ।

1. ਏਹ ਬਡੇ ਕਲੇਵਰ ਦਾ ਵਿਵਰਣ —ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਵਿ ਹੋਂਦਾ ਏ।

2. ਵਿਕਿਤ ਦੀ ਬਜਾਏ ਜਾਤੀਧ ਭਾਵ ਜਿਆਦਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਹੋਂਦੇ ਤੇ ਕੋਈ ਜਾਤੀਧ ਸੰਘਰਸ਼ ਹੋਂਦਾ।
3. ਵਿ਷ਯ ਲੋਕਪਿਛ ਤੇ ਪਰਮਪਰਾ ਕਨ੍ਹੇ ਪ੍ਰਤਿਸ਼ਠਤ ਹੋਂਦਾ।
4. ਇਸਦੇ ਪਾਤ੍ਰ ਸ਼ੁਰੂਵੀਰ ਹੋਂਦੇ ਤੇ ਦੇਵਤਾਂ ਦੇ ਸਾਥੀ ਹੋਂਦੇ। ਤੁਝੇ ਕਮੇਂ ਗੀ ਤੌਡ ਚਾਢਨੇ ਚ ਪ੍ਰਕ੃ਤਿ ਤੇ ਦੇਵਤੇ ਦਾ ਹਤਥ ਹੋਂਦਾ।
5. ਨਾਯਕ ਦੇ ਕਨ੍ਹੇ ਸਾਰੀ ਕਥਾ ਇਕ ਸੂਤਰ ਚ ਬਾਝੀ ਦੀ ਰੌੜ੍ਹਦੀ।
6. ਸ਼ੈਲੀ ਚ ਵਿਸ਼ਾਲਪਨ ਤੇ ਉਚਚਤਾ ਹੋਂਦੀ।
7. ਇਕ ਗੈ ਛਨਦ ਦਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੁੰਦਾ।

#### **11.4 ਸਾਰਾਂਸ਼**

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਾਫਿਲੈ ਵਿਦਾਰਥਿਯਾਂ ਗੀ ਡੋਗਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਤਤਵੇ ਬਾਰੈ ਸਬੂਰੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਤਤਵ ਗੈ ਨ ਜੇਹਡੇ ਕੁਝੇ ਬੀ ਰਚਨਾ ਗੀ ਬਨੇ ਦਾ ਕਮ ਕਰਦੇ ਨ। ਡੋਗਰੀ ਦੀ ਬਾਕੀ ਵਿਦਾਏਂ ਆਹਲਾ ਲੇਖਾ ਜਿ'ਧਾ ਕਹਾਨੀ, ਉਪਨਿਆਸ ਨਾਟਕ ਬਗੈਰਾ ਦੇ ਛੇ ਤਤਵ ਮਨੇ ਗੇਂਦੇ ਨ। ਹਸੱਸੈ ਚਾਲੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਗੀ ਤਤਵੇਂ ਚ ਬਨਿਯੈ ਪੂਰਾ ਕੀਤਾ ਗੇਦਾ ਐ।

#### **11.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ**

- |    |         |    |             |
|----|---------|----|-------------|
| 1) | ਸਰਬਂਧਤ  | 2) | ਸੱਗ         |
| 3) | ਆਮ—ਫੈਹਮ | 4) | ਨਾਯਕ        |
| 5) | ਸੂਤਰ    | 6) | ਸਾਹਿਤਿਦਰ्पਣ |
| 7) | ਕੁਲਨਿ   | 8) | ਕਲੇਵਰ       |

#### **11.6 ਅੰਭਿਆਸ ਆਸਤੈ ਸੋਆਲ**

- 1) ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਪਰਿਆਸ਼ਾ ਲਿਖੋ।
- 
- 
-

2) महाकाव्य दे तत्वें उपर लोड पाओ

## 11.7 सहायक पुस्तकां

- 1) डोगरी साहित्य दा इतिहास – जितेन्द्र उधमपुरी
  - 2) डोगरी शोध 2003 – डोगरी डिपार्टमेंट, जमू
  - 3) डोगरी शोध 2000 – डोगरी डिपार्टमेंट, जमू

0

## **M.A. DOGRI**

---

**Course No. 102**

**Unit - V**

**Semester - I**

**Lesson : 12**

---

### **ਡੋਗਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦਾ ਉਦ੍ਭਵ ਤੇ ਵਿਕਾਸ**

12.0 ਰੂਪਰੇਖਾ

12.1 ਉਦੇਸ਼

12.2 ਪਾਠ ਪਰਿਚੇ

12.3 ਪਾਠ ਪ੍ਰਕਿਧਿਆ

12.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

12.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

12.6 ਅੰਭਿਆਸ ਆਸਟੈ ਸੋਆਲ

12.7 ਸਹਾਯਕ ਪੁਸ਼ਟਕਾਂ

12.1 ਉਦੇਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿਧੈ ਵਿਦਾਥਿਰੀ ਗੀ ਡੋਗਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਸਿਲਸਲੇਵਾਰ ਵਿਕਾਸ ਧਾਰਾ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਗ ਤੇ ਹੁਨੈ ਤਗਰ ਰਚੇ ਗੇਦੇ ਡੋਗਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੇ ਵਿਝੋਂ ਦੇ ਬਾਰੈ ਚ ਬੀ ਡੋਗਰੀ ਚ ਰਚੇ ਗੇਦੇ ਮਹਾਕਾਵਿਆਂ ਦੇ ਬਾਰੈ ਚ ਪੁਛੇ ਗੇਦੇ ਕੁਸੈ ਬੀ ਸੁਆਲੋਂ ਦਾ ਪਰਤਾ ਦੇਨੇ ਚ ਓਹ ਸਮਰਥ ਹੋਡਨ।

12.2 ਪਾਠ –ਪਰਿਚੇ

ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਡੋਗਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਦੀ ਵਿਕਾਸ ਧਾਰਾ ਦੇ ਕਨੈ–ਕਨੈ ਡੋਗਰੀ ਮਹਾਕਾਵਿ ਅਜ਼ ਕਿਸ ਸੁਕਾਮ ਉਪਰ ਖੜ੍ਹੇ ਦਾ ਏ ਤਸ ਬਾਰੈ ਵਿਸ਼ਤਾਰਪੂਰਵਕ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਗ।

### 12.3 पाठ –प्रक्रिया

- डोगरी महाकाव्य दा उद्भव ते विकास
- डोगरी महाकाव्य दा उद्भव
- डोगरी महाकाव्य दा विकास
- डोगरी महाकाव्य दा उद्भव

डोगरी महाकाव्य हिन्दी महाकाव्य शा प्रभावत होइयै लखोआ। हिन्दी च बक्खरे – बक्खरें काल च बक्खरे –बक्खरे काव्य लखोए। इन्दे च वीर–गाथा काल दे महाकवि चन्द्र वरदाई ते उंदे पुत्तर जल्हन दी कृति ‘पथ्वीराज रासों’ ते ‘आल्हा खंड’ प्रधान महाकाव्य न। भक्तिकाल च जेहके महाकाव्य लखोए उंदे च मलिक मुहम्मद जायसी दा ‘पदमावत’ गोस्वामी तुलसीदास जी दा ‘रामचरित मानस’ केशवचन्द्र दा ‘रामचन्द्रिका’ मुक्ख महाकाव्य न। इत्थें एह गल्ल आखनी बड़ी जरुरी ऐ जित्थें ‘पदमावत’ ते ‘रामचरित मानस’ बिच इक स्वतः चलने आला काव्य प्रवाह ऐ, उत्थें ‘रामचन्द्रिका’ च छन्दें ते अलंकारें दी पाण्डित्यपूर्ण बरतोन काव्य गी किलश्ट करदी ऐ ते इस्सै करी आलोचक केशव जी गी किलश्ट काव्य दा शनि बी आखदे न। पर केशव जी दा किश अपना गै स्हाब ऐ ते ओ अलंकार सम्प्रदाय दे अनुयाई होने करी गै एह गल्ल आखदे न– ‘भूषण बिन न राजई कविता, वनिता मित रीतिकाल विलासपूर्ण काल रेहआ ऐ ते इसकरी कोई ऐसी म्हत्तवपूर्ण रचना नेई जिसदा विशेष थाहर होऐ।

अज्ज दे जुग दे प्रसिद्ध हिन्दी महाकाव्ये च कामायनी, साकेत, ते प्रिय-प्रवास प्रमुख न।

डोगरी भाशा च महाकाव्य लिखने दी मुहार मसां –मसां खुड़ी ऐ शम्भुनाथ शर्मा हुन्दी रामायण इस पासै पैहली गै ही। ओह रामचरित मानस दे भावें ते भाशा दे आधार पर रची दी इक रचना ही। इस करियै अस आकर्षी सकने आं जे डोगरी महाकाव्य दा उद्भव हिन्दी महाकाव्य दी परम्परा शा प्रभावत ऐ।

### → डोगरी महाकाव्य दा विकास

डोगरी साहित्य च महाकाव्य लेखन दा श्री गणेश स्व. पं० शम्भुनाथ शर्मा होरें ‘रामायण’ लिखियै कीता। एह ग्रैंथ 1961 ई० च प्रकाशत होआ। सन 1984 ई० च ज्ञान सिंह पगोच होरें ‘न्यांड’ छापियै जितेन्द्र उधमपुरी होरें सन 1985 ई० च ‘जित्तो’ प्रकाशत करियै ते इस्सै बरें प्रकाश प्रेमी होरें ‘बेददन धरती दी’ छापियै इस परम्परा गी अगड़ा बधाया ऐ। ज्ञान सिंह पगोच हुंदा ‘महात्मा विदुर 2003 ई० च ते श्याम दत पराग हुंदा’ ‘बीर जोराबर सिंह’ सन 2009 च छपेआ। हूने तगर डोगरी च इयै कुल छे महाकाव्य उपलब्ध होए न।

इनें महाकाव्ये दा विस्तृत व्यौरा इस चाल्ली ऐ।

1. रामायण : शम्भु नाथ शर्मा हुंदा एह महाकाव्य सन 1961 च छपेआ। एह कवि दी डोगरी साहित्य गी इक म्हत्तवपूर्ण देन ऐ ते इसी लिखने च उसी पंज बरे लग्गी गे।

गणेश , सरस्वती ते भगवान राम दी वंदना ने इस काव्य दा शुभारम्भ होंदा ऐ ते एह बालकांड दा गै इक हिस्सा ऐ रामायण दी कथा सतें कांडे च जियां बालकांड , अयोध्या कांड, बन कांड किशकन्धा कांड, सुन्दर कांड युद्ध कांड ते उतर कांड च बंडोई दी ऐ। काव्य च महाराज दशरथ द्वारा पुत्र प्राप्ति यज्ञ , उपन्यन संस्कार ते त्रौनें भ्राएं दे ब्याह आदि दा चित्रण बडे विस्तार ते सभावक रूप च होए दा ऐ । भगवान राम दे ब्याह गी दिकिखयै ते इ'यां बझोंदा ऐ जे एह अयोध्या ते जनकपुरी दा ब्याह नेई बल्कि डुग्गर प्रदेश दा ब्याह ऐ। ब्याह, जान्नी चढ़ना, सगन मनाने , सिठनियां , देहल बंडना आदि दे वर्णन च ते असें गी आंचलिकता दी टकोहदी शाप लभदी ऐ। कवि दी समर्थता ते कुशलता दा परिचय मिलदा ऐ। कवि दा उद्देश्य इस महान ग्रंथ दी आत्मा गी मातृ-भाशा राहें डुग्गर दे जन जीवन तक पजाना ऐ। ते ओह अपने इस उद्देश्य च पूरी चाल्ली सफल होंदा ऐ।

कवि गी अपने नायक भगवान राम दे प्रति पूरी आस्था ते श्रद्धा ऐ। ओह उंदे ताई पूरी चाल्ली समर्पत ऐ। उसनै कुदरै बी उंदे चरित्र पर आंच नेई औन दिती। शायद इयै कारण हा जे उसने अपने इस ग्रन्थ च 'सीता -त्याग' दे प्रसंग गी कोई थाहर नेई दिता। रचना च सूखम ते मर्मस्पर्शी भावनाएं दा चित्रण बडा सजीव ते कलात्मक ढंगे ने होए दा ऐ। भाशा बडी जानदार ऐ। थाहर-थाहर मुहाबरें, खुआनें, रूपकें ते अलकारें दा सुन्दर प्रयोग होए दा ऐ। किश शब्द चित्र इन्ने सुन्दर ते सजीव न जे दृश्य साम-धाम अक्खीं अगें आई खड़ोदें न। मसाल आस्तै महाराजा दशरथ दे खीरी दिनें दे वर्णन ते भरत मिलाप दे इस दृश्य गी गै दिक्खो:-

प्राण कण्ठ आए राजे दे अंग पेई गे ढिल्ले  
ढौन लगा ज्यूडे दा तम्बू पुट्टन होए किल्ले।  
इककै सौले, इककै सोहने इककै हिरख अगाध  
सौन बरै दी दौन्ने पासै गोते खा मरजादा।

2. न्यां :- सन 1984 च ज्ञान सिंह पगोच हुंदी डुग्गर दे प्रसिद्ध इहीद करसान बावा जित्तो दे जीवन पर अधारत जीवन-गाथा 'न्यां' प्रकाशत होई । पगोच हुंदी डोगरी च छपने आहली एह पैहली साहित्यक रचना ऐ। एह गाथा सतें सर्गे च बडोई दी ऐ ते इसदा आधार बावा जित्तो दी कारक ऐ। पर कारक दे लोक-कवि दी गैहराई , ओह दे चिंतन, अपार वेदना, भाशा-प्रवाह ते कला-पक्ख दे मकाबले च एह ठैहरदी टिकदी नेई। पर पही बी इस रचना च महाकाव्य दे मते सारे लक्षण मजूद न जियां इस च मंगलाचरण ऐ। इसदा नायक बी डुग्गर दी जनता च लोकप्रिय ऐ ते उसदे पूरे जीवन दी गाथा इस

ਚ ਵਰ्णਤ ਏ। ਇਸਦਾ ਉਦਦੇਸ਼ਾਂ ਬੀ ਮੰਗਲਕਾਰੀ ਏ।

**3. ਜਿਤੋ:-** ਜਿਤੇਨਦਰ ਉਥਮਪੂਰੀ ਹੁਂਦਾ ਮਹਾਕਾਵਿ 'ਜਿਤੋ' ਡੁਗਗਰ ਦੇ ਮਹਾ ਬਲਿਦਾਨੀ ਕਰਸਾਨ ਬਾਵਾ ਜਿਤਮਲ ਦੇ ਜੀਵਨ , ਪਾਰਿਸਥਿਤਿਯਾਂ , ਸੰਦਰਭ ਤੇ ਸਮਾਜ ਪਰ ਆਧਾਰਤ ਆਧੁਨਿਕ ਸੰਦਰਭ ਚ ਰਚੀ ਗੇਦੀ ਇਕ ਸ਼੍ਰੇ਷਼ਟ ਰਚਨਾ ਏ। ਇਕ ਉਪਲਬਧੀ ਏ ਤੇ ਇਕ ਇਤਿਹਾਸਕ ਦਸਤਾਵੇਜ਼ ਬੀ ਏ। ਇਹ ਕਾਵਿ ਸਨ 1985 ਚ ਛਪੇਆ ਤੇ 260 ਸਫੋਂ ਪਰ ਆਧਾਰਤ ਏ। ਜਿਤੋਂ ਦਾ ਕਿਰਦਾਰ ਕੁਤੈ ਬੀ ਦੇਵੀ –ਦੇਵਤਾਏ ਆਂਗਰ ਚਮਤਕਾਰੀ ਨੇਈ ਦਰਸਾਇਆ ਗੇਦਾ ਏ ਬਲਿਕ ਇਕ ਆਮ ਕਰਸਾਨ ਦੇ ਰੂਪ ਚ ਗੈ ਓਹ ਸਾਡੈ ਸਾਮਨੈ ਆਂਦਾ ਏ ਓਹਦੇ ਕਿਰਦਾਰ ਗੀ ਕਾਲਘਨਕ ਤੇ ਬੇਮੇਲ ਸੁਨੀ–ਸੁਨਾਈ ਗਲਿੰਦੇ ਤੇ ਘਟਨਾਏਂ ਸ਼ਾ ਬੀ ਮੁਕਤ ਰਕਖੇਆ ਗੇਦਾ ਏ। ਜਿਤੋ ਡੁਗਗਰ ਧਰਤੀ ਪਰ ਪੈਹਲਾ ਕਰਸਾਨ ਹਾ ਜਿਸਨੇ ਬੇਨਧਾਈ , ਜੁਲਮ ਤੇ ਸਾਮਨਤਵਾਦੀ ਸ਼ਕਿਤਿਆਂ ਖਲਾਫ ਆਵਾਜ ਚੁਕਕੀ ਤੇ ਸੰਦਰਭ ਕੀਤਾ। ਇਹ ਇਕ ਖੁਲ੍ਲੀ ਬਗਾਵਤ ਹੀ।

ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਚ ਨੌ ਸੱਗ ਨ ਤੇ ਇਹ ਕਰੁਣਾ ਰਸ ਪ੍ਰਧਾਨ ਏ। ਵੀਰ ਰਸ ਵਰਣਨ ਤੇ ਪ੍ਰਕ੃ਤਿ ਚਿਤ੍ਰਣ ਬੀ ਬੜੀ ਕੁਝਲਤਾ ਕਨ੍ਨੇ ਕੀਤਾ ਗੇਦਾ ਏ। ਕਵਿ ਨੇ ਕਾਵਿ ਦਾ ਸ਼ੁਭਾਰਥ ਡੁਗਗਰ ਬਨਦਨਾ ਕਨ੍ਨੇ ਕੀਤੇ ਦਾ ਏ। ਜਿਤੋ ਦਾ ਕਥਾਨਕ ਇਤਹਾਸਕ ਏ ਤੇ ਓਹ ਜਨਨਾਧਕ ਏ। ਜਨਤਾ ਦੇ ਹਿਰਦੋਂ ਚ ਓਹਦਾ ਬਾਸ ਏ। ਕਥਾਨਕ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਕ੍ਰਮਿਕ ਤੇ ਵਿਵਸਥਿਤ ਏ।

**4. ਬੇਦਨ ਧਰਤੀ ਦੀ :-** ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਪ੍ਰੇਮੀ ਹੁਂਦਾ॥ ਸੱਗ ਤੇ 276 ਸਫੋਂ ਪਰ ਆਧਾਰਤ ਇਹ ਮਹਾਕਾਵਿ ਬੀ ਸਨ 1985 ਚ ਗੈ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਤ ਹੋਆ। ਡੋਗਰੀ ਭਾਸਾ ਦੇ ਇਸ ਮਹਾਕਾਵਿ ਗੀ ਅਸ ਨਾਥਕਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਾਵਿ ਗਲਾਈ ਸਕਨੇ ਆਂ। ਨਾਥਕਾ ਦਾ ਰੂਪ ਨਾਰੀ, ਧਰਤੀ ਤੇ ਪ੍ਰਕ੃ਤਿ ਏ ਤੇ ਇਹ ਤ੍ਰੌਨੋਂ ਦੀ ਇਕ ਸਜੀਵ , ਸੁਨਦਰ ਤੇ ਮਾਰ੍ਮਿਕ ਕਥਾ ਏ। ਨਾਰੀ ਤੇ ਧਰਤੀ ਦਸੈ ਜਨਨਿਯਾਂ ਨ। ਦਸੈ ਅਥਾਹ ਬੇਦਨ ਛਪੈਲਿਧੈ ਸ਼ਲੈਪੋਂ ਗੀ ਜਨਮ ਦਿਨਿਧਿਆਂ ਨ। ਦੌਨੇ ਦੀ ਬੇਦਨਾ ਸਾਂਝੀ ਏ। ਇਸ ਰਚਨਾ ਚ ਪੌਰਾਣਕ ਤਤਥੋਂ –ਕਤਥੋਂ ਦਾ ਸਮਨਵਿਤ ਏ। ਆਦਿਕਾਲ ਸ਼ਾ ਚਲਦੇ ਆਵਾ ਕਰਦੇ ਨਾਰੀ ਦੇ ਸ਼ਵਾਭਿਮਾਨ , ਸੱਤਾ ਤੇ ਓਹਦੇ ਪਰ ਨਿਰਨਤਰ ਸ਼ੋਸ਼ਣ ਦੀ ਦਾਸਤਾਂ ਗੈ ਇਸ ਕਾਵਿ ਦਾ ਕੇਨ੍ਦਰ–ਬਿੰਦੂ ਏ।

ਕਾਵਿ ਦਾ ਕਥਾਨਕ ਮੁਖ ਤੌਰ ਪਰ ਰਾਮਾਯਣ ਪਰ ਆਧਾਰਤ ਏ। ਮਤੇ ਸਾਰੇ ਪਾਤਰ ਪੌਰਾਣਕ ਨ ਪਰ ਤੁਨੋਂ ਗੀ ਆਧੁਨਿਕ ਸੰਦਰਭ ਚ ਦਿਕਖਨੇ ਦਾ ਜਤਨ ਕੀਤਾ ਗੇਦਾ ਏ ਧਰਾਰਥ ਕਨ੍ਨੇ ਜੁਡਨੇ ਦੀ ਕੋਥਾਂ ਕੀਤੀ ਗੇਦੀ ਏ। ਰਾਜਾ ਰਾਮ ਇਕ ਆਦਰਸ਼ , ਧਾਰਮਿਕ ਰਾਜਾ , ਬੀਰ ਧੋਧਾ ਨਾਥਕ ਤੇ ਕੁਝਲ ਨੀਤਿਜ਼ਾ ਦੇ ਰੂਪ ਚ ਸਾਡੈ ਸਾਮਨੈ ਆਂਦੇ ਨ, ਨਾ ਕੇ ਇਕ ਅਵਤਾਰੀ ਰੂਪ ਚ। ਕਵਿ ਨੇ ਪੌਰਾਣਕ ਘਟਨਾਏਂ ਤੇ ਕਥਾਏਂ ਗੀ ਅਪਨੀ ਕਲਿਆਚਰਨ ਤੇ ਸਿਰਜਨ–ਸ਼ਕਿਤ ਰਾਹੋਂ ਬੜੀ ਸਫਲਤਾ ਨੇ ਸੰਜੋਧਾ–ਪਰੋਧਾ ਏ। ਚਰਿਤ੍ਰ ਕੁਤੈ ਬੀ ਨੀਰਸ ਜਾਂ ਬੇਜਾਨ ਨੇਈ ਬੜੀਆਂ ਦੇ ਦੋ ਪ੍ਰਤੀਕ ਨ। ਸ਼ੈਲੀ ਵਰਣਨਾਤਮਕ ਏ।

ਕਥਾਨਕ ਇਕ ਜਧਾਣੋਂ ਬਾਲਕ ਦੀ ਸੂਛਿ ਦੀ ਵਿਕਾਸ ਕਥਾ ਪ੍ਰਤਿ ਜਿਜ਼ਾਸਾ ਸ਼ਾ ਰਸਭ ਹੋਂਦਾ ਏ। ਤੇ ਇਸਦਾ ਸਮਾਧਾਨ ਇਕ ਵਧੋਵੁਫ਼ਾਂ ਰਾਹੋਂ ਹੋਂਦਾ ਏ ਕਾਵਿ ਦਾ ਅਨਤ ਬੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਾਂ ਪਾਤਰੋਂ ਕਨ੍ਨੇ ਗੈ ਹੋਂਦਾ। ਦਰਅਸਲ ਜਿਜ਼ਾਸਾ ਤੇ ਬੂਢ੍ਹ ਸਮੇਂ ਦੇ ਦੋ ਪ੍ਰਤੀਕ ਨ। ਸ਼ੈਲੀ ਵਰਣਨਾਤਮਕ ਏ।

**5. महात्मा विदुर :-** ज्ञान सिंह पगोच हुंदा महाकाव्य 'महात्मा विदुर' 2003 च प्रकाशत होआ। महाकाव्य दी कथा विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'महाभारत' दे इक पातर 'महात्मा विदुर दे आले-दुआले घुमदी ऐ। महात्मा विदुर इक सोहगे -स्थाने माहनू , कुशल कुटनीतिज्ञ, धर्म दा पालन करने आहले धर्मात्मा ते इक महान संत हे, जिनें महाभारत च महाभारत दे धर्म-युद्ध च सच्च दा साथ दित्ता। महाभारत दे धर्म -युद्ध च जिस चाल्ली धर्म दी जित होई उस धर्म दी जित गी हासल करने च महात्मा बिदुर दा इक अहम योगदान हा। एह ज्ञान सिंह पगोच हुंदी पैनी सोच दा गै नतीजा ऐ जे उ'नें विदुर दे चरित्र गी खोहलियै पाठके सामनै रक्खे दा ऐ ते स्हेई-मायने च उ'नेंगी महात्मा सरुप प्रस्तुत कीते दा ऐ। महाकाव्य गी पढने परैत पाठके गी मसूस होंदा ऐ जे विदुर सच्चे गै महान आत्मा ही, इस करी पगोच होरें 'विदुर' गी जेहडा 'महास्था' दा खताब दिते दा ऐ। ओह पूरी चाल्ली स्हेई ऐ। नमें सर्ग च बंडोए दे इस महाकाव्य गी 2007 दा साहित्य अकादमी पुरस्कार बी मिली चुके दा ऐ।

**6. बीर जोराबर सिंह:-** श्याम दत पराग हुंदा महाकाव्य 'बीर जोराबर सिंह' मशहूर जरनैल जोराबर सिंह दी काबलियत ते छ्वादरी दा नमूना ऐ एह महाकाव्य 2009 च छपेआ। डोगरी धरती अपनी शुरबीरता ते छ्वादरी करी विश्व प्रसिद्ध ऐ। ते इस धरती दा इतिहास गुआह ऐ जे डोगरे म्हेशां अपनी मातृ-भूमि दी रक्षा आस्तै प्राणे दा बलिदान दित्ता ऐ पर अपनी धरती मां गी आंच तक नेई आन दित्ती। मशहूर डोगरा जरनैल जोराबर होरें बी महाराजा गुलाब सिंह दी सरपरस्ती च केई छ्वादरी दे कारनामे कीते जिंदे च डुग्गर प्रदेश दी सिमाएं गी लदाख थमां गिलगीत ते तीब्बत तोडी फैलाने दा जिकर मिलदा ऐ बीर जोराबर सिंह दे छ्वादरी दे कारनामे गी विस्तारपूर्वक अपने महाकाव्य च पेश करियै पराग होरें उंदी शुरवीरता गी बडी खुवसूरती कन्नै दर्शाए दा ऐ।

### अभ्यास

हेठ दिते दे सुआले दा परता देओ।

1. 'डोगरी महाकाव्य हिन्दी महाकाव्य परम्परा शा प्रभावत ऐ, इस कथन दे हवाले कन्नै डोगरी महाकाव्य दे उद्भव दा जिकर करो।
2. डोगरी महाकाव्य परम्परा गिनतरी च भामे घट्ट पर साहित्यक तौर पर बेहतर ऐ, सुआले दा परता डोगरी महाकाव्य दी विकास यात्रा दे संदर्भ च देओ।
3. तुसेंगी डोगरी दा केहडा महाकाव्य मता पंसिद ऐ ते की ?

सहायक पुस्तकां

- |                            |                                      |
|----------------------------|--------------------------------------|
| 1. डोगरी साहित्य दा इतिहास | जितेन्द्र उधमपुरी                    |
| 2. डोगरी शोध 2003          | डोगरी डिपार्टमेण्ट जम्मू यूनिवर्सिटी |

3. ਬੀਹਮੀ ਸਦੀ ਦਾ ਡੋਗਰੀ ਸਾਹਿਤਿ ਤਕਾਜੇ ਤੇ ਉਪਲਬਿਧਿਆਂ ਡੋਗਰੀ ਡਿਪਾਰਟਮੈਣਟ ਜਮ੍ਹਾਂ ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ

#### 12.4 ਸਾਰਾਂਸ਼

ਇਸ ਪਾਠ ਗੀ ਪਢਿਏ ਵਿਦਾਰੀਂਧਿਆਂ ਗੀ ਡੋਗਰੇ ਚ ਛਪੇ ਦੇ ਹੈ ਮਹਾਕਾਵਿਆਂ ਦੀ ਵਿਸ਼ਤਾਰਪੂਰਵਕ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਇਸ ਪਾਠ ਚ ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਛੇ ਮਹਾਕਾਵਿਆਂ ਮੋਂ ਕਥਾਨਕ ਬਾਟੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ। ਡੋਗਰੀ ਦੇ ਛੇ ਮਹਾਕਾਵਿਆਂ ਰਾਮਾਯਣ, ਨਾਭਾ, ਜਿਤਾਂ, ਵੇਦਨ ਧਰਤੀ ਦੀ, ਮਹਾਤਮਾ ਵਿਦੁਰ ਤੇ ਬੀਰ ਜੋਰਾਬਰ ਸਿੱਹ ਮਹਾਕਾਵਿਆਂ ਬਾਰੈ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਗ। ਕਨ੍ਹੈ ਗੈ ਉਦੇ ਲੇਖਕੇ ਤੇ ਉਂਦੇ ਛਹਨੇ ਦੇ ਬਾਰੇ ਬਾਰੈ ਪੂਰੀ ਜਾਨਕਾਰੀ ਹਾਸਲ ਹੋਈ ਸਕਗ।

#### 12.5 ਕਠਿਨ ਸ਼ਬਦ

- |            |            |           |
|------------|------------|-----------|
| 1) ਬੀਰ ਗਥਾ | 2) ਭਵਿਤਕਾਲ | 3) ਮੁਹਾਰ  |
| 4) ਪਰਸ਼ਾ   | 5) ਵਦਨਾ    | 6) ਬੜੋਂਦਾ |
| 7) ਯੜਾ     | 8) ਸ਼ਰਦਾ    | 9) ਆਸਥਾ   |
| 10) ਜਨਨਾਯਕ | 11) ਵੇਦਨ   |           |

#### 12.6 ਅਭਿਆਸ ਆਸਤੈ ਸੋਆਲ

- 1) ਮਹਾਕਾਵਿਆਂ ਦੀ ਪਰਿਆਸ਼ਾ ਲਿਖੋ।
- .....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

- 2) ਮਹਾਕਾਵਿਆਂ ਦੇ ਤਤਵਾਂ ਉਪਰ ਲੋਡ ਪਾਓ।
- .....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....  
.....

---

---

## 12.7 सहायक पुस्तकां

- 1) डोगरी साहित्य दा इतिहास – जितेन्द्र उधमपुरी
- 2) डोगरी शोध 2003 – डोगरी डिपार्टमैंट, जम्मू
- 3) डोगरी शोध 2000 – डोगरी डिपार्टमैंट, जम्मू

.....0.....